काफ्का

की

लोकप्रिय कहानियाँ

काफ्का की लोकप्रिय कहानिया

काफ्का

अनुवाद

अरुण चंद्र

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

नया वकील

हमारे पास एक नया वकील है, जिसका नाम बुसफेलस है। इसके चेहरे में कुछ ऐसा है, जिसे देखकर यह याद आता है कि वह कभी मखइन के सिकंदर के युद्ध में मुखिया था। निश्चित रूप से यदि आपको उसकी कहानी मालूम होगी तभी कुछ पता चलेगा। यहाँ तक कि एक साधारण सुरक्षाकर्मी, जिसे कि मैंने दूसरे दिन लॉ कोर्टस की सीढ़ियों पर देखा था, वह भी प्रशंसाभरी नजरों से वकील के मन को पढ़ने की कोशिश कर रहा था, जब वह तेजी के साथ संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था।

सामान्यत: बुसफेलस के दाखिले की अनुमति बार देता है। आश्चर्यभरी दृष्टि से लोग स्वयं से कहते हैं कि आधुनिक समाज जैसा भी है, उसमें बुसफेलस की स्थिति कठिन है, इसलिए विश्व इतिहास में उसके महत्त्व को देखते हुए उसे कम-से-कम एक मित्र जैसा स्वागत तो जरूर मिलना चाहिए। वर्तमान समय में यह निर्विवाद है कि कोई सिकंदर महान् नहीं है। बड़ी संख्या में लोग हैं, जो यह जानते हैं कि लोगों की हत्या कैसे करनी है; भोजन टेबल पर किसी मित्र को हथियार से भेदने के लिए आवश्यक कौशल की कमी नहीं है; कुछ लोगों के लिए मखइनिया छोटी सी जगह है, तभी वे पिता फिलिप को कोसते हैं। लेकिन कोई भी भारत की ओर भ्रमण नहीं कर सकता है। यहाँ तक कि उसके समय में भी भारत के द्वार उसकी पहुँच से दूर थे, फिर भी राजा की तलवार ने उन्हें रास्ते का संकेत दिया, आज तो वे द्वार और भी सुदूरवर्ती क्षेत्रों में चले गए हैं; कोई भी रास्ते का संकेत नहीं करता और वह नजर, जो उनका पीछा करने की कोशिश करती है वह भी भ्रमित है।

इसलिए शायद सबसे अच्छा यह है, जो स्वयं बुसफेलस ने भी किया था, स्वयं को कानून की किताबों के अध्ययन में डुबो दिया था। शांत दीये के प्रकाश में उनका ध्यान घुड़सवारों की आहट से अविचलित, युद्ध के हंगामे से बहुत दूर वह प्राचीन ज्ञान की पुस्तक को पढ़ने में मग्न है।

❑

संकल्प

यदि तुम्हें स्वयं को खराब मन:स्थिति से बाहर लाना है। इसे मजबूत इच्छा-शक्ति द्वारा करना है, यह सरल होना चाहिए। मैं जबर करके कुरसी से उठा, टेबल के चारों ओर का चक्कर लगाया, सिर एवं गले का व्यायाम किया, आँखों में चमक लाई तथा चारों ओर की मांसपेशियों को सख्त किया। अपनी भावनाओं की परवाह न करते हुए पूरे उत्साह के साथ 'A' स्वागत करता हूँ, यह मानकर कि यह मुझसे मिलने आया है तथा प्यार से 'B' को अपने कमरे में बरदाश्त करता हूँ, सबकुछ भूलकर जो उसने 'C' के कमरे में कहा था, चाहे मुझे कितनी भी पीड़ा या परेशानी हो।

फिर भी मैं किसी तरह वह सबकुछ कर लेता हूँ, फिर भी एक चूक, सिर्फ एक चूक, जिसकी संभावना रहती है, वह पूरी प्रक्रिया को ही रोक देगी, जो सरल एवं पीड़ादायक है और यह मुझे एक बार फिर अपने घेरे में वापिस भेज देगी।

इसलिए श्रेष्ठ तरीका यह है कि हर चीज का निष्क्रियता से सामना करो, ताकि स्वयं को एक निष्क्रिय प्राणी बना सको, लेकिन यदि तुम्हें लगता है कि आवेश में बहते जा रहे हो, तो स्वयं को एक ही अनावश्यक कदम उठाने से रोको, दूसरों को पशु की तरह निहारो, जिसमें कोई दयाभाव न हो। संक्षेप में, अपने ही हाथों से अपने भीतर शेष रह गए पैशाचिक जीवन का अंत कर दो, ताकि कब्र की अंतिम शांति का विस्तार कर सको और उसके बाद उसके सिवा कुछ और न बचे। अपनी कनिष्ठ उँगली को अपने भवों पर फेरना इस दिशा में होने वाली एक विशिष्ट क्रिया है।

❑

व्यापारी

संभव है कि कुछ लोग मेरे लिए दु:खी होते हैं पर यह मुझे मालूम नहीं। मेरा छोटा सा व्यापार ही मुझे इतनी चिंताएँ देता है कि मेरे माथे तथा क नपट्टियों में दर्द हो जाता है एवं राहत की तनिक भी संभावना नहीं रहती, क्योंकि मेरा व्यापार छोटा है।

मुझे चीजों को पहले तैयार करने, के यरटेकर की स्मृति को झकझोरने, उसे संभावित गलतियों के प्रति सचेत करने, वर्ष के एक मौसम में आनेवाले मौसम के उस फैशन के बारे में सोचने, जो मेरे परिचित लोगों में प्रचलित नहीं है, लेकिन जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में रहनेवाले किसानों को पसंद आएगी, आदि कामों में घंटों व्यतीत करने पड़ते हैं।

मेरे पैसे अजनबियों के हाथ हैं; उनकी स्थितियाँ मेरे लिए रहस्य हैं; मैं उस दुर्भाग्य को नहीं देख सकता जो उन्हें परास्त कर सकता है; मैं उन्हें संभवत: कैसे टाल सकता हूँ। शायद वे फिजूलखर्ची कर रहे हैं तथा किसी सराय के बगीचे में भोज का आयोजन कर रहे हैं; उनमें से कुछ अपनी अमरीका की यात्रा के पूर्व एक संक्षिप्त राहत के रूप में इस भोज में शामिल हो रहे हैं।

जब मैं कार्य दिवस की समाप्ति पर अपने व्यापार की शुरुआत करता हूँ तो देखता हूँ कि आनेवाले समय में मैं ऐसा कुछ भी नहीं कर पाऊँगा जिससे कि उसकी कभी न खत्म होनेवाली माँग पूरी हो जाएगी, तब मेरी वे सारी उत्तेजना जो सुबह मैंने भगा दी थी, गिरते ज्वार की तरह मेरे पास वापिस आएँगी, लेकिन वे मेरे अंदर सीमित नहीं रह सकतीं, बल्कि निरुद्देश्य रूप से मुझे भी अपने साथ उड़ा ले जाएँगी।

फिर भी मैं इन उत्तेजनाओं का कोई उपयोग नहीं कर सकता, मैं सिर्फ घर जा सकता हूँ, क्योंकि मेरा चेहरा और हाथ पसीने में सने और गंदे हो रहे हैं; मेरे कपड़ों पर धूल-धब्बे और दाग पड़ गए हैं; मेरी टोपी अभी भी मेरे सिर पर है तथा मेरे जूतों पर बड़े बक्से की काँटियों से खरोचें पड़ गई हैं। मैं घर ऐसे जाता हूँ मानो लहरों पर सवार हूँ; अपने दोनों हाथों की उँगलियों को मरोड़ता तथा अपने बच्चों को देखते ही उनके बालों को चूम लेता हूँ। लेकिन रास्ता छोटा है। शीघ्र ही मैं अपने घर पहुँचता हूँ, लिफ्ट का दरवाजा खोलकर उसमें प्रवेश करता हूँ।

अचानक मुझे एहसास होता है कि मैं अकेला हूँ। कुछ लोग, जो सीढ़ियों के माध्यम से ऊपर चढ़ते हैं, चढ़ते समय थोड़ा थक जाते हैं, हाँफती साँसों से दरवाजा खुलने का इंतजार करते हैं, जिससे उन्हें अधीर एवं चिड़चिड़ा होने का बहाना मिल जाता है और उन्हें एक ऐसे हॉल से गुजरते हुए वापिस जाना पड़ता है, जहाँ टोप टँगे होते हैं; फिर भी वे अनेक शीशे के दरवाजों से गुजरते हुए लॉबी में पहुँचते हैं और फिर अपने कमरे में वापिस आते हैं तथा स्वयं को अकेला पाते हैं।

लेकिन शीघ्र ही मैं लिफ्ट में खुद को अकेला पाता हूँ, तथा घुटने के बल झुककर छोटे से शीशे में देखता हूँ। जैसे ही लिफ्ट ऊपर उठने लगती है, मैं कहता हूँ—

खामोश हो जाओ, अपने साथ क्या ये वृक्षों की छाँव में या खिड़की के परदे के पीछे या बगीचे में छायादार बैठकी में जगह बनाना चाहते हो?

मैं अपने दाँतों के पीछे यह कहता हूँ कि खिड़की के अपारदर्शी शीशे के सामने से सीढ़ियाँ बहते पानी की तरह गुजर जाती हैं।

तब उड़ जाओ; अपने पंखों को जो मैंने कभी नहीं देखे हैं, खोल दो और स्वयं को इसे गाँव के निम्न क्षेत्र या दूर, बहुत दूर पेरिस, जहाँ भी तुम जाना चाहते हो ले जाने दो।

लेकिन वहाँ भी बाहर के दृश्य का आनंद लो। देखो किस तरह तीन चौराहों के जुलूस एक-दूसरे को रास्ता न देते हुए तथा एक-दूसरे से आगे निकलते हुए, शीघ्र एक जगह एकत्रित होते हैं एवं एक बार फिर खुली जगह खाली हो जाती है। गुस्से में हो या अभिभूत हो, अपना लहराओ तथा गाड़ी चलाते हुए तुमसे आगे गई महिला की प्रशंसा करो।

नहर के ऊपर लकड़ी के पुल से जाओ, नीचे नहर में स्नान करते बच्चों को देखो तथा उल्लास भरो, दूर लड़ाकू जहाज पर जाते हजारों नाविकों के प्रति।

उस मामूली आदमी का पीछा करो, और जब उसे किसी दरवाजे के अंदर धकेल दो तो उसे लूट लो और फिर अपनी जेब में हाथ डालकर अपनी बाईं ओर गली में उदास कदमों से उसे जाते हुए देखो।

घोड़े पर सवार पुलिस तुम पर आक्रमण कर तुम्हें पीछे धकेल देती है। उन्हें करने दो, खाली गलियाँ देखकर उनका मनोबल टूट जाएगा, मुझे मालूम है। तुम्हें जो मैंने कहा वह यह है कि वे स्वयं जोड़े में पूरी रफ्तार में सड़कों पर भाग रहे हैं।

तब मुझे लिफ्ट को छोड़ना पड़ा तथा इसे नीचे भेजना पड़ा। तब मैंने घंटी बजाई, नौकरानी ने दरवाजा खोला तब मैंने कहा, गुड ईवनिंग!

❑

उदासी

नवंबर माह में शाम के समय जब वह असहनीय होता जा रहा था, तब मैं अपने कमरे के बिछे गलीचे पर इस तरह से दौड़ पड़ा मानो दौड़ का मैदान हो, जगमगाते चौराहों की रोशनी से दूर कमरे के अंदर की तरफ मुड़ा तथा शीशे की गहराई में नया लक्ष्य मिल गया, तभी मैं जोर से चिल्लाया। मेरी चीख वापिस मेरे पास ही आई, बिना उत्तर पाए; न ही इसे कोई ऐसी चीज मिली, जो इसकी शक्ति को छीन सके, इसलिए यह तीव्रतर होती ही गई, यहाँ तक कि जब यह सुनाई पड़ना बंद हो गई तब तक भी यह नहींरुकी। दीवार में लगा दरवाजा तेजी से मेरी ओर खुला, बहुत तेजी से, क्योंकि तेजी की जरूरत थी, यहाँ तक कि नीचे पथरीली पगडंडियों पर गाड़ीवाले घोड़े, हवा में ऐसे उछल रहे थे जैसे युद्ध के मैदान में शत्रुओं के पीछे भागते घोड़े।

घुप अँधेरे, छत से एक छोटा बच्चा एक छोटे प्रेत की तरह तेजी से अंदर आया, जहाँ पर कि चिराग अभी जला भी नहीं था तथा चुपचाप जमीन पर रखे तख्त पर खड़ा हो गया जो धीरे से हिला। कमरे में हुई मद्धिम प्रकाश की चकाचौंध से बचने के लिए उसने तेजी से अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया, लेकिन खिड़की से बाहर देखते हुए अप्रत्याशित रूप से स्वयं को तसल्ली दी, जहाँ कि चौराहे पर लगी रोशनी से निकलता ऊपर उड़ता वाष्प भी अंतत: क्रॉसवार के पीछे इसके अंधकार में गायब हो गया। खुले दरवाजों में दाएँ हाथ की कोहनी के सहारे उसने स्वयं को दीवार के सहारे थामा तथा हवा के झोंके को बाहर से अंदर अपनी कनपट्टियों, गले आदि से खेलते हुए जाने दिया।

मैंने उस पर एक नजर डाली और कहा, "आपका दिन अच्छा हो!'' तथा स्टोव के हुड पर से अपना जैकेट, क्योंकि मैं वहाँ अर्धनग्न खड़ा होना नहीं चाहता था। कुछ देर तक मैंने अपना मुँह खुला रखा, ताकि भीतर का आक्रोश बाहर निकल सके। मेरे मुँह का स्वाद खराब हो गया था। मेरी बरौनियाँ मेरे गालों पर झपझपा रही थीं। संक्षेप में, यह आगमन, जिसकी कि मुझे प्रत्याशा थी, की जरूरत थी।

बच्ची अभी भी उसी जगह दीवार के सहारे खड़ी थी। उसने अपने दाएँ हाथ से प्लास्टर को दबाया तथा उसमें वह पूर्णत: तल्लीन थी, उसके गाल गुलाबी हो रहे थे तथा दीवार की सफेदी खुरदुरी हो रही थी, क्योंकि उसने उसे उँगलियों से कुरेद दिया था। मैंने कहा, ''क्या सचमुच में तुम्हें मेरी तलाश थी? कुछ गलती तो नहीं है? इस बड़ी सी इमारत में गलती करने से आसान कोई काम नहीं है। मेरा नाम अमुक है तथा मैं तीसरी मंजिल पर रहता हूँ। क्या मैं वही व्यक्ति हूँ, जिसकी तुम्हें तलाश थी?

''धीरे, धीरे,'' बच्ची ने उसके कंधे पर आकर कहा, ''यह सही है।''

''तब कमरे के अंदर आओ, क्योकि मैं दरवाजा बंद करना चाहता हूँ।''

''मैंने अभी ही इसे बंद कर दिया है। आप तकलीफ न क रें तथा हो आएँ।''

''इसमें तकलीफ की कोई बात नहीं है। इस छत पर बहुत सारे लोग रहते हैं, तथा मैं उन्हें निश्चित रूप से जानता हूँ। ज्यादातर लोग अभी काम पर से वापिस आ रहे हैं। उन्हें अगर कमरे के भीतर से किसी के बात करने की आवाज सुनाई पड़ेगी तो वे सीधा यह सोचेंगे कि उन्हें कमरे का दरवाजा खोलकर भीतर क्या हो रहा है, देखने का पूरा अधिकार है। ये लोग ऐसे ही हैं। अब वे काम से वापिस आ गए हैं तथा शाम के खाली समय में वे किसी की परवाह नहीं करते। इसके लिए आप भी यह जानती हैं तथा मैं भी जानता हूँ। मुझे दरवाजा बंद करने दो।''

''क्यों, आपको क्या परेशानी है? अगर पूरा घर भी आ जाए तो मैं परवाह नहीं करती। जो भी हो, मैंने तो आपको बता ही दिया है कि मैंने दरवाजा बंद कर दिया है। आपको क्या लगता है कि आप ही अकेले व्यक्ति हैं, जो

दरवाजा बंद कर सकते हैं। यहाँ तक कि मैंने ताला भी लगा दिया है।

''फिर तो ठीक है। मैं इससे ज्यादा नहीं पूछ सकता। तुम्हें ताला लगाने की जरूरत भी नहीं थी। अब जबकि तुम यहाँ हो, शांत हो जाओ। तुम मेरी मेहमान हो तथा मुझ पर पूरा भरोसा कर सकती हो। डरो मत और इसे अपना ही घर समझो। मैं तुम्हें न तो रुकने और न ही जाने के लिए विवश करूँ गा। क्या मुझे तुम्हें ऐसा कहना पड़ेगा? क्या तुम मुझे थोड़ा भी जानती हो?''

''नहीं, आपको ऐसा कहने की बिल्कुल भी जरूरत नहीं थी। यहाँ तक कि आपको मुझे कहना भी नहीं चाहिए। मैं तो एक बच्ची ही हूँ, मेरे साथ इतना तमाशा क्यों?''

''यह उस जैसा बुरा नहीं है। निश्चित रूप से एक बच्ची, लेकिन इतनी भी छोटी नहीं। तुम अच्छी-खासी बड़ी हो। यदि तुम एक जवान युवती होती तो तुम कभी भी मेरे साथ एक कमरे में खुद को बंद करने की हिम्मत नहीं करती।''

''हम लोग इसकी परवाह नहीं करते। मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ—मेरा आपको अच्छी तरह जानना मेरे लिए सुरक्षा का विशेष कारण नहीं है, यह आपको मेरे सामने किसी प्रकार का दिखावा करने की कोशिश करने से रोकता है। फिर भी आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं। इसे बंद कीजिए, मैं आपसे विनती करती हूँ इसे बंद कीजिए। जो भी हो हर स्थिति में आपका आचरण कैसा होगा यह मैं नहीं जानती, कम-से-कम इस अँधेरे में आप किस प्रकार प्रतिक्रिया करेंगे यह तो मुझे बिल्कुल भी मालूम नहीं है। अच्छा होता यदि आप रोशनी जला देते। नहीं, शायद नहीं। जो भी हो यह बात हमेशा मेरे दिमाग में रहेगी कि आप मुझे धमकी दे रहे थे।''

''क्या? मैंने तुम्हें धमकी दी है। इधर देखो, मैं इतना खुश हूँ कि आखिरकार तुम आ गई। मैंने 'आखिरकार' कहा, क्योंकि पहले ही अपेक्षाकृत काफी देर हो चुकी है। मुझे नहीं मालूम तुम इतनी देर से क्यों आई हो। यह संभव है कि तुम्हें यहाँ देखकर खुशी में मैं अनर्गल बोलता जा रहा हूँ, जिसे तुमने गलत अर्थ में ले लिया। मैं दस बार यह स्वीकार करता हूँ कि मैंने इस तरह की कुछ बातें कीं, मैंने हर तरह की धमकियाँ दीं, तुम जो चाहो कह सकती हो। लेकिन ईश्वर की सौगंध बस कोई झगड़ा नहीं। लेकिन इस तरह की बातें तुम्हारे मन में कैसे आईं? तुमने मुझे इतना आहत कैसे किया? अपनी मौजूदगी के थोड़े से समय को तुम बरबाद करना क्यों चाहती हो। एक अजनबी तुम से ज्यादा तुम्हारे करीब आना चाहता है।''

इस बात का तो मुझे पूरा विश्वास है, यह कोई नई खोज नहीं है। कोई भी अजनबी तुमसे इतना करीब नहीं हुआ होगा, जितना कि मैं स्वभावत: पहले से ही हूँ। आप भी यह बात जानते हैं, फिर भी यह भावनात्मकता क्यों? यदि आप कॉमेडी शो करना चाहते हैं, तो मैं तुरंत भाग जाऊँगी।''

''क्या? तुम्हें मुझे यह कहने का साहस कैसे हुआ? तुमने क्या ज्यादा ही साहस दिखाया है। जो भी हो, यह मेरा कमरा है और तुम इस कमरे के भीतर हो। यह मेरी दीवार है, जिस पर तुम पागल की तरह अपनी उँगलियाँ रगड़ रही हो। मेरा कमरा, मेरी दीवार! इसके अलावा जो तुम कह रही हो, वह सरासर हास्यास्पद और दुस्साहस है। तुम कहती हो कि तुम्हारा स्वभाव मुझसे तुम्हें ऐसी बातें करने को विवश करता है। क्या यह ऐसा है? तुम्हारा स्वभाव तुम्हें विवश करता है? यह तो तुम्हारे स्वभाव की कृपा है। तुम्हारा स्वभाव मेरे जैसा है और यदि तुमसे मित्र जैसा व्यवहार करूँ, तो तुम्हें कुछ और तरीके से प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए।''

''क्या यह दोस्ती है?''

''मैं तो पहले की बात कर रहा हूँ।''

''क्या आप जानते हैं कि बाद में मेरा व्यवहार कैसा होगा?''

''मैं तो कुछ भी नहीं जानता।''

फिर मैंने पलंग से लगे टेबल पर रखी मोमबत्ती को जला दिया। उस समय मेरे कमरे में न तो गैस और न ही बिजली की रोशनी थी। फिर मैं कुछ देर के लिए टेबल पर बैठ गया और तब तक बैठ गया, जब तक कि मैं थक नहीं गया, फिर मैंने अपना लंबा कोट पहना, सोफे पर से अपना टोप उठाया और मोमबत्ती बुझा दी। जैसे ही मैं बाहर जाने लगा, मुझे वहाँ रखी कुरसी के एक पाए से ठोकर लगी और मैं लड़खड़ा गया।

सीढ़ियों पर मेरी भेंट इसी मंजिल पर रहनेवाले एक अन्य किराएदार से हुई।

''कमीने, तुम फिर बाहर जा रहे हो?'' दो सीढ़ियों के नीचे पहुँचकर रुककर उसने मुझसे पूछा।

''मैं क्या कर सकता हूँ?'' मैंने कहा, ''मेरे कमरे में अभी-अभी एक प्रेत आ गया था।''

''तुम यह बात बिल्कुल ऐसे कह रहे हो जैसे कि तुम्हें अपने सूप में बाल मिला हो।''

''तुम तो इस बात का मजाक बना रहे हो। लेकिन तुम्हें बताऊँ कि प्रेत, प्रेत ही होता है।''

''अच्छा; तुम्हें क्या लगता है कि मैं प्रेतों में विश्वास करता हू। लेकिन मेरे इसमें विश्वास न करना किस प्रकार मेरी मदद कर सकता है।''

''बहुत आसान है। यदि सचमुच में कोई प्रेत आ जाए तो तुम्हें डरने की जरूरत बिल्कुल नहीं है।''

''ओह, वह तो बाद का डर है। वास्तविक डर तो यह डर है कि वह प्रकट क्यों हुआ? और वह डर खत्म नहीं होता। यह डर तो मेरे भीतर काफी मजबूती से बैठ गया है।'' घबराहट के मारे मैं इधर-उधर अपनी जेबें टटोलने लगा।

''लेकिन, चूँकि तुम्हें प्रेत से डर नहीं लगता तो तुम प्रेत से ही यह बात आसानी से पूछ सकते थे कि वह वहाँ कैसे आया?''

''जाहिर है, तुमने कभी प्रेत से बात नहीं की है। किसी को भी उनसे कभी सीधी बात पता नहीं चलती। यह बस इधर-उधर ही होता रहता है। ये प्रेत अपने अस्तित्व के बारे में हमसे ज्यादा संदेहास्पद प्रतीत होते हैं, और कोई आश्चर्य नहीं जब यह सोचें वे वह कितने कमजोर हैं।''

लेकिन मैंने सुना है कि उन्हें खाना खिलाया जा सकता है।'' तुम्हें तो बहुत जानकारी है उनके बारे में, यह सही है, लेकिन क्या कोई ऐसा करनेवाला है क्या?''

''क्यों नहीं? उदाहरण के लिए यदि यह महिला प्रेत होती तो;''

ऊपर की सीढ़ियों पर झूलते हुए उसने कहा।

''आहा,'' मैंने कहा, ''लेकिन फिर भी यह सही नहीं है।''

मैंने कुछ अन्य चीज के बारे में सोचा। मेरा पड़ोसी मुझसे इतना दूर था कि मुझे उसे देखने के लिए सीढ़ियों पर झुकना पड़ा, ''एक ही बात है,'' मैंने जोर से कहा, ''यदि तुम मेरे प्रेत को मुझसे चुराते हो तो हमारे बीच संबंध हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।'' ''ओह, मैं तो मजाक कर रहा था,'' उसने कहा और वापस सामान्य स्थिति में चला गया।

''फिर तो ठीक है,'' मैंने कहा। और अब सही में मैं चुपचाप टहलने जा सकता था। लेकिन मैं इतना महसूस कर रहा था, इसलिए मैंने वापस ऊपर अपने कमरे में जाकर सोना बेहतर समझा।

❑

एक छोटी महिला

वह एक छोटी महिला है; स्वाभाविक रूप से पतली, अच्छी सुसज्जित; जब भी मैं उससे मिलता हूँ, वह हमेशा उसी पोशाक में होती है, जो भूरे-पीले कपड़ों की बनी है, इसका रंग लकड़ी से मिलता-जुलता है। यह व्यवस्थित तरीके से कटा हुआ है तथा इस पर कपड़े के रंग के ही बटन की तरह दिखनेवाले फुदने लगे हैं, वह कभी टोप नहीं पहनती तथा उसके बाल सुलझे हुए हैं, लेकिन ढीले-ढाले ढंग से बँधे हुए हैं। यद्यपि वह पूर्ण रूप से सुसज्जित है, लेकिन वह फुरतीली है तथा तेजी-से चलती है, वास्तव में वह अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा ही तेजी से चलती है, उसे अपनी कमर पर हाथ रखकर तथा अपने ऊपरी भाग को अचानक एक ओर आश्चर्यजनक रूप से मोड़ना बहुत पसंद है। उसके हाथ के प्रभाव को महसूस करके मुझे ऐसा लगा कि उसके हाथ में उँगलियों के बीच जितना स्पष्ट अंतर है वह मैंने पहले कभी नहीं देखा, फिर भी उसके हाथों में कुछ संरचनात्मक विचित्रता नहीं है, ये पूरी तरह से सामान्य हैं।

यह छोटी महिला मुझसे खुश नहीं रहती है, उसे हमेशा मुझमें कुछ-न-कुछ कमी दिखाई देती है। मैं हमेशा उसके साथ कुछ-न-कुछ गलत करता रहा हूँ, मैं हर कदम पर उसे नाराज करता रहा हूँ; अगर जीवन को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित किया जाए तथा इसके सभी टुकड़ों का अलग-अलग मूल्यांकन किया जाए तो मेरे जीवन का हर बचा टुकड़ा निश्चित रूप से उसके लिए एक अपमान होगा। कभी-कभी मुझे यह आश्चर्य होता है कि मैं उसके साथ ऐसा क्यों करता हूँ; हो सकता है कि मेरे से संबंधित हर चीजें उसके सौंदर्य सम्मान, उसकी न्याय भावना, उसकी आदतों, परंपराओ, आशाओं आदि को आहत करती हैं। मेरा और उसका स्वभाव पूर्णत: असंगत है, लेकिन इससे उसे इतनी परेशानी क्यों होती है? हमारे बीच ऐसा कोई संबंध नहीं है, जो उसे मेरी तरफ से परेशान होने को विवश करे। उसे सिर्फ यह करना चाहिए कि मुझे आगंतुक मानकर सम्मान करना चाहिए। मैं एक आगंतुक तो हूँ ही और इसमें मुझे कोई बुराई भी नजर नहीं आती, बल्कि मुझे इसका स्वागत भी करना चाहिए। उसे सिर्फ मेरे अस्तित्व को नजरअंदाज करना चाहिए जो कि मैंने कभी भी उसका ध्यान खींचने की कभी कोशिश नहीं की, और न ही कभी करूँगा और स्पष्टत: उसकी पीड़ा का अंत हो जाएगा। मैं अपने बारे में नहीं सोच रहा हूँ कि मैं सिर्फ इस कारण छोड़ रहा हूँ, क्योंकि मुझे उसका रवैया निश्चय ही चिड़चिड़ा देनेवाला लगता है, तथा मैं इस कारण भी इस बात की अनदेखी करता हूँ, क्योंकि मेरी परेशानी उसकी पीड़ा के मुकाबले कुछ भी नहीं है। उसी तरह मैं इस बात से भी भली-भाँति परिचित हूँ कि उसकी परेशानी में मेरे प्रति कोई सहानुभूति नहीं है, वह मुझमें कोई वास्तविक सुधार लाना नहीं चाहती। इसके अलावा उसे मुझसे जो भी परेशानी है वह इस तरह की नहीं है जिससे कि मेरे विकास में कोई बाधा आए।

फिर भी मेरे विकास की उसे कोई परवाह भी नहीं है, उसे तो बस अपनी किसी वस्तु में व्यक्तिगत रुचियों से ही सरोकार होता है, वे रुचियाँ ये हैं कि उन्हें मेरे द्वारा दी गई अपनी पीड़ा का बदला लेना तथा मेरे द्वारा भविष्य में इस प्रकार की किसी आशंका को रोकना। मैंने तो एक बार पहले ही यह संकेत देने की कोशिश की कि भविष्य में उनके निरंतर आक्रोश के कारण को बंद करने जा रहा हूँ, लेकिन मेरी कोशिशों से ही उसे इतना गुस्सा आया कि भविष्य में मैं वह कभी भी नहीं दुहराऊँगा।

मैं भी एक तरह की जिम्मेदारी महसूस करता हूँ। हम दो अजनबी, जैसे कि मैं और वह अजनबी महिला हैं, और जो भी हो, सच्चाई यह है कि हमारे बीच किसी प्रकार के संबंध का एक ही कारण है और वह है, वह आक्रोश, जो मैं उसे देता हूँ बल्कि वह आक्रोश देने के लिए वह मुझे उकसाती है, मुझे उससे होनेवाली स्पष्ट शारीरिक पीड़ा के

प्रति उदासीन नहीं होना चाहिए। प्राय: बार-बार मुझे यह सूचना मिलती है कि वह प्रात: पीड़ा से पीड़ित है, सोई नहीं है या सिर दर्द की वजह से काम करने में असमर्थ है। इसका परिवार इस वजह से परेशान रहता है तथा उन्हें यह समझ नहीं आता है कि उसकी परेशानी का कारण क्या है। केवल मुझे ही यह पता है कि उसकी परेशानी निरंतर है और वह मेरी वजह से है। यह सच है कि उसके परिवार की तरह मैं उसके लिए चिंतित नहीं हूँ। वह मजबूत है। कोई भी व्यक्ति जिसके भीतर यह तीव्र भावना होती है वह संभवत: इसके प्रभावों को भी झेलने में समर्थ होता है। मुझे आशंका है कि उसकी पीड़ाएँ, कम-से-कम कुछेक, मेरे ऊपर सार्वजनिक आशंका उत्पन्न करने के लिए एक दिखावा मात्र हैं। वह गर्व के तौर पर यह कहती है कि मेरा अस्तित्व मात्र ही उसकी पीड़ा का कारण है। मेरे विरुद्ध लोगों से अपील को वह आत्म-सम्मान के लिए एक चुनौती के रूप में देखती है। मेरे प्रति घृणा, बल्कि निरंतर सक्रिय घृणा ही उसे हमेशा मेरे बारे में सोचने को विवश करती है। उसकी इस पीड़ा पर सार्वजनिक चर्चा करना लज्जाजनक है। लेकिन किसी ऐसी चीज के बारे में बिल्कुल खामोश रहना जो उसे निरंतर परेशान करती है, वह भी बहुत कठिन है। इसलिए स्त्रीजनित चतुराई के साथ वह मध्य मार्ग चुनती है। वह खामोश तो रहती है पर विषय पर सार्वजनिक ध्यान आकर्षित करने के लिए वह गुप्त वेदना के सभी बाहरी संकेतों को छुपा जाती है। उसे यह उम्मीद थी कि एक बार यदि सार्वजनिक आकर्षण मुझ पर कें द्रित हो जाए तो मेरे विरुद्ध सामान्य सार्वजनिक विरोध उत्पन्न होगा जो अपनी पूरी शक्ति के साथ उसकी निजी कमजोर घृणा से क हीं अधिक शीघ्रता एवं प्रभावशाली ढंग से मेरी निंदा करेगा। तब वह पृष्ठभूमि में चली जाएगी और राहत की साँस लेगी। सही में यदि ऐसा है तो वह स्वयं को धोखा दे रही है। सार्वजनिक मत उसकी भूमिका अदा नहीं कर सकती। लोग मुझे कभी भी इतना आपत्तिजनक नहीं समझेंगे, यहाँ तक कि अपनी शक्तिशाली सूक्ष्म दृष्टि का उपयोग करके भी। मैं ऐसा भी बिल्कुल बेकार नहीं हूँ जैसा वह समझती है। मैं कोई गर्व करना नहीं चाहता विशेषकर उस संबंध के विषय में। यदि मैं उपयोगी गुणों के कारण महत्त्वपूर्ण नहीं हूँ, तो निश्चित रूप से मैं उनकी कमी की वजह से भी महत्त्वपूर्ण नहीं हूँ। सिर्फ उसे या उसकी सफेद आँखों में मैं ऐसा प्रतीत होता हूँ, वह किसी को भी यह विश्वास नहीं दिला पाएगी। इस मामले में मैं बिल्कुल आश्वस्त हूँ, क्या मैं आश्वस्त हो सकता हूँ? नहीं बिल्कुल भी नहीं; क्योंकि यदि यह सबको पता चल जाता है कि मेरे आचरण की वजह से वह सकारात्मक रूप से बीमार है तो कुछ लोग उसके बारे में मुझे सूचनाएँ देते रहते, उनको यह पता चलाना मुश्किल नहीं है; या कम-से-कम वे यह प्रभाव देंगे कि उन्हें सब कुछ मालूम है, लोगों को मुझसे यह प्रश्न करना चाहिए कि मैं बेचारी छोटी महिला को क्यों परेशान करता हूँ, तथा क्या मैं उसे इतना परेशान करना चाहता हूँ कि वह मर जाए, या मुझमें इतनी समझ कब आएगी तथा शालीन मानवीय संवेदनाएँ मुझे उसके साथ ऐसा व्यवहार करने से रोकेंगी, यदि लोग ऐसे प्रश्न करेंगे तो मेरे लिए उनके उत्तर देना मुश्किल होगा। क्या मुझे स्पष्ट रूप से यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि मैं बीमारी के इन लक्षणों में विश्वास नहीं करता तथा ऐसा प्रभाव पैदा करना चाहिए कि मैं एक ऐसा इनसान हूँ, जो स्वयं को आरोपों से बचाने के लिए दूसरों पर आरोप लगाता है, वह भी अत्यंत धृष्टता के साथ? और मैं कैसे यह खुले तौर पर कह सकता हूँ कि यद्यपि मुझे यह विश्वास है कि वह सचमुच में बीमार थी, पर मुझे उसके प्रति थोड़ी सी सहानुभूति नहीं है, क्योंकि वह एक अपरिचित है तथा उसके और मेरे बीच किसी भी प्रकार का संबंध एक तरफा तथा उसकी स्वयं की कृति है। मैं यह नहीं मानता कि लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे; उनकी इसकी गहराई में जाने में रुचि नहीं होगी, वे तो सिर्फ मेरे इस कमजोर, बीमार महिला के विषय में दिए उत्तरों को नोट कर लेंगे तथा वह मेरे लिए थोड़ा ही होगा। मेरा कोई भी उत्तर इस प्रकार के मामलों को आवश्यक रूप से प्रेम-प्रसंग के रूप में देखने में लोगों की असमर्थता के विरुद्ध होगा, यद्यपि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ऐसे किसी संबंध का कोई अस्तित्व नहीं है, यदि ऐसा हो भी तो यह मेरी

ओर से होगा न कि उसकी ओर से। मुझे उस छोटी महिला के निर्णय की शीघ्रता तथा निष्कर्ष निकालने की उसकी निरंतर दृढ़ता की प्रशंसा करनी चाहिए, पर ऐसा तब होता जब वह अपने इन गुणों को मेरे विरुद्ध अस्त्र के रूप में प्रयोग नहीं करती। वह मेरे प्रति तनिक मात्र दोस्ती नहीं दरशाती; इस मामले में वह ईमानदार एवं सच्ची है, तथा यही मेरी अंतिम आशा थी, क्योंकि इस बात की थोड़ी भी आशंका नहीं थी कि कभी भी मेरे प्रति उसका व्यवहार बदलेगा। लेकिन सार्वजनिक मत, जो ऐसे मामलों में पूर्णत: असंवेदनशील होता है, वह पक्षपातपूर्ण होगा तथा मेरा त्याग होगा।

इसलिए मेरे लिए एकमात्र चीज यह थी कि मैं समय के साथ बदल जाऊँ, इससे पहले कि लोग इस मामले में हस्तक्षेप करें, ताकि उस छोटी महिला की मेरे प्रति घृणा कम हो सके। वास्तव में, मैंने कई बार स्वयं से पूछा है कि क्या मैं अपनी वर्तमान सोच से इतना खुश हूँ कि मैं बदलना नहीं चाहता था, मैं बदलने की कोशिश नहीं कर सका। यद्यपि मुझे यह करना चाहिए, इसलिए नहीं कि यह जरूरी है, बल्कि उस छोटी महिला के मेरे प्रति क्रोध को शांत करने के लिए। मैंने ईमानदारी से यह कोशिश की है, इसके लिए कुछ परेशानियाँ भी उठाईं, यहाँ तक कि मुझे फायदा भी हुआ। यह एक प्रकार का ध्यान भंग भी था। कुछ परिवर्तनों के परिणाम भी आए जो बिल्कुल स्पष्ट होने में समय लगा, मैं उस ओर उसका ध्यान आकृष्ट करना नहीं चाहता। उस तरह की चीजों का पता उसे मुझसे जल्दी लग जाता है। मेरे दिमाग में क्या चल रहा है इसका पता भी उसे मेरी अभिव्यक्ति से पहले चल जाता है। लेकिन मेरी कोशिशों को कोई सफलता नहीं मिली। यह कैसे इस तरह संभवत: कर सकता था। उसकी मेरे प्रति घृणा जो मुझे मालूम है, बुनियादी है। उसे कोई भी खत्म नहीं कर सकता, यहाँ तक कि मैं स्वयं खत्म हो जाऊँ तब भी। अगर उसे पता चल जाए कि मैंने आत्महत्या कर ली है तो उस पर क्रोध छा जाएगा।

अब तो मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि इतनी तीक्ष्ण बुद्धिवाली महिला मेरी तरह अपने द्वारा की गई काररवाइयों की निरर्थकता एवं उसकी आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने की मेरी मजबूरी को नहीं समझती है। निश्चय ही, वह यह समझती है, लेकिन स्वभावत: लड़ाका होने के कारण वह यह भूल जाती है, और मेरी दुर्भाग्यपूर्ण मनोदशा, जिसका मैं कुछ नहीं कर सकता क्योंकि यह स्वभावत: ही ऐसा है, और जो मुझे किसी भी उस व्यक्ति को हल्की डाँट लगाने के लिए उकसाता है, जो उग्रतापूर्ण व्यवहार करता है। इस प्रकार स्पष्टत: हमारे संबंध कभी अच्छे नहीं होंगे। सुबह सवेरे जब सुखद मूड में मैं घर छोड़ूँगा तो मेरी नजर उसके मुखड़े पर ही पड़ेगी, जो मुझे देखते ही झुक जाता है। उसकी गहरी सजग निगाहें, जो उचटती हुई मुझ पर पड़ती हैं लेकिन फिर भी सब कुछ ताड़ जाती हैं; उसके युवा गालों पर उभरते व्यंग्यात्मक मुसकान, नजरों में शिकायत, कमर पर रखे हाथ, जो उसे अपना संतुलन बनाने में मदद करते हैं, और तभी क्रोध के वेग से पीली पड़ जाती है तथा काँपने लगती है।

अभी थोड़ा पहले ही मैंने मौका पाकर, पहली बार आश्चर्यजनक अनुभूति के साथ अपने एक अच्छे मित्र से अनौपचारिक रूप से इस बात पर चर्चा की; मैंने एक मामूली घटना के रूप में उसे अपने मित्र को बताया। उत्सुकतावश मेरे मित्र ने उसकी अपेक्षा नहीं की, बल्कि इसे गंभीरता से लिया और उस पर विचार-विमर्श के लिए आग्रह किया। इससे भी ज्यादा उत्सुकता की बात यह थी कि उसने एक विषय विशेष को गंभीरता से नहीं लिया, क्योंकि उसने थोड़े समय के लिए चले जाने की मुझे गंभीर सलाह दी। कोई भी सलाह कम समझने योग्य नहीं हो सकती। यह बात तो बिल्कुल साधारण थी, जो कोई भी इसे निकट से देखता, इसे समझ सकता था, फिर भी यह इतना आसान भी नहीं कि सिर्फ मेरे चले जाने भर से ही सब कुछ सही हो जाएगा, यहाँ तक कि इसका बड़ा भाग भी। इसके विपरीत इस तरह के प्रस्थान से ही मुझे बचना चाहिए। यदि मुझे किसी योजना पर काम ही करना हो तो वह यह होना चाहिए कि इस विषय को मुझे इसकी वर्तमान संकीर्ण सीमा में रखना चाहिए, जिसमें बाहरी दुनिया की

कोई संलिप्तता न हो। दूसरे शब्दों में, मैं जहाँ हूँ, वहीं चुपचाप रुक जाना चाहिए तथा जहाँ तक संभव हो उससे अपने आचरण को अप्रभावित रखूँ। मुझे किसी और से इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए, इसलिए नहीं कि यह एक खतरनाक रहस्य है, बल्कि यह एक मामूली एवं विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत मामला है, और इसी कारण इसे गंभीरता से नहीं लेना चाहिए तथा उसे उस स्तर पर ही रखना चाहिए। इसलिए कुल मिलाकर मेरे दोस्त की टिप्पणी बिल्कुल निरर्थक भी नहीं थी। उससे मुझे कु छ नया सीखने को नहीं मिला फिर भी उससे मेरा मूल संकल्प मजबूत हुआ।

निकट से देखने पर ऐसा लगता है कि समय के साथ उस मामले में प्रगति हुई है, लेकिन वास्तव में यह इस विषय पर प्रगति नहीं थी, बल्किमेरा उसे देखने के नजरिए में बदलाव था। एक ओर तो यह अधिक संगठित, मजबूत और घातक बन गया था तो दूसरी ओर निरंतर तनाव के कारण, जिससे मैं उबर नहीं सकता, चाहे यह जितना भी हल्का हो, इससे मेरा चिड़चिड़ापन बढ़ा ही था। अब मैं इस बात की वजह से कम परेशान हूँ कि मैं मानता हूँ कि मैं समझता हूँ कि किसी निर्णायक संकट की स्थिति में पहुँचना कितना असंभव है; जो कभी-कभी इतना अवश्यंभावी प्रतीत होता है; कोई भी आसानी से छोड़ देता है, विशेषकर जब वह युवा होता है, ताकि निर्णायक क्षणों के पहुँचने की गति को बढ़ा सके। जब कभी भी मेरी छोटी आलोचक मुझे देखते ही बेहोश होती है, एक हाथ से कुरसी की पीठ को पकड़ते हुए तथा दूसरे हाथ से अपने अंत: वस्त्रों के फीते को तेजी से खींचते हुए जब कुरसी के एक ओर धँस जाती है, उसके गालों पर क्रोध और निराशा के आँसू बहने लगते हैं, तो मैं यह सोचा करता था कि अब वह क्षण आ गया है तथा मैं अपने लिए जवाब देने के लिए बस बुलाया ही जाने वाला हूँ फिर भी वह निर्णायक क्षण या बुलावा नहीं था। महिलाएँ तुरंत बेहोश हो जाती हैं तथा लोगों के पास उनकी करतूतों को देखने का समय नहीं होता। और इन वर्षों में वास्तव में क्या घटा है? कुछ भी नहीं, सिवाय इसके कि ऐसे अवसर बार-बार आते रहे हैं, कभी अधिक तो कभी कम उग्रता से, तथा उनका कुलशेष उसी के अनुरूप बढ़ा है। आरंभ में लोग एक निश्चित दूरी बनाते थे तथा तभी हस्तक्षेप करते, जब उन्हें इसे करने का कोई रास्ता दिखाई पड़ता; लेकिन उन्हें ऐसा कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ता। इसलिए अब तक तो उन्हें अपने पर्यवेक्षण पर ही निर्भर रहना पड़ता था, फिर भी वह लोगों को अपने काम में व्यस्त रखने के लिए काफी था; इससे ज्यादा यह कुछ नहीं कर सकता था। फिर भी बुनियादी तौर पर परिस्थिति हमेशा ही ऐसी थी, अनावश्यक तमाशाइयों से भरी, जो हमेशा ही अपनी उपस्थिति को किसी-न-किसी धूर्त बहाने के द्वारा सही साबित करती। कभी-कभी तो वे रिश्तेदार होने का नाटक भी करते तथा बातों की गहराई तक पहुँचने की कोशिश करते, लेकिन उनकी कुल उपलब्धि यह थी कि वे अभी भी मौजूद थे। एकमात्र अंतर यह था कि अब मैं धीरे-धीरे पहचानने लगा था। बहुत पहले मैं यह समझता था कि वे अभी-अभी धीरे-धीरे बाहर से अंदर आए हैं, तथा यह इस बात की व्यापक प्रतिक्रिया की परिणति है तथा ये स्वयं एक संकट को जन्म देंगे। आज मैं यह समझता हूँ कि मूझे मालूम था कि ये तमाशाई शुरू से ही हमेशा से वहाँ मौजूद थे तथा उनका किसी संकट की आवश्यकता से थोड़ा-बहुत या बिल्कुल भी लेना-देना नहीं था। और स्वयं, उसे मुझे इस नाम से गौरवान्वित क्यों करना चाहिए? यदि ऐसा कभी होता है, निश्चय ही कल या कल के बाद भी नहीं, शायद कभी भी नहीं, फिर भी सार्वजनिक मत खुद ही इस बात का फैसला करेगी, जो कि मैं एक बार फिर दुहराता हूँ कि, यह बात उसकी क्षमता के बाहर है। निश्चय ही, मैं भी इससे बच नहीं सकता, लेकिन दूसरी ओर लोगों को इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि मैं भी लोगों की नजर में अनजान नहीं हूँ। मैंने भी लोगों के बीच एक लंबा जीवन जिया है, वह भी पूरे विश्वास एवं भरोसे के साथ, और यही बात उस छोटी महिला को परेशान करती है। मेरे जीवन में देर से आनेवाली यह महिला, जो मुझे टिप्पणी करने को विवश करती है, कोई भी दूसरा व्यक्ति इसे सहज ही अनसुनी कर देता कि यह महिला ज्यादा-से-ज्यादा बुरा यह कर सकती है कि सार्वजनिक मत को

प्रभावित कर सके, जिसने बहुत पहले ही मुझे समाज के एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया है। आज यही स्थिति है, और इससे मुझे प्रभावित होने की तनिक संभावना है।

तथ्य तो यह है कि समय के साथ मेरे में भी कुछ नकारात्मक बदलाव आए हैं, लेकिन उसका इस विषय से कुछ सरोकार नहीं है। कोई व्यक्ति किसी की घृणा का निरंतर कें द्र बनना बरदाश्त नहीं कर सकता है; जबकि वह जानता है कि यह घृणा अकारण है, निराधार है। तब वह परेशान हो जाता है; तब वह अंतिम निर्णय की अपेक्षा करने लगता है तथा एक समझदार व्यक्ति की तरह उसे यह विश्वास होता है कि ऐसा निर्णय अभी आनेवाला नहीं है। आंशिक रूप से भी, यह बढ़ती उम्र के लक्षण हैं। यौवन हर चीज को आकर्षक बना देता है तथा भद्दे लक्षण यौवन की उफनती ऊर्जा में कहीं गुम हो जाते हैं। यदि किसी व्यक्ति की युवक के रूप में निगाहें चौकस हैं तो कोई इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता, यहाँ तक कि वह व्यक्ति स्वयं भी। लेकिन जो चीजें बुढ़ापे तक साथ रहती हैं वे हैं अवशेष। हर चीज आवश्यक है, कुछ भी नया नहीं है। हर चीज की जाँच-परख जारी है तथा किसी उम्रदराज व्यक्ति की निगाहें स्पष्टत: चौकस हैं तथा उन्हें पहचानना मुश्किल भी नहीं है। उसकी स्थिति में सिर्फ यह ही वास्तविक गिरावट नहीं है, इस मामले में भी यही बात है।

यदि किसी भी दृष्टिकोण से मैं इस मामले पर विचार करूँ तो ऐसा लगता है, कि यदि मैं इस पर अपना हाथ रखूँ तो चाहे बहुत हलके से भी, मैं लोगों की भावनाओं से अप्रभावित हुए बिना तथा उस महिला के सारे आक्रोश के बावजूद भी आनेवाले समय में शांतिपूर्वक एक लंबा जीवन जीऊँगा, मैं इस बात के प्रति दृढ़ हूँ।

❑

पुरानी पांडुलिपि

ऐसा लगता है कि हमारे देश की सुरक्षा प्रणाली की बहुत ही उपेक्षा की गई है। अभी तक तो हमें इसकी थोड़ी भी चिंता नहीं थी और हम अपने नियमित कार्यों में ही व्यस्त थे। लेकिन हाल ही में घटनाओं ने हमें परेशान करना शुरू कर दिया।

सम्राट् के महल के सामने ही मोची की दुकान है। संध्या के आगमन के साथ ही मैंने अभी अपनी दुकान बंद भी नहीं की थी कि मैं देखता हूँ कि शहर के हर गली के द्वार पर सशस्त्र सेनाएँ खड़ी थीं। लेकिन ये हमारी सेनाएँ नहीं थीं, स्पष्टत: वे उत्तर के खानाबदोश थे। यह मेरी समझ से बाहर था कि वे राजधानी में कैसे प्रवेश कर गए, यद्यपि यह सीमा से काफी दूर है। जो भी हो, अब तो वे यहाँ हैं। ऐसा लगता है कि हर सुबह इनकी संख्या बढ़ जाती है।

जैसा कि उनकी प्रकृति है, वे खुले आकाश के नीचे तंबुओं में रहते हैं, क्योंकि वे आवासों से घृणा करते हैं। वे घुड़सवारी के अभ्यास, तलवारों के तेज करने तथा तीरों में धार देने में स्वयं को व्यस्त रखते हैं। यह शांत शहर, जो हमेशा ही साफ-सुथरा रहता था, इन लोगों ने सचमुच में अस्तबल बना दिया है। प्राय: हम यह कोशिश तो करते हैं कि दुकान से बाहर जाकर वहाँ पड़ी गंदगी को थोड़ा तो साफ कर दें, लेकिन ऐसा प्राय: हो नहीं पाता है। सारी मेहनत बेकार है। इससे हमें जंगली घोड़ों के कदमों तले कुचले जाने या चाबुकों के प्रहार से आहत होने का खतरा पैदा हो जाता है।

खानाबदोशों से बातचीत असंभव है। उन्हें हमारी भाषा मालूम नहीं, वास्तव में, उनकी अपनी भी कोई भाषा नहीं है। वे आपस में भी पक्षियों की तरह बातें करते हैं। हमें हमेशा पक्षियों की तरह की क चर-कचर की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। हमारे रहन-सहन के ढंग तथा हमारी संस्थाओं को ये न तो समझते हैं और न ही समझने की जरूरत समझते हैं। यहाँ तक कि हमारी संकेत भाषाओं तक को समझने के प्रति वे अनिच्छुक होते हैं। आप हाव-भाव के माध्यम से चाहे जितना भी उन्हें समझाने की कोशिश करें वे कभी नहीं समझेंगे और आपको यह समझ में नहीं आएगा। वे कभी मुखाकृति बिगाड़ते हैं, कभी अपनी आँखों का सफेद भाग ऊपर चढ़ जाता है तथा होंठों पर झाग आ जाता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे कु छ कहना चाहते हैं, यहाँ तक कि धमकी भी नहीं; वे ऐसा करते हैं क्योंकि ऐसा करना उनका स्वभाव है। उन्हें जिस किसी चीज की भी जरूरत होती है वे वह ले लेते हैं। आप यह नहीं कह सकते कि उन्होंने जबरदस्ती ली। वे किसी चीज को झपटते हैं तो आप चुपचाप एक ओर खड़े हो जाते हैं और उन्हें ऐसा करने देते हैं।

मेरे भंडार से भी उन लोगों ने कई अच्छी चीजें ले ली हैं। लेकिन मैं शिकायत नहीं कर सकता, जब मैं देखता हूँ कि किस तरह कसाई को, उदाहरण के लिए, गली में पीड़ों से गुजरना पड़ता है। जैसे ही वह मांस लाता है, खानाबदोश उससे सब छीन लेते हैं और खा जाते हैं। यहाँ तक कि उनके घोड़े भी मांस खाते हैं। कभी-कभी तो घुड़सवार और उसका घोड़ा बराबर में लेट जाते हैं तथा एक ही मांस के टुकड़े के दोनों ओर से वे दोनों खाते हैं। कसाई घबराया हुआ है तथा मांस की आपूर्ति को रोकने की भी उसमें हिम्मत नहीं है। जो भी हो, हम यह समझते हैं और उसे अपना धंधा जारी रखने के लिए पैसे देते हैं। यदि खानाबदोशों को मांस न मिले तो वे क्या करेंगे, किसे पता है; वे क्या सोचेंगे, कौन जानता है, यद्यपि कि उन्हें प्रतिदिन मांस मिलता।

बहुत पहले की बात नहीं है, जब कसाई ने यह सोचा कि अब वह पशुओं को नहीं मारेगा। इसलिए एक दिन सुबह-सवेरे जिंदा बैल लेकर आया। लेकिन वह दुबारा ऐसा करने की हिम्मत कभी नहीं करेगा। मैं पूरे एक घंटा अपनी दुकान की जमीन पर पड़ा रहा तथा मेरे पास जो भी चिथड़े-कपड़े थे, उनसे अपने कानों को बंद कर लिया,

ताकि मुझे उस बैल के चिल्लाने की आवाज सुनाई न पड़ सके, जिसे खानाबदोश चारों ओर से काट रहे थे तथा उसके जिंदे मांस को वे अपने दाँतों से मांस नोच कर खा रहे थे। बहुत देर के बाद जब शांति हुई तो मैं बाहर आने का साहस कर पाया। वे बैल के मृत शरीर के अवशेषों के चारों ओर इस प्रकार पड़े थे जैसे पियक्कड़ शराब पात्र के चारों ओर पड़े होते हैं।

यही वह मौका था, जब मैंने कल्पना की कि मैंने वास्तव में खुद सम्राट् को महल की एक खिड़की पर देखा; प्राय: वह इनसे बाहर कभी भी नहीं आता है, बल्कि अपना अधिकांश समय भीतर के बगीचे में बिताता है, फिर भी इस अवसर पर वह खड़ा था या मुझे ऐसा लगा कि एक खिड़की पर खड़े होकर अपना सिर झुकाकर अपने आवास के सामने हो रही कारावाइयों का नजारा देख रहा था।

''क्या होने जा रहा है?'' हम अपने-आप से पूछते हैं, ''इस बोझ और पीड़ा को हम कब तक झेलते रहेंगे। सम्राट् का महल तो उन्हें यहाँ तक ले आया है, लेकिन अब उन्हें वहाँ से कैसे भगाया जाए, यह नहीं मालूम है। फाटक अभी भी बंद है। सुरक्षागार्ड, जो समारोहपूर्वक मार्च किया करते थे, अब वे भी काँटेदार खिड़कियों के पीछे हैं। अब तो यह हम शिल्पकारों एवं व्यापारियों की जिम्मेदारी है कि देश को कैसे बचाएँ? लेकिन इतने बड़े काम के लिए हम प्रशिक्षित नहीं हैं, और न ही हमने कभी भी इतना योग्य समर्थ होने का दावा ही किया है। यह एक तरह की गलतफहमी है, और यह हम सबकी बरबादी होगी।''

❑

सियार और अरबी

हमने नखलिस्तान में अपना तंबू गाड़ा हुआ था। मेरे साथी सो रहे थे। एक लंबा सफेद अरबी वहाँ से गुजरा। वह अपने ऊँटों की देखभाल करता था और अपने विश्राम स्थल की ओर जा रहा था।

मैं वहीं घास पर लेट गया। मैंने सोने की कोशिश की, लेकिन सो नहीं सका। दूर कहीं से सियार के चिल्लाने की आवाज आ रही थी। मैं फि र बैठ गया और अभी तक जो दूर था वह शीघ्र ही बिल्कुल पास आ गया था। सियारों का झुंड मेरे चारों ओर था, उनकी मद्धिम सुनहरी आँखें चमक रही थीं; अचानक फिर से वे गायब भी हो गए। उनका पतला शरीर लयबद्ध तरीके से इस प्रकार घूम रहा था मानो उन पर चाबुक से प्रहार हुआ हो।

एक सियार मेरे पीछे से निकल आया। उसने हलके से मेरे बाजू को झटका मारा और मेरे निकट इस प्रकार आकर सटा कि मानो उसे मेरे स्नेह की जरूरत हो। फिर वह मेरे बिल्कुल सामने खड़ा हो गया तथा मुझसे लगभग आँखों में आँखें डालकर बोला-

''मैं इनमें सबसे बड़ा सियार हूँ। अंतत: मुझे आपसे मिलकर खुशी हुई। हम इतने वर्षों से आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे और अब तो मैंने मिलने की उम्मीद ही छोड़ दी थी। मेरी माँ, माँ की माँ, हमारी सभी पूर्व माताएँ, सभी सियारों की पहली माँ ने आपकी प्रतीक्षा की। मेरा विश्वास कीजिए, यह सच है।''

''यह तो आश्चर्यजनक है,'' मैंने कहा, ''लकड़ियों के उस ढेर को जलाना भूलकर जो सियारों को जलाने के लिए वहाँ पड़ा था,'' मुझे यह सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। यह तो विशुद्ध रूप से संयोग की बात ही है कि मैं यहाँ सुदूर उत्तर से आया था तथा मैं आपके देश का थोड़ा भ्रमण कर रहा हूँ। फिर आप सियार क्या चाहते है?

शायद मेरे इतने मित्रवत व्यवहार से मेरे निकट खड़े सियारों के झुंड को मानो थोड़ा साहस मिल गया। वे सभी हाँफ रहे थे और उनके मुँह खुले हुए थे।

''हम जानते हैं,'' सबसे बड़े सियार ने शुरुआत की, ''आप उत्तर से आए हैं; और इसी पर हमारी सारी आशाएँ टिकी हुई हैं। आप उत्तर के वासियों में जिस प्रकार की बुद्धिमता होती है, वह अरबियों में नहीं पाई जाती। मुझे यह कहना चाहिए कि उनके ठंडे गर्व में से बुद्धिमत्ता का एक अंश भी नहीं फू टता है। वे भोजन के लिए जानवरों को मारते हैं और मृत पशुओं से वे घृणा करते हैं।''

''इतने जोर से नहीं,'' मैंने कहा, ''यहाँ आस-पास अरबी सो रहे हैं।''

''आप सचमुच में यहाँ अजनबी हैं,'' सियार ने कहा, ''या आपको यह पता होना चाहिए कि विश्व इतिहास में कभी कोई सियार किसी अरबी से नहीं डरा है। हमें उनसे क्यों डरना चाहिए? क्या यह हमारा दुर्भाग्य नहीं है कि ऐसे जीवों के बीच हम निर्वासित हैं?''

''शायद, हो सकता है,'' मैंने जवाब दिया, ''अपने क्षेत्राधिकार से बाहर के विषय में मैं निर्णय करने में असमर्थ हूँ; मुझे यह एक पुराना झगड़ा प्रतीत होता है। मेरा मानना है कि यह रक्त में ही है और शायद जीवन के साथ ही खत्म होगा।''

''आप बहुत चालाक हैं,'' बूढ़े सियार ने कहा, फिर वे सभी और तेजी से हाँफ ने लगे। उनके फेफड़ों से तेजी से हवा निकल रही थी पर वे स्थिर-शांत खड़े थे। उनके जबड़ों से निकलनेवाली तीव्र गंध को बरदाश्त करने के लिए कभी-कभी मुझे अपने दाँतों को सेट करना पड़ता था, ''आप बहुत चालाक हैं। आपने अभी जो कुछ कहा वह हमारी पुरानी परंपरा के बिल्कुल अनुरूप है। इसलिए जब हम उनका खून निकाल लेंगे तो हमारी लड़ाई खत्म हो जाएगी।''

''ओह!'' मैंने कहा, बहुत तेजी से जो मैं कहना नहीं चाहता था, ''वे अपनी रक्षा स्वयं कर लेंगे। वे अपनी बंदूकों से तुम्हें दर्जनों की संख्या में मार डालेंगे।''

''आपने हमें समझने में गलती की है,'' उसने कहा, ''एक मानव भूल, जो कि सुदूर उत्तर में भी होती है। हम उन्हें मारने का प्रस्ताव नहीं कर रहे। नील नदी का पूरा पानी भी हमारी इस भावना को साफ नहीं कर सकता है। क्यों, हमें उन्हें देखते ही दुम दबाकर खुली हवा में मरुस्थल में भागना चाहिए, जो कि मेरा ही घर है।''

तभी सभी सियार, जिनमें कुछ नए भी थे जो इस्दराज से वहाँ आ गए थे, अपने मुँह अगली टाँगों के बीच डालकर अपने पंजों से उसे पोंछा; मानो तीव्र घृणा की भावना को छुपाने की कोशिश कर रहे हों। मुझे लगा कि मैं उनके सिरों पर से कूदता हुआ वहाँ से भाग जाऊँ।

''तब क्या करने का प्रस्ताव कर रहे हो?'' मैंने पूछा, अपने पैर पर खड़े होने की कोशिश करते हुए, लेकिन मैं नहीं उठ सका। दो छोटे-छोटे सियारों ने पीछे से मेरे कोट एवं कमीज को अपने दाँतों में फँसा लिया था, मैं बैठना चाहता था। ये आपके ट्रेन बेचरर्स हैं, बड़ी गंभीरता से बूढ़े सियार ने मुझे समझाया, ''यह सम्मान का सूचक है। अब उन्हें जाना चाहिए,'' मैं बूढ़े सियार, फिर छोटे सियार की ओर मुड़ते हुए चिल्लाया। ''वे जरूर जाएँगे,'' बूढ़े सियार ने जवाब दिया, ''यदि यह आपकी इच्छा है तो लेकिन इसमें थोड़ा समय लगेगा, क्योंकि अपने रिवाज के अनुसार अपने दाँत अच्छी तरह गड़ा दिए हैं, अब उन्हें धीरे-धीरे अपने जबड़े ढीले करने पड़ेंगे। जो भी हो, आग्रह पर ध्यान दीजिए।'' ''तुम्हारे आचरण ने मुझे इस तरह प्रभावित नहीं किया कि मैं तुम्हारे आग्रह को स्वीकार कर लूँ।'' मैंने जवाब दिया। ''इस तरह मत सोचिए कि हम असभ्य हैं, पहली बार अपनी आवाज में स्वाभाविक नरमी लाते हुए उसने जवाब दिया, हम तो कमजोर प्राणी हैं, हमारे पास दाँत के सिवा कुछ नहीं है। जो भी अच्छा या बुरा हम करना चाहते हैं, हम अपने दाँतों के सहारे ही वह करते हैं।'' ''ठीक हो, तुम क्या चाहते हो,'' मैंने थोड़ी सख्ती से पूछा।

''श्रीमान,'' वह चिल्लाया और उसके साथ सभी सियारों ने सुर मिलाया, दूर से यह मधुर लगता। ''श्रीमान, हम चाहते हैं कि इस संसार को बाँटनेवाले झगड़े का आप अंत कर दें। आप बिल्कुल वही व्यक्ति हैं जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने यह भविष्यवाणी की थी कि आप ही यह कर सकेंगे। अब हम और अरबियो द्वारा सताया जाना नहीं चाहते; साँस लेने के लिए जगह, खुला स्वच्छ आकाश, अरबियों द्वारा मारे गए भेड़ों की चीख से इतर जगह; हर प्राणी की स्वाभाविक मौत, मृत पशुओं को खाने का हमारा निर्विध्नवत अधिकार हमें चाहिए। स्वच्छता, सिर्फ स्वच्छता, बस यही हमें चाहिए।'' फिर वे सभी सिसकने-रोने लगे, ''आप कैसे ऐसे संसार में जी सकते हैं, महाराज।'' वे इतनी गंदगी में जीते हैं, उनकी दाढ़ी से डर लगता है, उनकी आँखों के गड्ढे देखकर थूकने का मन करता है तथा जब वे अपने बाजू उठाते हैं तो वहाँ नरक का सा अँधेरा दिखता है। ''इसलिए श्रीमानजी अपने शक्तिशाली हाथों से इस कैंची से उनके गले काट दीजिए।'' इसके बाद एक सियार जंग से भरी एक कैंची अपने दाँतों में फँसाकर मुझे देने आया।

''अच्छा ठीक है, अंतत: यह कैंची आ गई, और रुक जाने का सही समय भी।'' हमारे कारवाँ का अरबी सरदार चिल्लाया जो चुपचाप हमारी ओर आ रहा था तथा आते ही उसने अपना चाबुक चलाया।

सियार तेजी से भाग गए तथा थोड़ी ही दूरी पर अव्यवस्थित भीड़ के रूप में इकट्ठे हो गए।

''अच्छा, तो यह मनोरंजन आपके लिए था, श्रीमान।'' हँसते हुए अरबी ने पूछा। ''तो आपको पता है ये क्या करने जा रहे हैं,'' मैंने पूछा। ''जरूर,'' उसने जवाब दिया, ''यह तो साधारण सी बात है, जब तक अरबियों का अस्तित्व है, यह कैंची इस मरूस्थल में इधर-उधर होती रहेगी और अंत में यह हमारे पास ही होगी। हर यूरोपियन

को यह कैंची दी जाती है कुछ महान् काम के लिए, यूरोपियन ही वह व्यक्ति है, जिसे भाग्य ने इनके लिए चुना है। उनकी पागलपन भरी आशाएँ हैं, वे बिल्कुल मूर्ख हैं। इसलिए तो हम उन्हें पसंद नहीं करते हैं। वे हमारे कुत्ते हैं, आपके कुत्तों से कहीं अच्छे। अब यह देखिए, पिछली रात एक ऊँट मर गया और मैं ही उसे यहाँ लाया था।''

चार व्यक्तियों ने वह मृत पशु लाकर हमारे सामने फेंक दिया। यह अभी जमीन पर गिरा भी नहीं होगा कि सियारों ने चिल्लाना शुरू कर दिया। सब कुछ भूलकर यहाँ तक कि अरबी, अरबी के प्रति घृणा भी, वे मृत पशु की ओर बढ़ने लगे। एक तो पहले से ही ऊँट के गले पर बैठकर खा रहा था। एक छोटी शक्तिशाली मशीन की तरह वह पूरी शक्ति से अपने भीतर उठी ज्वाला को शांत करने की कोशिश कर रहा था। शीघ्र ही वे सभी मृत पशु के ऊपर पहाड़ी की तरह ऊँचे होकर खाने में जुट गए।

और तभी इस कारवाँ के मुखिया ने अपना चाबुक उनकी पीठ पर चलाया। अधूरे आनंद से अभिभूत अपना सिर उठाया तो सामने अरबी को खड़ा पाया। अपने नथुने पर चाबुक का प्रहार पड़ते ही वे पीछे की ओर भाग खड़े हुए। ऊँट का मृत शरीर कई जगहों पर खोल दिया था तथा उससे खून बह रहा था। लेकिन सियार बहुत देर तक वहाँ जाने से स्वयं को रोक नहीं सके, और एक बार फिर वे वहाँ पहुँच गए। एक बार फिर मुखिया ने अपना चाबुक उठाया, लेकिन इस बार मैंने उसका हाथ रोक दिया।

''आपने सही किया श्रीमान,'' उसने कहा, ''हमें उन्हें अपना काम करने के लिए छोड़ देना चाहिए। इसके अलावा अब हमें अपना तंबू उखाड़ना चाहिए। अच्छा है आपने उन्हें देखा है। अद्‌भुत प्राणी, है न?'' वे किस प्रकार हमसे घृणा करते हैं।

❑

खान का भ्रमण

मुख्य अभियंताओं ने खान में हमारी ओर का भ्रमण किया था। प्रबंधन ने नई गैलरी के विषय में कुछ दिशा-निर्देश जारी किए थे। इसलिए आरंभिक सर्वे के लिए अभियंता वहाँ आ गए। ये कितने युवा हैं, फिर भी एक-दूसरे से कितने भिन्न। पूरी स्वतंत्रता के वातावरण में ये बड़े हुए हैं, जो उनके चरित्र से स्पष्ट है। युवावस्था में भी इनमें जरा भी स्वाभिमान नहीं है।

एक काले बालों वाले जोशीले व्यक्ति की आँखें हैं, जो शीघ्र ही किसी चीज को परख लेती हैं।

दूसरा व्यक्ति जिसके हाथ में नोटबुक है, वह चारों ओर देखता है, उन्हें नोट करता है, फिर उसकी तुलना करता है।

तीसरा व्यक्ति जिसके हाथ उसकी कोट की जेब में हैं, उसके बारे में ज्यादा स्पष्ट नहीं है, वह सीधा चलता है; अपना अभिमान बनाए रखता है। अपनी अधीरता तथा यौवन को छुपाने के लिए अपने होंठों को काटता रहता है।

चौथा, तीसरे को बिना माँगे ही स्पष्टीकरण देता रहता है। अन्य सभी की तुलना में कद में छोटा, उसके साथ मोहक रूप में चलता, उसकी तर्जनी उँगली हमेशा हवा में लहराती; मानो हर चीज की आँखों देखी कमेंट्री कर रहा है।

पाँचवाँ, जो कद में शायद वरिष्ठ है, उसे किसी के साथ की जरूरत नहीं, कभी सबसे आगे, तो कभी सबसे पीछे, समूह के अन्य व्यक्ति ही उसे अपने साथ लेकर चलना चाहते हैं; वह कमजोर है; जिम्मेदारियों से उसकी आँखें धँस गई हैं। सोचने की मुद्रा में वह कभी-कभी अपने हाथों से माथे को दबाता है।

छठा और सातवाँ थोड़ा आगे झुककर चलता है। वे पास-पास खड़े होकर किसी गोपनीय विषय पर बात कर रहे हैं। यदि ये कोयले की हमारी खानें नहीं होतीं और गैलरी में हमारा कार्यालय नहीं होता तो निस्संदेह कोई भी इन दुबले-पतले, बिना दाढ़ी-मूँछ के ऊँची नाक के सज्जनों को पादरी समझता। उनमें से एक तो अधिकांशत: अपने आप पर ही बिल्ली जैसी घर्राहट भरी आवाज में हँसता है। दूसरा भी जो कि मुसकराता है, बातचीत में सबसे आगे है। अपनी स्थिति से ये दोनों कितने संतुष्ट हैं; वास्तव में हमारे खाने के लिए उन लोगों ने कितने काम किए होंगे कि इतनी युवावस्था में ही वे अपने प्रमुख के साथ यहाँ सर्वे करने आए हैं तथा अपने काम या कम-से-कम ऐसे काम, जिनकी शीघ्र कोई जरूरत नहीं है, उनके लिए नि:संकोच भाव से स्वयं को समर्पित कर देना चाहते हैं। या हो सकता है कि अपनी सारी बेफिक्री या मौज के बावजूद भी वे इस बात से भली-भाँति अवगत हैं कि क्या चीज जरूरी है? कोई भी शायद ही इन सज्जनों के बारे में कोई निर्णायक फैसला कर सकता है।

दूसरी ओर इस बारे में कोई संदेह नहीं है कि आठवाँ आदमी, उदाहरण के लिए, अतुलनीय रूप से उन दो व्यक्तियों में, बल्कि उन सभी में काम के प्रति अधिक समर्पित है। वह हर चीज को स्पर्श करता है तथा अपने छोटे हथौड़े से हिलाकर देखता है, जो वह बार-बार अपनी जेब से निकालता है और वापस अपनी जेब में रखता है। अपनी शानदार पोशाक के बावजूद कभी-कभी वह घुटने के बल जमीन पर कीचड़ में बैठकर जमीन को ठोकक र देखता है, कभी चलते-चलते दीवार को ठोककर देखता है या अपने सिर के ऊपर छत को। एक बार वह पूरी तरह अपने हाथ-पैर फैलाकर जमीन पर स्थिर लेट गया तो हम यह सोचने लगे कि इसे कुछ परेशानी है। फिर अचानक अपने छरहरे शरीर के साथ वह अपने पैरों पर उछल पड़ा। वह एक अन्य जाँच-पड़ताल कर रहा था। हम यह कल्पना करते हैं कि हमें अपने खान तथा इसकी चट्टान संरचना का ज्ञान है, लेकिन इस अभियंता का आचरण हमारी समझ से बाहर है।

नौवाँ व्यक्ति एक प्रकार की छोटी पहिएदार गाड़ी में सर्वे का सामान लेकर उसके सामने आता है। अत्यधिक महँगे से उपकरण सबसे मुलायम काटनवुल में लपेटे हुए थे। कार्यालय के चपरासी को वास्तव में इस छोटी गाड़ी को चलाना चाहिए, लेकिन उस पर विश्वास नहीं है। एक अभियंता को यह करना पड़ रहा था और वह अत्यंत सद्भावना से यह कर रहा था। शायद वह सबसे छोटा है और उसे इन उपकरणों के बारे में जानकारी नहीं है, लेकिन वह पूरे समय उपकरणों पर नजर रखता है, जिससे कभी-कभी उसकी गाड़ी को दीवार से टकराने का खतरा भी सहन करना पड़ता है।

लेकिन साथ ही एक दूसरा अभियंता भी चल रहा है, जो ऐसा होने से रोकता है। स्पष्टत: उसे इन उपकरणों का पूरा ज्ञान है और वह ही वास्तव में उनके रख-रखाव के लिए जिम्मेदार है। समय-समय पर वह गाड़ी को बिना रोके ही किसी उपकरण के एक पुरजे को उठाता है, देखता है, उसका पेंच खोलता और बंद करता है, उसे हिलाता-डुलाता है, ठोकता-बजाता है, इसे अपने कानों के पास लाक र सुनता है और जब इस गाड़ी को ढकेलता व्यक्ति चुपचाप खड़ा हो जाता है, वह सावधानीपूर्वक उस छोटी वस्तु को उसी पैकिंग में रख देता है। यह अभियंता थोड़ा दबंग है, लेकिन सिर्फ इन उपकरणों की सेवाओं के मामले में ही। इस छोटी गाड़ी के दस कदम आगे ही उसके नि:शब्द इशारे से हमें उस गाड़ी के लिए जगह बनानी पड़ती है, जहाँ जगह बिल्कुल भी नहीं होती।

इन दो सज्जनों के पीछे ऑफिस का चपरासी खड़ा है, जिसके पास करने को कोई काम नहीं है। सज्जन, जैसा कि व्यापक ज्ञान के ऐसे व्यक्तियों से अपेक्षित होता है, इन्होंने जो भी घमंड कभी रहा होगा उसे छोड़ दिया है, लेकिन लगता है कि इस चपरासी ने उनके व्यक्त घमंड को ले लिया है और उसे सँभाला हुआ है। एक साथ पीछे किए तथा दूसरे हाथ से अपनी वरदी के बटन को स्पर्श करते हुए वह दाएँ-बाएँ ऐसे झुकता है मानो हम उसे सलामी दे रहे हों और वह उन्हें स्वीकार कर रहा है या बल्कि मानो वह यह समझ रहा है कि हमने उसे सलामी दी थी और वह इतना ऊँचा एवं तगड़ा है कि हमारी सलामी को वह देख नहीं पाया।

निश्चित रूप से हम उसे सलामी नहीं देते, फिर भी उसे देखकर कोई भी यह विश्वास कर लेगा कि खान के मुख्य कार्यालय का चपरासी होना एक बड़ी बात है। उसकीपीठ पीछे तो हम लोट-लोटकर हँसे, लेकिन बहुत जोर की आवाज पर भी मुड़कर नहीं देखता, वह हमेशा हमारे लिए एक अजीब पहेली ही रहा।

आज हम बहुत ज्यादा काम नहीं करेंगे; यह व्यवधान अत्यंत रुचिकर था। इस प्रकार के भ्रमण में हमारे काम करने के सारे विचारों को भी लेकर चला जाता है। ट्रायल गैलरी के अँधेरों में इन सज्जनों को गुम होते देखना अत्यंत रोचक है। इसके अलावा हमारी पारी भी जल्द खत्म होनेवाली है। हम उन्हें वापिस आते हुए देखने के लिए तब वहाँ नहीं होंगे।

❑

ग्यारह बेटे

मेरे ग्यारह लड़के हैं। पहला लड़का बाहर से साधारण दिखता है, लेकिन गंभीर एवं चालाक है। फिर भी मैं उसे प्यार करता हूँ जैसा कि मैं अपने सभी बच्चो से करता हूँ। मैं उसे श्रेष्ठ नहीं मानता हूँ। मुझे उसकी मानसिक प्रक्रिया बिल्कुल साधारण लगती है। वह न तो दाएँ, न ही बाएँ और न ही सुदूर देखता है। वह हर समय घूमता ही रहता है, बल्कि अपनी छोटी सी विचार परिधि में ही चक्कर काटता रहता है।

दूसरा लड़का आकर्षक, छरहरा और गठीला है। लोग साँस रोककर उसे तलवारबाजी करते देखते हैं। वह चालाक भी है और दुनिया का अनुभव भी उसे है। उसे व्यापक अनुभव है, इसलिए हमारा देश उसे देश में रहनेवालों की तुलना में अधिक रहस्य सौंपता है। फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि यह लाभ उसे न सिर्फ और न ही आवश्यक रूप से भ्रमण की वजह से है बल्कियह उसके अतुलनीय स्वभाव की वजह से है, जो उदाहरणार्थ सभी मानते हैं, जिसने कभी भी उसकी नकल करने की कोशिश की। हमें कहना चाहिए कि जब वह पानी में ऊँचा गोता लगाता है, कई बार कलाबाजियाँ खाते हुए, तब भी वह जबरदस्त आत्मनियंत्रण में होता है। गोताखोरी के तख्ते के अंतिम छोर पर खिलाड़ी उसका पीछा करने का अपना साहस और अपनी इच्छा को बनाए रखता है, लेकिन उस क्षण में भी वह हवा में उछलने की बजाए अचानक बैठ जाता है तथा क्षमा के तौर पर अपना हाथ ऊपर उठाता है। इसके बावजूद भी (हमें ऐसा बेटा होने पर स्वयं को धन्य समझना चाहिए) मेरा उससे लगाव चिंतामुक्त नहीं है। इसकी बाईं आँख दाहिनी आँख से थोड़ी छोटी है तथा कुछ ज्यादा ही फड़कती है। एक छोटी सी कमी, जो उसके चेहरे को अधिक निर्भीकता प्रदान करती है, अन्यथा कोई भी उसकी आत्म-परिपूर्णता को देखते हुए शायद ही उसकी छोटी आँख की कमी और उसकी फड़फड़ाहट की ओर ध्यान देगा। फिर भी मैं उसका बाप होने के नाते यह करता हूँ। निश्चित रूप से मुझे उसकी शारीरिक कमी से चिंता नहीं होती, बल्किउसके स्वभाव की थोड़ी अनियमितता, अपनी पूर्ण क्षमता के विकास की असमर्थता जो सिर्फ मैं ही देखता हूँ, आदि परेशान करती है। दूसरी ओर सिर्फ यही उसे मेरा सच्चा पुत्र बनाती है, क्योंकि यह कमी तो मेरे पूरे परिवार में है, लेकिन उसमें यह थोड़ा ज्यादा स्पष्ट है।

तीसरा बेटा भी आकर्षक है, लेकिन उस तरह नहीं जैसे मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ। उसका चेहरा गायक जैसा सुंदर है—कटावदार होंठ, स्वप्निल आँखें, सिर ऐसा मानो पगड़ी लगाने से और आकर्षक बन जाए, गहरी धनुषाकार छाती, तेजी से ऊपर उठने और गिरनेवाले हाथ, नजाकत से बढ़ती टाँगें; क्योंकि वे वजन नहीं सँभाल सकतीं। इसके अलावा उसकी आवाज का टोन भी पूर्ण नहीं था। एक क्षण के लिए वह सुनता है, विशेषज्ञ उसके कान खींचता है, लेकिन लगभग तुरंत ही वह शांत हो जाता है। यद्यपि सामान्य रूप से सभी चीजें मुझे अपने इस बेटे को सभी के संपर्क में लाने के लिए लुभाती थीं, लेकिन मैं उसे पृष्ठभूमि में ही रखना पसंद करता हूँ। वह जिद्दी नहीं है, इसलिए नहीं कि वह अपनी कमियों से परिचित है, बल्कि वह निश्छल है। इसके अलावा वह सुखद अनुभव नहीं करता है, मानो उसने हमारे परिवार को तो स्वीकार कर लिया, लेकिन उसे लगता है कि किसी और परिवार से उसका संबंध है, जो उसने हमेशा के लिए खो दिया है। कभी-कभी वह उदास हो जाता है और फिर उसे किसी चीज से भी खुशी नहींमिलती।

मेरा चौथा बेटा सभी बच्चों में शायद सबसे ज्यादा घुलने-मिलने वाला है। अपनी उम्र के बिल्कुल अनुरूप सभी के लिए सहज और इसलिए सभी उसे पसंद करते हैं। शायद इस व्यापक प्रशंसा के कारण ही उसका स्वभाव लचीला, चाल स्वच्छंद एवं निर्णय निष्पक्ष होते हैं। उसकी कई टिप्पणियाँ तो बार-बार उद्धत करने योग्य होती हैं,

लेकिन उनमें अधिकांश परेशान करने वाली ही होती हैं। वह इस तरह का व्यक्ति है, जो जमीन से तो शानदार उड़ान भरता है, गौरैया की तरह हवा में रास्ता बनाता है और फिर निस्सहाय निर्जन भूमि पर वापस आ जाता है। इन्हीं चीजों की वजह से मुझे गुस्सा आता है।

मेरा पाँचवाँ बेटा दयालु एवं सभ्य है। जितना काम करता है उतनी बातें नहीं करता है। इतना साधारण हुआ करता है कि कोई भी उसकी उपस्थिति में अकेला महसूस करता है। इसके बावजूद भी उसने कम ही प्रसिद्धि प्राप्त की है। यदि मेरे से पूछा जाए कि यह कैसे हुआ तो मैं शायद ही यह बता पाऊँगा। शायद ही इस संसार की अफरा-तफरी में अपना रास्ता आसान बनाती है और वह निश्चित रूप से निश्छल है। हर किसी के साथ मित्रवत् है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मुझे उसकी प्रशंसा सुनकर अच्छा नहीं लगता है। फिर प्रशंसा इतनी सस्ती लगने लगती है कि स्पष्टत: मेरे बेटे जैसे अनेक प्रशंसनीय लोगों के लिए की जानी चाहिए।

मेरा छठा बेटा पहली नजर में सभी बेटों में सबसे ज्यादा विचारवान लगता है। उसका सिर हमेशा झुका रहता है फिर भी वह बहुत बड़ा बातूनी है। इसलिए उसे समझना आसान नहीं है। यदि वह सुस्त है तो वह गहरी उदासी में है, यदि वह सक्रिय है तो वह अत्यधिक बातें करता है। फिर भी हम उसे अपने विचारों में मग्न रहने देते हैं। दिन के उजियारे में वह अपने विचारों से इस तरह लड़ता रहता है मानो सपने में हो। वह कभी बीमार नहीं पड़ता, बल्किउसका स्वास्थ्य अच्छा है; कभी-कभी वह लड़खड़ाता है, विशेषकर संध्या बेला में, लेकिन उसे किसी सहायता की जरूरत नहीं होती और न ही वह कभी गिरता है। शायद उसके शारीरिक विकास के कारण ही ऐसा है कि वह अपनी उम्र से बहुत लंबा है, सामान्य रूप से तो यह भद्दा लगता है, लेकिन व्यापक रूप से उसमें विशिष्ट सौंदर्य है, विशेषकर उसके हाथ और पैर। उसका माथा भी भद्दा है, शायद हड्डियों की संरचना और त्वचा का विकास भी इस कारण प्रभावित हुआ।

सातवें बेटे की अन्य बेटों की तुलना में मेरे से अधिक निकटता है। लोगों को उसकी प्रशंसा करना नहीं आता। यह उसकी विशिष्ट प्रकार की बुद्धि को नहीं समझते हैं। मैं उसे ज्यादा महत्त्व नहीं देता। मैं जानता हूँ कि वह ज्यादा महत्त्व नहीं रखता। यदि लोगों में उसकी प्रशंसा न करने के सिवाय कोई भी खराबी है तो यह निर्दोष है। लेकिन परिवार समूह में मुझे अपने बेटे के सिवाय होने पर मुझे ध्यान नहीं देना चाहिए। वह कुछ हद तक परंपरा के लिए सम्मान पैदा करता है तो कुछ बेचैनी भी और उन दोनों को जोड़ता भी है, कम-से-कम मुझे तो ऐसा लगता है। यह सच है कि अन्य की तुलना में उसे कम ही पता है कि उस उपलब्धि का क्या करूँ। वह कभी भी किसी काम को शुरू नहीं कर सकता है। फिर भी उसकी मन:स्थिति उत्साहवर्धक है तथा आशाओं से पूर्ण भी। मैं कामना करता हूँ कि उसके बच्चे तथा बच्चे के बच्चे भी हों। दुर्भाग्यवश मुझे नहीं लगता कि वह मेरी मनोकामना पूरी करेगा। आत्म-संतुष्टि के साथ मैं यह समझता हूँ कि जितना मैं निंदा करता हूँ तथा जो विश्व मान्यता के विरुद्ध है, वह हर जगह अकेला ही जाता है, लड़कियों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है फिर भी उसके हास्य में कोई कमी नहीं है।

मेरा आठवाँ बच्चा शोकग्रस्त है। मुझे नहीं पता ऐसा क्यों है? वह मुझसे दूरी रखता है फिर भी पितृत्व की गहरी भावना मुझे उससे बाँधे रखती है। समय के साथ इस तकलीफ में कमी तो आई है, वरना पहले तो मैं उसके बारे में सोचते हुए भी काँपने लगता था। वह अपने तरीके से चलता है। उसने मेरे साथ हर प्रकार का संपर्क काट रखा है। निश्चित रूप से अपने कठोर निर्णय के कारण। जब वह बच्चा था तो सिर्फ उसकी टाँगें ही कमजोर थीं, जो अब शायद अपने आप ही ठीक हो गई हैं। वह जो काम करता है, उसमें सफल होता है। पहले तो मैं उससे पूछता था कि सब कुछ कैसा चल रहा है, उसने पिता से ही स्वयं को क्यों अलग कर लिया है और जीवन में उसका मूल उद्देश्य क्या है और अब तो वह इतना दूर है तथा इतना समय बीत गया है कि जो जैसा है वैसा ही रहे तो ठीक है।

मैंने सुना है कि वह ही मेरा एकमात्र बेटा है, जिसकी पूरी दाढ़ी है। निश्चय ही उसके जैसे छोटे कद के व्यक्ति पर यह बिल्कुल नहीं जँचता है।

मेरा नौवाँ बेटा आकर्षक है और आँखें जैसा कि महिलाएँ मानती हैं, पिघला देने वाली हैं। इतनी आकर्षक कि कभी-कभी वह मुझे भी मोहित कर लेता, यद्यपि कि मैं जानता कि इस सांसारिक आकर्षक के लिए एक गीला स्पंच ही काफी है। लेकिन उसके बाद उत्सुकता भरी बात यह है कि वह कभी भी मोहित करने की कोशिश नहीं करता है। अपनी जिंदगी सोफे पर पड़े तथा छत को ताकते हुए बिता कर वह संतुष्ट रहता है या आँखें बंद करके पड़े रहने में संतुष्ट रहता है। बातें करना उसे पसंद है और वह अच्छी तरह बातें करता है; लेकिन बातें वह सीमित दायरे में करता है। एक बार जब वह उनसे बाहर निकल जाता है, जो उसके लिए मुश्किल नहीं है, क्योंकि वे अत्यंत सीमित हैं; वह कहता है कि वह बिल्कुल खाली है। कोई उसे रुक जाने का संकेत करता है, यदि किसी को आशा है कि ये उम्मीदी आँखें संकेतों के प्रति सचेत हैं।

मेरे दसवें बेटे का चरित्र अनिष्ठापूर्ण समझा जाता है, मैं पूरी तरह से न तो इसकी पुष्टि करता हूँ, न ही इससे इनकार करता हूँ। निश्चय ही जब कोई भी उसे अपनी दुगुनी उम्र वाले की तरह नव्यता से चलते देखेगा, बटन लगा फ्रॉक कोट पहने, सिर पर पुरानी, लेकिन साफ-सुथरी टोपी पहने, भावहीन चेहरों, उभरी ठुड्डी, अपने पीछे रोशनी को छुपाते उभरे पलक; प्राय: होंठों पर रखी दो उँगलियाँ, कोई भी ये देखकर सोचने को विवश होगा कि वह कितना बड़ा धूर्त है। फिर उसे सिर्फ बोलते हुए देखिए! कितनी समझ और विचार से पूर्ण, जीवंतता के साथ विश्व के बिल्कुल अनुरूप; ऐसी अनुरूपता जो कि स्वाभाविक, आश्चर्यजनक तथा आनंददायक है; आवश्यकता की अनुरूपता जिससे गला गर्व से ऊँचा हो जाता है और शरीर गर्व से भर जाता है। कुछ लोगों को, जो स्वयं को चालाक समझते थे तथा उसके बाहरी हाव-भाव के कारण उससे घृणा करते थे, वे भी अब उसकी बातचीत से प्रभावित होकर उसके प्रति गहरा लगाव महसूस करते हैं। दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो उसके हाव-भाव से तो अप्रभावित हैं लेकिन वे उसकी बातचीत को धूर्ततापूर्ण मानते हैं। मैं पिता होने के नाते उसके लिए कोई फैसला नहीं करूँगा, लेकिन इतना जरूर स्वीकार करता हूँ कि पहली श्रेणी के आलोचकों की तुलना में दूसरी श्रेणी के आलोचकों को अधिक गंभीरता से लेने की जरूरत है।

मेरा ग्यारहवाँ बेटा बड़ा ही नाजुक है, शायद सब बेटों में सबसे कमजोर, लेकिन भ्रामक, क्योंकि कभी-कभी तो वह शक्तिशाली और दृढ़ हो जाता है, फिर भी अंतर्निहित कमजोरी हमेशा ही होती है। लेकिन यह कोई लज्जित करनेवाली कमजोरी नहीं है, बस यह एक कमजोरी भर है, जो कभी घटती-बढ़ती रहती है। इस प्रकार के लक्षण ही मेरे बेटे की विशेषता हैं। निश्चय ही, ये ऐसे लक्षण नहीं हैं जिससे किसी पिता को खुशी होगी; बल्कि इससे तो किसी परिवार पर नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है। कभी-कभी तो वह मेरी ओर ऐसे देखता है मानो कुछ कहेगा, ''पिताजी, आपको मैं अपने साथ ले जाऊँगा।'' तब मैं सोचता हूँ, ''तुम ही वह अंतिम व्यक्ति हो जिस पर मैं विश्वास रखता हूँ।'' लेकिन फिर उसका चेहरा यह कहता प्रतीत होता है, ''ठीक है फिर तो मुझे कम-से-कम अंतिम ही रहने दीजिए।''

ये मेरे ग्यारह बेटे हैं।

❑

स्वप्न

जोसेफ के. सपना देख रहा था। एक सुंदर दिन था और के. को लगा कि उसे टहलने जाना चाहिए। अभी वह कुछ एक कदम ही आगे गया होगा कि वह कब्रिस्तान में पहुँच गया। रास्ते, टेढ़े-मेढ़े, घुमावदार तथा अव्यावहारिक थे, लेकिन वह उनमें से एक रास्ते पर मानो बहती धारा की तरह फिसलता जा रहा हो, लेकिन पूरे संतुलन में। बहुत दूर उसे तुरंत का खुदा हुआ एक कब्र दिखाई पड़ा, जिसके बगल में वह रुकना चाहता था। उस कब्र को देखकर वह लगभग इतना मोहित हो गया कि उसे लगा कि वह वहाँ जल्दी नहीं पहुँच सका। लेकिन कभी-कभी उसे लगता कि वह उसकी नजरों से ओझल हो रहा था, क्योंकि उसकी नजरों के सामने बैनर लहरा रहे थे, जो बड़ी तेजी से एक-दूसरे से टकरा रहे थे। बैनर ले जानेवाला तो दिखाई नहीं पड़ रहा था लेकिन ऐसा लग रहा था कि कोई उल्लासपूर्ण समारोह चल रहा था।

जब वह बहुत दूर से देख रहा था तभी देखा कि कब्र अचानक उसके रास्ते में बहुत पास आ गया, बल्किवह उसके लगभग पीछे छूटता जा रहा था। वह तेजी से घास पर उछला। लेकिन चूँकि रास्ता तेजी से उसके बढ़ते कदमों के नीचे से निकल रहा था तो वह लड़खड़ाया और कब्र के सामने अपने घुटनों के बल गिर पड़ा। कब्र के पीछे दो लोग खड़े थे, जिनके हाथों में कब्र पर लगाया जानेवाला एक पत्थर था। अभी के. वहाँ पहुँचा भी नहीं था कि उन्होंने उस पत्थर को जमीन पर फेंक दिया और वह उस जगह ऐसे खड़ा हो गया मानो उसे वहाँ गाड़ा गया हो। तभी अचानक झाड़ियों के पीछे से एक तीसरा आदमी निकला जिसे के. ने तुरंत पहचान लिया। वह एक कलाकार था। वह पायजामा और कमीज पहने हुए था और उसकी कमीज के बटन जैसे-तैसे लगे हुए थे। उसके सिर पर मखमली टोपी थी। उसके हाथ में एक साधारण सी पेंसिल थी, जिससे वह हवा में आकृतियाँ बना रहा था। जैसे ही वह वहाँ पहुँचा, इसी पेंसिल से उसने कब्र पर लगनेवाले पत्थर के आखिरी छोर पर खुद को संबोधित किया। पत्थर बहुत ऊँचा था, उसे झुकना नहीं पड़ा, यद्यपि उसे आगे झुकना पड़ा, क्योंकि कब्र की जिस मिट्टी के ढेर पर वह खड़ा था वह उस पत्थर और उसके बीच आ गई थी। इसलिए अँगूठे के सहारे वह खड़ा हुआ तथा पत्थर की समतल सतह के सहारे उसने स्वयं का संतुलन बनाया। आश्चर्यजनक कौशल के साथ ही उसने अपनी साधारण पेंसिल से सुनहरे अक्षर लिखे। उसने लिखा, ''यहाँ पड़ा है।'' प्रत्येक अक्षर सुंदर एवं आकर्षक, शुद्ध सोने जैसे अत्यंत गहराई से काढ़े हुए थे। जब उसने ये दो शब्द गढ़े तो के. की ओर अपने काँधों से देखा, जो यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह उत्कीर्ण कैसे करेगा। उसने उस व्यक्ति की ओर देखा भी नहीं, वह तो बस पत्थर की ओर ही देख रहा था। वह व्यक्ति फिर अपने काम में लग गया और लिखने लगा, लेकिन बहुत देर वह ऐसा नहीं कर सका। उसे किसी चीज से व्यवधान आ रही थी। उसने एक बार फिर पेंसिल को डुबोया और के. की ओर मुड़ा। इस बार के. ने उसकी ओर मुड़कर देखा और पाया कि वह बहुत ही लज्जित था फिर भी वह स्वयं को समझने में असमर्थ था। उसकी सारी लज्जा गायब थी। इससे के. को भी शरमिंदगी हुई। उनके बीच असहाय नजरों का आदान-प्रदान हुआ। उनके बीच जबरदस्त गलतफहमी थी जो कभी भी दूर नहीं की जा सकती थी। कब्रिस्तान के गिरजाघर में असमय ही घंटी बज गई, लेकिन कलाकार ने अपना हाथ उठाकर कुछ संकेत किया और घंटी रुक गई। थोड़ी ही देर में यह फिर बजने लगी। लेकिन इस बार बहुत ही हल्की आवाज में तथा बिना किसी निरंतरता के , फिर एक बार रुक गई, मानो यह अपने टोन की जाँच खुद ही कर रही हो। के. कलाकार की मन: स्थिति को देखकर परेशान हो गया। वह अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढककर रोने लगा तथा बहुत देर तक सिसकता रहा। कलाकार के. के शांत होने तक प्रतीक्षा करता रहा फिर सोचा, कि यहाँ तो किसी प्रकार की सहायता नहीं है,

इसलिए शब्दों को उत्कीर्ण करते रहना चाहिए। जैसे ही उसने पहला झटका मारा उससे के. को बड़ी राहत मिली लेकिन स्पष्टत: क लाकार ने बड़ी अनिच्छा से उसे हासिल किया। अब काम भी उत्कृ ष्टता से पूरा नहीं हुआ। उससे भी बढ़कर यह लग रहा था कि वहाँ सोने की पत्ती नहीं थी। झटका भी इधर-उधर पड़ रहा था जिससे कि एक बड़ा अक्षर बन गया। यह 'J' अक्षर बन गया था; यह लगभग पूरा हो गया था तभी कभी कलाकार ने गुस्से में अपने एक पैर से कब्र की मिट्टी के उस ढेर पर इतना जोर से मारा कि मिट्टी हवा में फै ल गई। अंत में के. को इसकी समझ आई। तब तक इतनी देर हो गई थी कि क्षमा याचना भी नहीं किया जा सकता था। उसने अपनी सभी उँगलियों से मिट्टी को खोदा, जो इतनी हल्की थी कि उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। सब कुछ पहले से ही तैयार प्रतीत हो रहा था। मिट्टी की एक पतली परत सुरक्षा के दृष्टिकोण से बनाई गई थी। इसके ठीक नीचे एक बड़े छिद्र का मुँह था जिसके किनारे क्षैतिज थे। के. अपनी पीठ पर हलके दबाव के साथ उसमें धँस गया। जब वह अमेद्य गहराइयों में धँसता जा रहा था तो उसका सिर गरदन के साथ बाहर खिंचता जा रहा था। उसका अपना ही नाम अत्यंत नव्यता के साथ उस पत्थर पर उभर गया।

इस दृश्य से मोहित होकर उसकी आँख खुल गई।

❑

भ्रातृ हत्या

साक्ष्य से पता चलता है कि हत्या इस प्रकार की गई थी: हत्यारा शमार रात नौ बजे स्वच्छ चाँदनी रात में एक कोने में उस स्थान पर जाकर खड़ा हो गया, जहाँ उसका शिकार वेस गली में, जहाँ उसका ऑफि स था वहाँ से आना था। वह वहीं रहता भी था।

रात में कँपकँपा देनेवाली ठंड थी। फिर भी शमार एक पतला नीला सूट पहने हुआ था, जैकेट का बटन भी खुला था। फिर भी उसे ठंड नहीं लग रही थी। इसके अलावा वह लगातार चल ही रहा था। वह अपना हथियार जो आधा ब्लेड और आधा कि चन चाकू की तरह था, दृढ़ता से हाथ में नंगा पकड़े हुए था। उसने चाँद की रोशनी में चाकू को देखा। उसकी धार चमक रही थी, फिर भी वह शमार को काफी नहीं लगा। पेवमेंट की ईंट पर उसने उसे तब तक रगड़ा जब तक कि वह चमकने नहीं लगा। बाद में शायद वह पछताया। फिर वह एक टाँग पर खड़ा होकर आगे की ओर झुककर जूते के तल्ले के सहारे उसे सही करने की कोशिश की, जो कि वायलिन के चाप की तरह मुड़ गया था। वह ध्यान से चाकू के धार से निकलनेवाली आवाज तथा चौराहे की ओर से आनेवाली आवाज को सुन रहा था।

लेकिन पलास, जो वहाँ का नागरिक था और सब कुछ अपनी दूसरी मंजिल के घर से देख रहा था, यह सब कुछ होने दिया? मानव स्वभाव के अनसुलझे रहस्य! ड्रेसिंग गाउन पहने उसका कॉलर ऊपर किए, वह वहाँ खड़ा नीचे देख रहा था और अपना सिर हिला रहा था, गली के विपरीत पाँच घर आगे, नाइट गाउन के ऊपर रोवेंदार कोट पहने श्रीमती वेस अपने पति को देखने के लिए झाँकी, जो आज रात अभी तक वहाँ रुका था।

अंतत: वेसे के ऑफिस के दरवाजे पर घंटी बज गई, इतनी जोर से कि प्राय: दरवाजे की घंटी इतनी ऊँची नहीं होती है। प्राय: पूरे शहर में गूँज गई। वेस, परिश्रमी रात्रिकर्मी, अचानक अंदर से निकली। गली के अँधेरे में अभी भी अदृश्य, दरवाजे की घंटी से गुंजायमान, तभी पेवमेंट पर उसके खामोश कदमों की आवाज आई।

पलास बहुत आगे झुक गया, उसमें कुछ भी खोने का साहस नहीं था। श्रीमती वेसे ने घंटी की आवाज से पूर्णत: आश्वस्त होने के बाद तेजी के साथ अपनी खिड़की बंद कर दी। शमार घुटने के सहारे झुका। चूँकि उसके शरीर का कोई भी भाग नंगा नहीं था, उसने पेवमेंट के सहारे अपना चेहरा और हाथ दबाए। वहाँ हर चीज ठंड के कारण जमी हुई लग रही थी, लेकिन शमा अंगारे की तरह चमकता प्रतीत हो रहा था।

दो गलियों को विभाजित करने वाले कोने पर वेसे रुकी। उसके साथ उसे सहारा देनेवाली छड़ी मात्र थी। अचानक एक सनक सुनी। उसे लगा मानो काली रात ने उसे आमंत्रित किया है अपने गीले, नीले और सुनहरे रंगों को देखने। अनजाने में ही वह उस ओर ताकने लगा, अनजाने में ही उसने अपनी टोपी खोली और अपने बालों को सहलाने लगा। वहाँ उसे अपने आनेवाले समय के बारे में कुछ भी पता नहीं चला। सब कुछ अपने अर्थहीन रहस्यमय स्थिति में थी। अपने आप में यह बड़ा ही तर्कसंगत था कि वेसे को चलना चाहिए, लेकिन वह तो शमार की चाकू के ऊपर चला। ''वेसे!'' अपने पैर की उँगलियों के सिरे के सहारे, अपनी बाँहें फैलाए शमार चिल्लाया। चाकू ठीक नीचे झुक गया, ''वैसे, अब कभी भी तुम जूलिया से नहीं मिल पाओगे।'' शमार ने उसके गले के दाएँ ओर बाएँ ओर तथा पेट में चाकू घोंपा। वाटर रैट खुल गया और उससे ऐसी आवाजें आईं जैसी कि वेसे के मुँह से निकली थीं।

''हो गया,'' शमार ने कहा, और तेजी से चाकू सीधा किया, अब निकटतम घर के सामने अत्यधिक खून के धब्बे थे। ''हत्या करने का आनंद। किसी का खून बहाने से मिली खुशी और राहत! वेसे, तुम रात के बूढ़े पक्षी, दोस्त,

शराब के पुराने साथी, इस गली के नीचे, मिट्टी में तुम्हारा खून बह रहा है। तुम सिर्फ खून की एक थैली मात्र ही क्यों नहीं थे, ताकि मैं शीघ्र ही तुम्हारा अस्तित्व खत्म कर देता। हम जो कुछ भी चाहते हैं वह सब कुछ सही नहीं होता है, सभी सपने जो खिलते हैं उनके फल नहीं आते। तुम्हारा मृत शरीर यहाँ पड़ा रहेगा जो पहले ही किसी ठोकर के प्रति उदासीन है। उन मूर्खतापूर्ण सवालों का क्या फायदा जो तुम पूछ रहे हो?''

पलास, गुस्से से भरा अपने दरवाजे पर खड़ा था जैसे ही दरवाजा खुला। ''शमार!'' शमार! मैंने सब कुछ देखा, कुछ भी मेरी नजरों से ओझल नहीं था। पलास और शमार ने गहरी नजरों से एक-दूसरे को देखा। इस गहरी जाँच के नतीजे से पलास संतुष्ट था, लेकिन शमार किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाया। श्रीमती वेसे लोगों की विशाल भीड़ के साथ वहाँ आई। इस घटना आघात से उनका चेहरा बूढ़ा दिखाई पड़ रहा था। उनका रोवेंदार कोट खुल गया और वेसे के शरीर पर गिर पड़ी। नाइट गाउन में लिपटा यह शरीर वेसे के लिए था। जोड़े के ऊपर मखमली घास की तरह फैला रोवेंदार कोट उस भीड़ का था।

अपनी अंतिम घुटन से बड़ी मुश्किल से लड़ते हुए शमार ने पुलिसवाले के कंधे में अपना मुँह रगड़ा, जो दृढ़ कदमों के साथ उसे ले गए।

❑

आत्मविश्वासी धोखेबाज की बेनकाबी

अंत में रात दस बजे उस सुंदर घर के दरवाजे पर पहुँच गया, जहाँ मुझे शाम बिताने के लिए आमंत्रित किया गया था। मेरे बगल में खड़ा व्यक्ति, जिसे मैं शायद ही जानता हूँ, जबरदस्ती मुझे अपने साथ लेकर दो घंटे तक गलियों में चारों ओर घूमता रहा।

''ठीक हो!'' मैंने तालियाँ बजाकर यह दरशाने की कोशिश की कि मैं सचमुच में उससे विदा लेना चाहता था। पहले ही मैंने छुपे तरीके से उससे छुटकारा पाने की कोशिश की थी। अब मैं थक गया था।

''क्या तुम सीधे जा रहे हो?'' उसने पूछा। उसके मुँह से ऐसी आवाज आई मानो उसने तेजी से अपना मुँह बंद किया हो।

''हाँ!''

जब मैं उससे मिला तो मैंने बताया कि मुझे आमंत्रित किया गया है। लेकिन मैं तो उस घर में प्रवेश करना चाहता हूँ, जहाँ मुझे आमंत्रित किया गया है और मेरी वहाँ जाने की बड़ी इच्छा थी, न कि इस गली के मुहाने पर खड़े होकर अपने सामने खड़े व्यक्ति को देखना। और न ही उसके साथ खड़े रहने की कि मानो हम उस जगह पर खड़े रहने के लिए अभिशप्त हैं। और फिर हमारे चारों ओर के मकान भी हमारी खामोशी में साझेदार बन गए तथा चारों ओर का अँधेरा भी। अदृश्य राहगीरों के कदमों की आहट, जिसे समझना मुश्किल है, गली के दूसरे छोर पर लगातार बहती हवा, किसी बंद कमरे की खिड़की के पीछे बजता ग्रामोफोन-मानो वे सभी इस खामोशी में साझेदार बन गए हो, मानो यह उनका अधिकार है, आनेवाले कल के लिए भी, और बीते कल के लिए भी।

मेरे साथी ने मुसकराते हुए यह सब अपने नाम ले लिया, और मेरे भी, दीवार के साथ ही अपना दाहिना हाथ फैलाया, उस पर अपनी ठुड्डी झुका दी, तथा अपनी आँखें बंद कर लीं।

फिर मैंने उसकी मुसकुराहट खत्म होने का इंतजार नहीं किया, क्योंकि अचानक मुझे शर्म का अनुभव हुआ, बल्कि उसकी मुसकराहट से मुझे यह जानना चाहिए कि यह व्यक्ति आत्मविश्वास के साथ धोखा देता है, और कुछ नहीं। और फिर मैं तो महीनों से इस शहर में हूँ और मैंने सोचा कि मुझे इस धोखेबाज के बारे में सब कुछ मालूम है, वे किस प्रकार रात में खुले हाथों से सराय के रखवालों की तरह हम से मिलने आते हैं, वे किस प्रकार इस विज्ञापन स्तंभ का चक्कर लगाते हैं जिसकी बगल में हम खड़े थे, इसके चारों ओर लुकाछुपी का खेल खेलते और कम-से-कम एक आँख से हमारी जासूसी करते, किस प्रकार वे गली के पेवमेंट की रेलिंग पर अचानक प्रकट होते, जबकि हम हिचकिचाते ही रह जाते हैं वहाँ जाने में! मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था। इस शहर के सराय में वे मेरे पहले परिचित थे। उन्हें देखकर ही मुझे सबसे पहले निष्ठुर कठोरता के संकेत मिले जिससे कि अब मैं भली-भाँति परिचित हूँ। इस धरती पर हर जगह, यहाँ तक कि अब मैंने स्वयं को स्वतंत्र कर लिया था, अब तब भी जब ज्यादा कुछ आशा करने को था नहीं। किस प्रकार उन्होंने इस आदत को छोड़ने, अपनी हार मानने से मना कर दिया, बल्कि बहुत दूर से भी हमारे ऊपर नजर लगाए हुए थे और उनके साधन वही थे। वे हमारे सामने ही सारी योजनाएँ बनाते, जहाँ तक नजर जाती देखने, जहाँ हमारा लक्ष्य होता वहाँ हमें जाने से रोकते हैं, बल्कि अपने निकट ही हमारे ठहरने की व्यवस्था करते हैं और अंतत: जब हम उनके व्यवहार का विरोध करते हैं तो वे सहज ही उसे स्वीकार करते हैं।

इस व्यक्ति की संगति में मुझे उस पुराने खेल को समझने में इतना लंबा समय लगा। इस अपमान से उबरने के लिए मैंने अपनी उँगलियों के सिरों को रगड़ा।

मेरा साथी अभी भी वहाँ वैसे ही झुका हुआ था और स्वयं को एक सफल धोखेबाज समझ रहा था तथा यह आत्म संतुष्टि उसके गालों पर स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी।

कंधे से पकड़ते हुए मैंने कहा, "पकड़ा गया!'' तब मैं दौड़ता हुआ सीढ़ियों पर गया तथा नौकर के चेहरे पर अरुचिपूर्ण भक्ति देखकर मैं खुश हो गया। मैंने एक के बाद एक सब पर नजर डाली, जबकि उन्होंने मेरा कोट उतारा और मेरे जूते साफ किए। राहत की गहरी साँस लेते हुए तथा अपने आपको पूरी तरह खींचते हुए मैंने ड्रांइग रूम में प्रवेश किया।

❑

ग्रामीण डॉक्टर

मैं बड़ी असमंजस की स्थिति में था। मुझे एक आवश्यक यात्रा पर जाना था; दस मील दूर एक गाँव में गंभीर रूप से बीमार एक मरीज मेरा इंतजार कर रहा था। घने बर्फानी तूफान ने उसके और मेरे बीच के विस्तृत स्थानों को भर रखा था। मेरे पास एक टमटम था, बड़े पहियोंवाला एक हल्का टमटम, ग्रामीण लड़कों के लिए यह एकदम उपयुक्त था। रोवें में लिपटा, हाथ में औजारों का थैला लिये, मैं आँगन में खड़ा यात्रा के लिए बिल्कुल तैयार था। लेकिन वहाँ कोई घोड़ा ही नहीं था, एक भी नहीं, जो उसमें जोता जाता। मेरा अपना घोड़ा इस बर्फीली सरदी की थकावट से रात में ही मर गया था। मेरी नौकरानी घोड़ा उधार लेने के लिए गाँव में घूम रही थी। मुझे मालूम था, यह निराश थी, फिर भी मैं वहाँ निराशा से खड़ा था और मेरे ऊपर बर्फ की परत मोटी ही होती जा रही थी, जिस कारण मेरे लिए चलना कठिनतर होता जा रहा था। दरवाजे पर लड़की प्रकट हुई, वह अकेली थी, उसने लालटेन लहराया। निस्संदेह, इस समय ऐसी यात्रा के लिए कौन अपना घोड़ा उधार देगा? एक बार फिर मैं आँगन में गुजरा। मुझे कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ा। भ्रमित परेशानी की स्थिति में मैंने वर्षों पुराने निर्जन बाड़े के दरवाजे पर लात मारी। यह खुल गया तथा कब्जे के सहारे इधर-उधर लहराने लगा। घोड़े की तरह की गंध बाहर आई। अंदर रस्सी के सहारे एक मद्धिम लालटेन लहरा रहा था। उस छोटी-सी जगह में अपने पुट्टे के सहारे दुबके हुए एक आदमी ने नीली खुली आँखोंवाला एक चेहरा दिखाया। ''क्या मैं नाथ हूँ?'' अपने चारों हाथ-पैर पर रेंगते हुए उसने पूछा। क्या जवाब दूँ, मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया, मैं बस झुककर यह देखने लगा कि इस बाड़े में और क्या है?, नौकरानी मेरे बगल में खड़ी थी। ''आपको कभी यह पता नहीं होता कि अपने ही घर में आपको क्या मिलनेवाला है,'' उसने कहा और हम दोनों ही हँस पड़े। ''देखो, यहाँ, भाई, देखो यहाँ, बहन!'' साइस ने कहा और शक्तिशाली पार्श्वोंवाले दो घोड़े, जिनकी टाँगें उनके शरीर से लगी हुई थीं, उनके सिर अच्छी आकृति में, ऊँट की तरह झुके थे, कूल्हे की ताकत के सहारे किसी तरह अपने शरीर को सिकोड़कर, दरवाजे के छिद्र से निकले, जो पूरी तरह भर गया था। शीघ्र ही वे खड़े हो गए; उनकी लंबी टाँगें एवं शरीर घने माप निकले। ''इसकी मदद करो,'' मैंने कहा, इच्छुक लड़की तेजी से जोतने में साइस की मदद करने के लिए दौड़ी। मुश्किल से वह अभी उसके बगल में पहुँची ही थी कि साइस ने झपटकर उसे पकड़ा और अपना चेहरा उसके चेहरे के सामने झटके से किया। वह चिल्लाई और मेरे पास भागी। उसके गाल पर दाँत की दो पंक्तियों के लाल निशान पड़ गए थे। गुस्से से मैं चिल्लाया, ''तुम हिंसक,'' ''क्या तुम्हें चाबुक की मार चाहिए?'' तभी उसी क्षण यह पता चला कि वह तो एक अजनबी है। मुझे यह नहीं मालूम था कि वह कहाँ से आया, और अपनी इच्छा से ही वह मेरी मदद कर रहा था जबकि सभी ने निराश किया था। मानो उसे मरे विचारों का पहले से ही आभास था और मेरी धमकी पर भी उसे बुरा नहीं लगा, लेकिन फिर भी स्वयं को घोड़ों के साथ व्यस्त रखा हुआ था, सिर्फ एक बार वह मेरी ओर पलटा। तभी उसने कहा, ''आ जाओ,'' और वास्तव में सब कुछ तैयार था। मैंने देखा कि एक जोड़ा आकर्षक घोड़ा, ऐसा कि जिस पर में पहले कभी नहीं बैठा था, तैयार था। मैं खुशी-खुशी उस पर सवार हो गया। ''मैं हाँकूँगा, आपको रास्ते का पता नहीं है,'' मैंने कहा। ''जरूर,'' उसने कहा, ''वैसे भी मैं तुम्हारे साथ नहीं आ रहा हूँ। मैं तो रोके के साथ रुकूँगा।'' ''नहीं,'' चिल्लाते हुए वह घर के अंदर भागी, यह जानते हुए भी कि उसका भाग्य अपरिहार्य है और उसे इसका पूर्वाभास भी था। मैंने दरवाजे की जंजीर की आवाज सुनी, जैसे ही उसने उसे लगाया, मैंने ताले के भीतर चाबी के घूमने की आवाज भी सुनी; इससे भी बढ़कर मैं यह देख पा रहा था कि किस प्रकार उसने प्रवेशद्वार की बत्ती बुझाई और आगे भागने के प्रयास में तथा स्वयं का पता न चलने देने के लिए सभी कमरों की बत्ती बंद कर

दी। ''तुम मेरे साथ आ रहे हो,'' मैंने साइस से कहा, ''या मैं नहीं जाऊँगा, जैसा कि मेरी यात्रा जरूरी है। मैं लड़की को तुम्हें सौंपकर इसके पैसे अदा करने का भी नहीं सोच रहा हूँ।'' ''दम लगाओ!'' उसने कहा, तथा अपनी ताली बजाई, टमटम तेजी से घूम गया, जैसे लकड़ी का बड़ा टुकड़ा पानी में घूम जाता है। मुझे अपने घर के सिर्फ दरवाजे के फटने की आवाज सुनाई पड़ी, क्योंकि साइस इसे धक्का मार रहा था। उसके बाद मैं तूफानी बहाव के कारण बहरा और अंधा हो गया, जिसने एक-के-बाद-एक मेरी सभी इंद्रियों को बेकाम कर दिया। लेकिन यह सिर्फ कुछ क्षण के लिए ही हुआ, मुझे ऐसा लगा कि मानो मेरे मरीज के फार्म का हाता ठीक मेरे आँगन के दरवाजे के सामने खुल गया हो, मैं पहले से ही वहाँ था, खामोशी के साथ घोड़े भी रुक गए थे, बर्फीला तूफान भी थम गया था; चारों ओर चाँदनी फैली हुई थी। मेरे मरीज के माता-पिता तेजी से घर से निकलकर आए, उसकी बहन भी उनके पीछे थी। मुझे टमटम से लगभग उठा लिया गया था। उनके भ्रमित उद्‌बोधन से कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। मरीजवाले कमरे में हवा लगभग न के बराबर थी; उपेक्षित चूल्हे से धुआँ निकल रहा था। मैं खिड़की को धक्का देकर खोलना चाहता था। लेकिन सबसे पहले तो मुझे अपने मरीज को देखना था। दुबला-पतला, बिना बुखार, जुकाम, गरमी के, खाली नजरों से, बिना कमीज के, वह पंखदार बिछावन से खुद जोर लगाकर उठा, अपनी बाँहों को मेरे गले में डाल दिया और मेरे कान में फुसफुसाया, ''डॉक्टर, मुझे मरने दो।'' मैंने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई, किसी ने भी यह बात नहीं सुनी थी। माता-पिता खामोशी से आगे की ओर झुके मेरे कुछ कहने का इंतजार कर रहे थे। बहन ने मेरे छोटे थैले को रखने के लिए वहाँ एक कुरसी रख दी थी। मैंने थैला खोला और अपने औजारों से ढूँढ़ना शुरू किया। लड़का अपने बिछावन पर से ही मुझे पकड़े हुए था तथा अपनी प्रार्थना याद दिलाना चाह रहा था। मैंने अपनी चिमटी उठाई, उसे मोमबत्ती के प्रकाश में देखा और उन्हें वापिस रख दिया। ''हाँ'' मैंने निंदात्मक ढंग से सोचा, ''उस तरह के मामलों में ईश्वर मददगार होते हैं, खोए हुए घोड़े को भेजते हैं, आवश्यक होने के कारण उसे दूसरे में जोड़ते हैं तथा सभी कुछ व्यवस्थित करने के लिए साइस भी भेज देते हैं।'' और अब मुझे एक बार फिर रोज की याद आ रही थी। मैं क्या कर सकता था, मैं कैसे उसे बचा सकता था, मैं किस प्रकार उस साइस के पास से उसे निकालकर दस मील दूर ला सकता था, वह भी घोड़ों के ऐसे दल के साथ, जिन्हें मैं नियंत्रित भी नहीं कर सकता। अब इन घोड़ों ने किसी तरह जीन भी ढीला कर लिया है, बाहर से ही ढकेलकर खिड़की खोल दी है, मुझे नहीं मालूम यह सब कैसे हुआ? प्रत्येक घोड़े ने अपना सिर खिड़की पर मारा है तथा परिवार के अचंभित शोर से अविचलित चुपचाप खड़े होकर मरीज को देख रहे हैं। मैंने सोचा, ''इससे तो अच्छा कि तुरंत वापस चला जाऊँ,'' मानो घोड़े मुझे वापिस जाने का आग्रह कर रहे हों। फिर भी मैंने मरीज की बहन को यह अनुमति दी कि वह मुझसे मेरा रोवेंदार कोट ले ले, क्योंकि उसने शायद यह कल्पना कर ली थी कि मैं उसकी गरमी से परेशान हो रहा हूँ। मेरे लिए एक गिलास रम तैयार किया गया। बूढ़े व्यक्ति ने मेरे कंधे पर थपकी मारी, एक परिचितपन का एहसास जो रम की इस पेशकश के अनुकूल था। मैंने अपना सिर हिलाया। बुजुर्ग व्यक्ति की सोचों की परिधि में घिरकर मैं बीमार महसूस करने लगा। यही एकमात्र कारण था, जिसकी वजह से मैंने रम पीने से मना कर दिया। माँ बिस्तर के बगल में खड़ी मुझे यह पीने के लिए फुसला रही थी। मैं मान गया और एक घोड़ा छत की ओर देखकर जोर से हिनहिनाया, मैंने अपना सिर लड़के के सीने पर रख दिया, जो मेरी भीगी दाढ़ी की वजह से काँपने लगा। जो मैं पहले से ही जानता था, मैंने उसकी पुष्टि कर दी। लड़का अब काफी बेहतर था। परिसंचरण में कुछ प्रॉब्लम थी, जो उसकी परेशान माँ द्‌वारा दी गई कॉफी के कारण बढ़ गई थी। लेकिन वह अब ठीक था तथा एक ही झटके से बिस्तर से उठ बैठा। मैं कोई विश्व सुधारक नहीं हूँ, इसलिए मैंने उसे झूठ बोलने दिया। मैं जिला चिकित्सक था और मैंने अपना परम कार्य किया, उस बिंदु तक जब यह लगभग अति बन

गया। मुझे बहुत कम पैसे मिलते, फिर भी मैं गरीबों के प्रति काफी उदार एवं मददगार था। अभी मुझे यह देखना था कि रोज ठीक तो है न फिर हो सकता है लड़का अपने ढंग से काम करे तथा मैं भी करना चाहता था। मैं अंतहीन सरदी में वहाँ क्या कर रहा था। मेरा घोड़ा मर चुका था और गाँव का कोई भी व्यक्ति मुझे घोड़ा उधार नहीं देगा। मुझे उस बाड़े से अपने दल को बाहर निकालना था, यदि उन्होंने घोड़े को दाँव पर नहीं लगाया हो तो वह न तो मुझे सुअर पर सवारी करनी पड़ सकती है। यह तो ऐसा ही था। तभी मैंने परिवार से सहमति प्रकट की। उन्हें इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं था, यदि उन्हें यह सब कुछ पता होता तो वे कभी भी इस पर विश्वास नहीं करते। नुस्खे लिखना तो आसान होता है, लेकिन लोगों को समझना मुश्किल होता है। ठीक है, अब यह मेरी यात्रा का अंत होना चाहिए। एक बार फिर मुझे बिना जरूरत बुलाया गया था। मुझे तो इसकी आदत थी, पूरे जिले के लोगों ने मेरी रात की घंटी से मेरा जीवन परेशान कर रखा था, लेकिन मुझे इस समय रोज को भी छोड़ना चाहिए, छोटी लड़की जो वर्षों से मेरे घर में रहती आई थी इसके बावजूद भी कि मैंने कभी उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया था। यह इतना बड़ा त्याग था कि इस बारे में कुछ पूछा नहीं जा सकता था। मुझे किसी भी तरह इस विषय पर विश्लेषण करना था, ताकि उसे वापिस इस परिवार में न जाना पड़े, जो कि मुझे रोज को फिर वापिस नहीं देनेवाली थी। लेकिन जैसे ही मैंने अपना थैला बंद किया और अपना रोवेंदार कोट एक हाथ में पहना ही था कि पूरा परिवार एक साथ खड़ा था, पिता हाथ में रम का गिलास लिये सूँघ रहा था, माँ प्रकटतः मुझसे निराश खड़ी थी, लोग क्यों, क्या अपेक्षा करते हैं? वह आँखों में आँसू लिये अपने होंठ काट रही थी, बहन खून से सना तौलिया लहरा रही थी, मैं किसी भी तरह सशर्त यह मानने के लिए तैयार था कि हो सकता है कि लड़का फिर बीमार पड़ जाए। मैं उसकी तरफ गया। उसने मुसकराते हुए मेरा स्वागत किया, मानो मैं उसके लिए सबसे पौष्टिक, दुर्बल शोरबा ला रहा हूँ...आह, अब तो दोनों घोड़े एक साथ हिनहिना रहे थे। यह शोर, मैं मानता हूँ कि स्वर्ग द्वारा निर्देशित था, जो मेरे द्वारा इस मरीज की जाँच में मदद आने के लिए था और इस समय मुझे पता चला कि वह बच्चा वास्तव में बीमार था। उसकी दाईं ओर नितंब पर मेरी हथेली के आकार का खुला घाव था, जो गुलाब की तरह लाल था, जिसमें अनेक रंग थे, गहराई में गहरा, किनारे पर हल्का, हल्का दानेदार, जिसमें खून के अनियमित थक्के होते हैं, इस तरह से खुला मानो दिन की रोशनी में धरातल का खाना, दूर से वह ऐसा ही दिखता था। लेकिन निकट से जाँच करने पर कुछ और जटिलताएँ दिखीं। मैं सीटी की धीमी आवाज के रूप में अपना आश्चर्य व्यक्त करने से नहीं रोक सका। मेरी कनिष्ठ उँगली के जितने लंबे और मोटे कीड़े, देखने में गुलाब की तरह लाल तथा शरीर पर रक्त के धब्बे, जिनके सिर छोटे और कई टाँगें थीं, घाव के भीतर कुलबुला रहे थे। बेचारा लड़का, मदद से परे! मैंने तुम्हारा बड़ा घाव देख लिया है; तुम्हारे पार्श्व में यह घाव तुम्हें बरबाद कर रहा है। परिवार खुश था; उन्होंने मुझे स्वयं में व्यस्त देखा। बहन ने माँ को कहा, माँ ने पिता को कहा, पिता ने आनेवाले मेहमानों को बताया, जो चाँदनी में खुले दरवाजे से अपने पैर के अँगूठे के सहारे चलते हुए तथा अपनी बाजुएँ फैलाकर अपना संतुलन बनाते अंदर आ रहे थे। ''क्या आप मुझे बचा लेंगे?'' सिसकते हुए बच्चे ने मुझसे पूछा, जिसके घाव के भीतर के जीवन के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। मेरे जिले में इसी तरह के लोग हैं, डॉक्टर से हमेशा असंभव की अपेक्षा करनेवाले। उनका प्राचीन विश्वास खो गया है। पादरी घर पर बैठता है, एक-एक करके अपने पूजा परिधान उतारता जाता है, लेकिन डॉक्टर से अपने दयालु शल्य चिकित्सक के हाथ के साथ सर्वशक्तिमान होने की अपेक्षा की जाती है। ठीक है, इससे उन्हें खुशी मिलती है; मैंने भी उन्हें अपनी सेवा की पेशकश नहीं की है। यदि पवित्र कारणों से वे मेरा दुरुपयोग करते हैं, तो वह मैं अपने साथ होने दूँगा। और अच्छा मैं क्या चाहता हूँ, पुराना ग्रामीण डॉक्टर जो मैं हूँ। अपनी नौकरानी से वंचित। इसलिए वे सभी आए, परिवार तथा गाँव के बुजुर्ग और मेरे कपड़े उतार दिए। स्कूल की गायक मंडली

शिक्षक का इसके प्रमुख के रूप में घर के सामने खड़ी थी और इन शब्दों को बिल्कुल ही साधारण धुन में गाने लगी—

''इसके कपड़े उतारो, तभी यह हमारा इलाज करेगा,
यदि वह ऐसा नहीं करे तो इसे मार डालो।
केवल एक डॉक्टर, केवल एक डॉक्टर।''

तब मेरे कपड़े उतार दिए गए और मैं लोगों को चुपचाप देख रहा था। उँगली को दाढ़ी में डाले और अपने सिर को एक ओर झुकाए। मैं लगभग व्यवस्थित था और स्थिति के बिल्कुल अनुकूल और वैसे ही रहा, यद्यपि इससे मुझे कोई मदद नहीं मिल रही थी, क्योंकि वे लोग मुझे मेरे सिर और पैर से पकड़कर बिस्तर के पास ले गए। घाव की ओर दीवार के साथ ही उन लोगों ने मुझे वहाँ लिटा दिया, उसके बाद सभी लोग कमरे के बाहर चले गए और दरवाजा बंद कर दिया। गाना बजना रुक गया। चाँद बादलों से ढक गया, मेरे चारों ओर का बिस्तर गरम था। खुली खिड़की से घोड़ों के सिर परछाईं की तरह हिल रहे थे। ''क्या आप जानते हैं?'' मेरे कान में एक आवाज आई, ''मुझे आप में बहुत कम विश्वास है। आपको ही यहाँ क्यों लाया गया है, आप खुद से अपने कदमों पर चलकर तो यहाँ नहीं आए। मुझे मदद करने की बजाय आप मृत्यु-शय्या पर मुझे जकड़ रहे हैं। सबसे सही काम जो मैं करूँगा, आपकी आँखों को नोच लूँगा,'' ''ठीक है,'' मैंने कहा, ''यह शर्म की बात है और फिर भी मैं डॉक्टर हूँ। मैं क्या करूँ? मेरा विश्वास करो, यह मेरे लिए इतना आसान नहीं है।'' ''क्या मुझे इस क्षमायाचना से संतुष्ट हो जाना चाहिए। ओह मुझे जरूर होना चाहिए। मैं इसमें कोई मदद नहीं कर सकता। मुझे हमेशा चीजें बरदाश्त करनी पड़ती हैं। एक घाव ही तो मैं इस दुनिया में लाया, यही मेरी एकमात्र वृत्ति है।'' ''मेरे युवा मित्र,'' मैंने कहा, ''आपकी गलती है; आपका दृष्टिकोण व्यापक नहीं है और मैं हमेशा ही बीमारों के कमरे में रहा हूँ मैं आपको बता दूँ; आपका घाव इतना बुरा नहीं है।''

सँकरे कोने में कुल्हाड़ी के दो प्रहार किए गए। कई तो उसकी ओर का प्रस्ताव देते हैं और जंगल में कुल्हाड़ी की आवाज शायद ही सुन पाते हैं, उसके निकट आते हुए से भी बहुत कम। ''क्या वास्तव में ऐसा है या क्या आप मुझे बुखार में भ्रम में डाल रहे हैं? यह वास्तव में ऐसा ही है। किसी सरकारी डॉक्टर के सम्मान के इस शब्द पर विश्वास करो।'' उसने मान लिया और बेसुध लेट गया लेकिन मेरे लिए यह सोचने का समय था कि मैं कैसे भागूँ। घोड़े सभी अपने स्थान पर वफादारी के साथ खड़े थे। मैंने अपने कपड़े, रोवेंदार कोट और थैले तेजी से इकट्ठे किए। मैं तैयार होने में समय बरबाद करना नहीं चाहता था, यदि घोड़े उसी तरह भागते हुए जाते, जिस प्रकार वे आए थे, तो मुझे उसके बिछावन से उछलकर तैयार हो जाना चाहिए। आज्ञाकारितापूर्वक घोड़े खिड़की के पास से हट गए। मैंने अपना बंडल टमटम पर फेंका, रोवेंदार कोट बाजू से खूँटी पर अटक गया। सब ठीक था। मैं उछलकर घोड़े पर सवार हो गया। ढीले-ढाले लटकते जीन के कारण एक घोड़ा दूसरे से शायद ही बँध पाया था और पीछे टमटम घूम रहा था। मेरा रोवेंदार कोट अंत में बर्फ में पड़ा था। ''दम लगाओ!'' मैंने कहा, लेकिन वहाँ तो हलचल ही नहीं हुई। धीरे-धीरे बूढ़े व्यक्ति की तरह हम बर्फीले अवशेषों पर रेंगने लगे। हमें पीछे से नए लेकिन बच्चों के अशुद्ध गीत की आवाज आई।

''ओ, सभी मरीज, खुश हो जाओ,
डॉक्टर बिस्तर पर तुम्हारे बगल में पड़ा है।''

इस रफ्तार से तो मैं अभी भी घर नहीं पहुँच पाऊँगा; मेरा फलता-फूलता काम बरबाद हो गया, मेरे उत्तराधिकारी मुझे लूट रहे थे, लेकिन बेकार, वह मेरी जगह नहीं ले सकता। मेरे घर पर वह घृणास्पद साइस उत्पाद मचा रहा था;

रोज उसका शिकार है। मैं इस बारे में और अधिक नहीं सोचना चाहता। नंगा, सर्दियों के इस सबसे अप्रिय ठंड में अनाश्रित, पार्थिव गाड़ी, अपार्थिव घोड़े, मैं एक बूढ़ा आदमी आवारा भटक रहा था। मेरा रोवेंदार कोट टमटम के पीछे लटक रहा था, लेकिन मैं इस तक पहुँच नहीं पा रहा था और मेरे फुरतीले मरीजों के समूह में कोई भी एक उँगली नहीं उठा पाता। धोखा खा गया! धोखा खा गया! रात की घंटी पर झूठे अलॉर्म ने एक बार उत्तर दिया, यह सही नहीं किया जा सकता, कभी नहीं।

❑

सम्राट् का संदेश

सम्राट्, कहानी इस तरह आरंभ होती है, ने आपको एक संदेश भेजा था। आप एक अकेला व्यक्ति, प्रजा में सबसे कमजोर व्यक्ति, एक परछाईं जो कि साम्राज्य के सूर्य के सामने भाग गया, जबकि यह सुदूर क्षेत्र में सूक्ष्मदर्शी न हो जाए, सिर्फ आप को सम्राट् ने अपनी मृत्यु-शय्या से संदेश भेजा है। उसने संदेशवाहक को अपने बिस्तर के पास झुकने के लिए कहा और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। उसके लिए यह इतना महत्त्वपूर्ण था कि उसने उस व्यक्ति को उसके अपने काम में दुहराने के लिए कहा। अपना सिर हिलाकर उसने इस बात की पुष्टि की कि संदेश सही था। और तभी, जबकि पूरे नौकर-चाकर और साथी-संगी उसकी मृत्यु देखने के लिए इकट्ठे हुए, तभी दृश्य को रोकनेवाली सभी दीवारों को तोड़कर गिरा दिया गया तो खुली सीढ़ियों के चौड़े ऊँचे वक्र पर घेरा बनाकर साम्राज्य के प्रमुख व्यक्ति खड़े थे। उन सबके सामने उसने संदेशवाहक को भेजा। संदेशवाहक तुरंत ही रवाना हो गया। एक मजबूत, परिश्रमी व्यक्ति, एक बाजू इधर से दूसरी उधर से फैलाता हुआ, भीड़ को चीरकर अपने लिए रास्ता बनाता; जहाँ भी बाधा दिखाई देती, वह अपनी छाती पर सूर्य के निशान की ओर संकेत करता, उस तक आसानी से पहुँचा भी जा सकता था, अन्य किसी तक नहीं। फिर भी भीड़ इतनी ज्यादा है, उनके निवास स्थान का तो कोई अंत नहीं है। यदि उसके सामने खुला मैदान होता तो वह किस तरह से दौड़ता और शीघ्र ही आपको उसकी गौरवशाली मुट्ठियों के निशान आपके दरवाजे पर दिखाई पड़ेंगे। लेकिन इसकी बजाय उसका प्रयास कितना निष्फल था। वह अभी महल के भीतरी भाग के कक्ष से अपना रास्ता बना रहा था, वह कभी भी उनके अंत तक नहीं पहुँच पाएगा; यदि वह पहुँच भी जाए, तो वह सही नहीं होगा, उसे सीढ़ियों तक पहुँचने के लिए लड़ाई करनी पड़ेगी। यदि वह कर भी लेता है तो उसे तो वह सौभाग्यशाली नहीं होगा; उसे फिर आँगन तक पहुँचना पड़ेगा, आँगन के बाद उसे पहले महल को घेरे दूसरे बाहरी महल तक पहुँचना पड़ेगा फिर और अधिक सीढ़ियाँ; और फिर दूसरे महल; और इस तरह से हजारों साल तक चलता रहेगा। यदि वह अंतिम रूप से बाहरी गेट तक पहुँच भी जाता है, लेकिन यह कभी भी नहीं हो सकता है, उसके सामने राजधानी नगर फिर भी रहेगा, जो संसार का केंद्र है और मानव के तलछट से भरा हुआ है। कोई भी उससे होकर अपना रास्ता नहीं बना सकता, और वह भी एक मृत व्यक्ति के संदेश के साथ। लेकिन आप अपनी खिड़की के साथ बैठकर, जब शाम होने लगे तो इन चीजों को सच होते हुए सपने में देखें।

❑

गायक जोसफिन या मूषक लोक

हमारी गायिका का नाम जोसफिन है। जो कोई भी उसके बारे में नहीं जानते हैं उन्हेंसंगीत की शक्ति का पता नहीं है। ऐसा कोई भी नहीं है, जो उसके संगीत को सुनकर भाव विह्वल न हुआ हो। एक श्रद्धांजलि क्योंकि आमतौर पर हम कोई संगीत प्रेमी प्रजाति नहीं हैं। सुस्थिर शांति ही वह संगीत है, जिसे हम सबसे ज्यादा पसंद करते हैं। हमारा जीवन कठिन है। हम दिन-प्रतिदिन की चिंताओं से स्वयं को मुक्त करने में अब तक समर्थ नहीं हैं, यहाँ तक कि जब कभी भी हमने यह कोशिश की तो भी, ताकि हम अपने सामान्य रूटीन से इतना ऊँचा और दूर चले जाएँ जितना कि संगीत। लेकिन उसके लिए हमारे मन में इतना दु:ख नहीं है; हम इतना दूर गए भी नहीं। एक निश्चित व्यावहारिक धूर्तता जिसकी स्वीकार्य रूप से हमें बहुत जरूरत होती है और जिसे हम अपना सबसे बड़ा सम्मान समझते हैं। उससे धूर्तता से उत्पन्न मुसकराहट के साथ हम अपनी सभी कमियों के लिए स्वयं को सांत्वना देने के लिए अभ्यस्त हैं। अगर यह मान भी लें कि सिर्फ ऐसा नहीं होगा, फिर भी हम अभिलाषा करेंगे उस आनंद की जो संगीत से प्राप्त होती है। जोसफिन ही एकमात्र अपवाद है। उसे संगीत से प्रेम है और वह जानती है कि इसे किस तरह प्रसारित किया जाता है। वह ही एकमात्र है। जब वह मर जाएगी संगीत कौन जानता है कि कब तक, हमारे जीवन से गायब हो जाएगा।

मैंने कई बार सोचा है कि उसके इस संगीत का वास्तव में क्या अर्थ है। क्योंकि हम तो बिल्कुल ही असंगीतमय हैं, यह कैसे होता है कि हम जोसफिन के संगीत को समझते हैं या चूँकि जोसफिन इस बात से इनकार करती है, कम-से-कम यह सोचते हैं कि हम यह समझ सकते हैं। इसका सीधा सा जवाब यह है कि उसके गाने में इतना आकर्षण है कि संगीत के प्रति अति असंवेदनशील व्यक्ति भी उसके संगीत की अनदेखी नहीं कर सकता है, लेकिन यह उत्तर संतोषजनक नहीं है। यदि सचमुच में ऐसा होता तो उसके संगीत में यह शक्ति होती कि इसे सुननेवाला अपने अस्तित्व के प्रति सामान्य से हटकर शीघ्र एवं शाश्वत अनुभव कर सकता था, एक ऐसा अनुभव कि उसके गले से निकलनेवाली आवाज ऐसी है जैसी हमने पहले कभी नहीं सुनी है और जिसे हम सुनने के लिए समर्थ भी नहीं हैं, कोई ऐसी चीज जिसे जोसफिन के सिवा कोई अन्य हमें सुनने के लिए समर्थ कर भी नहीं सकता है। लेकिन मेरे विचार में यह ऐसा है जो होता नहीं है। मैं ऐसा महसूस नहीं करता हूँ और न ही मैंने कभी यह देखा है कि किसी को भी ऐसा अनुभव होता है। अपने निकट लोगों में हम यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि जोसफिन के गायन में, गायन के रूप में, सामान्य से हटकर के कुछ भी नहीं था।

क्या सचमुच में सिर्फ गायन ही है? यद्यपि हम असंगीतमय हैं, फिर भी संगीत की हमारी एक परंपरा है। प्राचीन समय में हमारे लोग तो गाते ही थे, इसके उल्लेख में तो मिलता ही है और कुछ गीत तो वास्तव में आज भी विद्यमान हैं, जो कि यह सच है कि अब कोई भी नहीं गा सकता है। इसलिए हमें थोड़ा आभास है कि संगीत क्या होता है और जोसफिन की कला तो वास्तव में इससे मेल नहीं खाती है। इसलिए क्या यही गायन है? शायद यह बाँसुरी की आवाज नहीं है क्या? तथा बाँसुरी की आवाज कोई ऐसी चीज है, जिसके बारे में हम तो जानते ही हैं यह हमारे लोगों की वास्तविक कलात्मक प्रवीणता थी या कि कोई प्रवीणता नहीं है, बल्कि हमारे जीवन की विशिष्ट अभिव्यक्ति थी। हम सभी बाँसुरी बजाते हैं, लेकिन निस्संदेह किसी ने भी यह समझने की कोशिश नहीं की कि बाँसुरी बजाना भी एक कला है, हम बिना सोचे बाँसुरी बजाते हैं, वास्तव में बिना कोई ध्यान दिए ही और हममें से बहुत लोग ऐसे होंगे, जिन्हें यह तक नहीं मालूम कि बाँसुरी बजाना हमारी विशेषताओं में से एक है। इसलिए यदि यह सच है कि जोसफिन गाती नहीं है वह तो सिर्फ बाँसुरी बजाती है और शायद, जैसा कि कम-से-कम यह मुझे

लगता है, यह हमारे बाँसुरी बजाने के स्तर से मुश्किल से ही थोड़ा ऊपर है, फिर भी, शायद उसकी शक्ति हमारे सामान्य बाँसुरी बजाने के बराबर भी नहीं है, जबकि एक सामान्य कृषि श्रमिक बिना किसी प्रयास के ही उस स्तर को पूरा दिन बनाए रख सकता है, जो वह अपना काम करने के अलावा कर सकता है, यदि वह बिल्कुल सही है तो जोसफिन के कथित स्वर कौशल को गलत माना जा सकता है। लेकिन इससे सिर्फ वास्तविक पहेली, जिसका कि उस पर व्यापक प्रभाव है, को सुलझाना है।

जो भी हो, यह तो बाँसुरी की ही एक प्रकार की आवाज है जो वह निकालती है। यदि आप अपने आपको उससे काफी दूर रखकर सुनते हैं तो, या उससे भी अच्छा, अपने निर्णय की जाँच करते हैं तो, जब कभी भी वह दूसरों के साथ गाती है, उसकी आवाज को पहचानने की कोशिश करके आप निस्संदेह कुछ और अंतर नहीं पाएँगे सिवाय बाँसुरी की आवाज के, जो कि दूसरों की तुलना में अधिक-से-अधिक कमजोर या नाजुक हो सकता है। फिर भी यदि आप उसके सामने बैठ जाएँ तो यह सिर्फ बाँसुरी ही नहीं है। उसकी कला को समझने के लिए यह आवश्यक है कि आप न सिर्फ उन्हें सुनें ही, बल्कि उसे देखें भी। यद्यपि कि उसकी बाँसुरी की आवाज हमारे सामान्य कामकाजी दिनों की तरह ही है, फिर भी सबसे पहले तो इस विचित्रता पर विचार कीजिए कि कोई सामान्य चीजों की सहायता से ही महत्त्वपूर्ण प्रदर्शन कर रहा है। सुपारी तोड़ना सचमुच कोई अद्‌भुत काम नहीं है, इसलिए कोई भी श्रोताओं को इकट्‌ठा कर उन्हें सुपारी काटकर दिखाकर मनोरंजन करने का साहस नहीं करेगा। लेकिन यदि कोई वही काम करता भी है तथा लोगों का मनोरंजन करने में सफल भी हो जाता है तो यह सुपारी काटने जैसी आम सी बात नहीं है। तब तो यह इस बात को सिद्‌ध करता है कि हमने सुपारी काटने की कला की अनदेखी की, क्योंकि हम इसमें अत्यंत कुशल हैं तथा इसी कला को प्रदर्शित करनेवाला नया व्यक्ति इसके प्रभाव को उपयोगी पाकर भी वह हमारी तुलना में सुपारी काटने में कम कुशल होने के बावजूद भी सबसे पहले तो हमें इसकी वास्तविक प्रकृति दिखाता है।

शायद जोसफिन के गायन के साथ भी बहुत कुछ ऐसा ही है। हम उसमें उन चीजों की प्रशंसा करते हैं, जो हम अपने लिए बिल्कुल नहीं करते हैं। इस दृष्टि से, मैं कह सकता हूँ कि वह हमारी तरह ही है। एक बार मैं किसी अन्य के साथ था, ऐसा प्राय: निश्चित रूप से होता भी है, जहाँ कहीं भी हम जा रहे थे, उसका ध्यान लोक बाँसुरी वादन की ओर जा रहा था, इस ओर इशारा मात्र ही कर रहा था, फिर भी जोसफिन के लिए यह बहुत बड़ी बात थी। एक अहंकारभरी व्यंग्यपूर्ण मुसकान, क्योंकि उसने यह सोचा कि मैंने यह कभी देखा ही नहीं है। वह जो देखने में इतनी नाजुक थी, विशेष रूप से हमारे लोगों के बीच में जो इस प्रकार की नारीवादी छाप में सफल थे, उस क्षण वास्तव में बड़े ही अभद्र लग रहे थे। उसे शीघ्र ही अपने आप अपनी तीव्र संवेदनशीलता द्‌वारा इस बात का पता चल गया और उसने स्वयं पर नियंत्रण कर लिया। वह किसी भी कीमत पर अपनी कला और सामान्य बाँसुरी वादन के बीच किसी भी प्रकार के संबंध को नकारती है। जिनके विचार इसके विपरीत हैं, उनके लिए उसके मन में सिर्फ घृणा तथा उपेक्षित तिरस्कार ही है। यह कोई आम घमंड नहीं है, क्योंकि वह विरोध जिसके साथ मेरी भी आधी सहानुभूति है, निश्चित रूप से भीड़ की तुलना में कम प्रशंसा नहीं करती है। लेकिन जोसफिन सिर्फ प्रशंसा ही नहीं चाहती है, वह चाहती है कि उसकी ठीक उसी प्रकार प्रशंसा की जाए जैसा कि वह चाहती है, सिर्फ प्रशंसा से तो उसका उत्साह ही ठंडा हो जाता है। यदि आप उसके आगे बैठते हैं तभी आप उसे समझ पाते हैं। विरोध तो कुछ दूर से ही संभव है। जब आप उसके आगे बैठते हैं तो आप जानते हैं, उसका यह बाँसुरी वादन कोई बाँसुरी वादन नहीं है।

चूँकि बाँसुरी वादन हमारी एक विचारहीन आदत है, कोई भी यही सोच सकता है कि लोग जोसफिन के श्रोताओं

के सामने भी गाने लगेंगे; उसकी कला हमें आनंद देती है और जब हम खुश होते हैं तो बाँसुरी वादन करते हैं; लेकिन उसके श्रोता कभी भी बाँसुरी नहीं बजाते हैं। वे तो चूहों की-सी मौनता लेकर बैठ जाते हैं; मानो इच्छित शांति के सहभागी हैं जिससे कि हमारा अपना बाँसुरी वादन हमें बाँधकर रखता है, और हम कोई शोर नहीं करते हैं। क्या यह उसका गायन है जो हमें मोहित करता है या बल्कि यह उसकी कमजोर आवाज से निकलनेवाली गंभीर शांति नहीं है? एक बार ऐसा हुआ कि जब जोसफिन कोई साधारण सा गीत पूरी निश्छलता से गा रही थी तभी वे सब भी गाने लगे, अब भी यह बिल्कुल वही था जो हम जोसफिन से सुन रहे थे। हमारे सामने बाँसुरी की जो आवाज आ रही थी सारे अभ्यास के बावजूद भी संकोची थी और यहाँ श्रोताओं में एक बच्चे का नि:संकोच बाँसुरी वादन चल रहा था; इस अंतर को समझा पाना असंभव होता, लेकिन फिर हमने फुफकारे और सीटी बजाकर बाधा डालनेवाले को चुप किया, यद्यपि कि यह बहुत जरूरी नहीं होता, क्योंकि फिर तो वह लज्जा एवं भय के कारण भाग जाती, जबकि जोसफिन ने अपने विजय उल्लास से पूर्ण धुन बजाई और वह अपने आप से बाहर थी। वह अपने बाजू को फैला रही थी और अपने गले को जितना ऊँचा खींच सकती थी, खींच रही थी।

हमेशा की तरह वह ऐसी है; हर मामूली-साधारण घटना, हर परेशानी, फर्श की एक खड़खड़ाहट, दाँतों की किरकिराहट, प्रकाश व्यवस्था की नाकामी उसे अपने संगीत के प्रभाव को बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है। जो भी हो उसे यह विश्वास रहता है कि वह बहरे लोगों के लिए गा रही है। उत्साह और प्रशंसा की कोई कमी नहीं होती है, लेकिन सही समझ की आशा न करना तो उसने पहले ही सीख लिया है, वह ऐसा ही समझती है। इसलिए उसे व्यवधान से कोई फर्क नहीं पड़ता है। उसके संगीत की शुद्धता को बाधित करने के लिए बाहर से जो भी व्यवधान आता है, थोड़े से प्रयास से या बिना किसी प्रयास के ही, सिर्फ इसका सामना करके ही वह लोगों को जाग्रत् करने में मदद कर सकती है, उन्हें वह शायद समझ की शिक्षा नहीं दे सकती है, लेकिन विस्मित सम्मान की तो दे सकती है।

यदि छोटी-छोटी घटनाओं से उसे इतना फायदा होता है तो बड़ी घटनाओं से कितना होगा? हमारा जीवन तो वैसे ही असुरक्षित है, हर दिन, चिंताएँ, शंकाएँ, आशाएँ एवं आतंक लेकर आता है, यदि व्यक्ति को दिन-रात अपने साथियों का समर्थन एवं सहयोग न मिले तो अकेले व्यक्ति के लिए यह सब बरदाश्त कर पाना लगभग असंभव होगा; लेकिन फिर भी प्राय: यह बहुत कठिन हो जाता है। बार-बार हजारों कंधे एक बोझ के नीचे काँप रहे हैं जो कि वास्तव में एक जोड़ी के लिए बने थे। तब जोसफिन को लगता है कि उसका समय आ गया है। इसलिए जब वह नाजुक प्राणी, विशेषकर अपनी छाती की हड्डियों के कंपन से विचलित होकर खड़ी होती है, तो कोई भी उसके लिए चिंतित हो जाता है। ऐसा लगता है मानो उसने अपना पूरा ध्यान ही अपने संगीत पर केंद्रित कर दिया है, मानो उसके भीतर की हर चीज जो सीधे-सीधे उसके गायन में सहायता नहीं करती है, वह सारी शक्ति, जीवन की लगभग सारी शक्ति निकल गई है, मानो वह बेआसरा परित्यक्त छोड़ दी गई, जिसकी देखभाल सिर्फ दूतों के जिम्मे है। ऐसा लगता है कि वह पूरी तरह से अंतर्मुखी हो गई है और सिर्फ अपने संगीत में ही जीवित है तथा उसके ऊपर पड़नेवाली एक ठंडी साँस से भी वह मर सकती है। लेकिन तभी वह ऐसे प्रकट होती है कि हम, जो उसके विरोधी माने जाते हैं, को यह कहने की आदत है, ''वह गा भी नहीं सकती है, उसने अपने ऊपर एक संगीत के लिए इतना दबाव बना रखा है, इसे हम संगीत नहीं कह सकते हैं, बल्कि यह हमारे सामान्य प्रचलित बाँसुरी वादन के सादृश्य कोई चीज है।'' इस तरह हमें ऐसा लगता है, लेकिन यह प्रभाव भी, जैसे कि मैंने कहा, अवश्यंभावी पर क्षणभंगुर है, अस्थायी है। शीघ्र ही हम भी आम लोगों की भावनाओं में डूब जाते हैं, वह भी एक-दूसरे से चिपके, अंतर्मुखी साँसों के साथ हम सुनते हैं।

उसके चारों ओर इकट्ठे होने के लिए हमारे आदमियों की यह भीड़, जो कि हमेशा ही गायब रहती है और बिना किसी कारण के ही इधर-उधर भागती रहती है, उनके लिए जोसफिन को अधिकांशत: कुछ नहीं करना पड़ता है, सिवाय इसके कि वह अपना सिर पीछे झुकाकर मुँह आधा खोलकर आँखें ऊपर की ओर निकालकर एक जगह खड़ी हो जाए, जिससे यह लगे कि वह गाने जा रही है। जहाँ उसे पसंद होता है, वह यह कर सकती है, इसके लिए किसी सुदूर निर्जन कोने की जरूरत नहीं होती है। जैसे ही खबर मिलती है कि वह गाने जा रही है, शीघ्र ही लोगों का जुलूस उसी ओर बढ़ने लगता है। अब, कभी-कभी उसी तरह से बाधाएँ विघ्न डालती हैं। जोसफिन को गाना गाना सबसे अच्छा उसी समय लगता है, जब चीजें अव्यवस्थित होती हैं। अनेक चिंताएँ एवं खतरे हमें धूर्ततापूर्ण रास्ता अपनाने के लिए विवश करते हैं। दुनिया के श्रेष्ठ संकल्पों के साथ भी हम उतनी शीघ्रता से एकत्रित नहीं हो सकते हैं, जितना कि जोसफिन चाहती है। कई अवसरों पर तो बिना पर्याप्त श्रोताओं के भी वह औपचारिक रूप से खड़ी हो जाती और बहुत देर तक खड़ी रहती। उसके बाद वह वास्तव में क्रोधित हो जाती और भद्दे तरीके से जमीन पर अपने पाँव पटकने लगती। वास्तव में वह परेशान करती है। लेकिन ऐसा आचरण भी उसकी प्रसिद्धि को प्रभावित नहीं करता है। अपने अत्यधिक माँगों को थोड़ा कम करने की बजाय लोग उससे मिलने के लिए परेशान रहते हैं। नए-नए श्रोताओं को बुलाने के लिए दूत भेजे जाते हैं। उसे इस अज्ञानता में रखा जाता है कि यह काम हो रहा है। सड़क के चारों ओर प्रहरियों को तैनात देखा जा सकता है, जो नव आगंतुकों को जल्दी जाने के लिए प्रेरित करते हैं। यह तब तक जारी रहता है, जब तक कि ठीक-ठीक ढंग से काफी श्रोता इकट्ठे नहीं हो जाते।

जोसफिन के लिए इतनी मेहनत करने के लिए लोगों को क्या प्रेरित करता है? इस प्रश्न का उत्तर देना जोसफिन के गायन के बारे में पहले प्रश्न से आसान नहीं है, जिससे कि इसका निकट का संबंध है। कोई भी उसे निकालकर इन दोनों को दूसरे प्रश्न के साथ जोड़ सकता है, यदि बलपूर्वक यह कहना संभव होता तो, क्योंकि उसके गायन के कारण लोग बिना शर्त उसके प्रति समर्पित हैं। लेकिन सीधे-सीधे यह ऐसा मामला नहीं है। हमारे बीच बिना शर्त समर्पण मुश्किल से ही है। हम तो उस तरह के लोग हैं, जो धूर्तता से हर चीज से ज्यादा प्यार है, बिना किसी कपट के, बचकाना-फुसफुसाहट, बकबक, निश्छल सतही बकबक के, निश्चित रूप से, इस प्रकार के लोग बिना शर्त समर्पण नहीं कर सकते हैं, और जैसा कि जोसफिन स्वयं भी निश्चित रूप से जानती है और इसीलिए वह अपने कमजोर गले की पूरी शक्ति से इसके विरुद्ध लड़ती है।

ऐसी सामान्य घोषणाएँ करने के लिए, निश्चित रूप से बहुत आगे जाने की जरूरत नहीं है। हमारे लोग भी जोसफिन के प्रति उतने ही समर्पित हैं, केवल बिना शर्त रूप में ही नहीं। उदाहरण के लिए वे जोसफिन का मजाक नहीं उड़ा पाएँगे। यह स्वीकार किया जा सकता है; जोसफिन में ऐसी बहुत चीजें हैं, जिन पर लोगों को हँसी आ सकती है; और हँसने के लिए हँसने का तो हमें बहाना चाहिए। हमारे जीवन की सभी परेशानियों के बावजूद भी हँसी तो हमेशा हमारे मन में होती है, लेकिन हम जोसफिन का मजाक नहीं उड़ाते हैं। कई बार तो मेरे मन में यह बात आई कि हमारे लोग जोसफिन के साथ अपने संबंध की इस रूप में व्याख्या करते हैं, कि उसे एक कमजोर प्राणी, जिसे सुरक्षा की जरूरत होती है और कुछ तरह से विशेष, उसके अपने ही विचार में उसके गाने के उपहार के लिए विशिष्ट उनकी देखभाल में सौंप दिया गया है और उन्हें उसकी देखभाल करनी चाहिए। इसका कारण तो किसी को भी मालूम नहीं है, लेकिन तथ्य स्थापित प्रतीत होता है। लेकिन जो कुछ भी किसी की देखरेख में सौंपा जाता है वह उस पर हँसता नहीं है। हँसने का अभिप्राय है अपने कर्तव्य में लापरवाही। सबसे बड़ा छल, जो हममें से सबसे बड़ी कपटी ने जोसफिन के साथ किया वह प्राय: यह कहना है, ''जोसफिन पर नजर पड़ना ही हँसी को रोकने के लिए काफी है।''

इस तरह लोग पिता द्वारा अपने उस बच्चे की देखभाल करने से ज्यादा जोसफिन की देखभाल करते हैं, जिसका छोटा-सा हाथ किसी को नहीं मालूम कि आदेश या आग्रह के लिए उसकी ओर फैला है। कोई भी यह सोच सकता है कि पितृत्व दायित्व निभाने के लिए हमारे आदमी उपयुक्त नहीं होंगे, लेकिन वास्तव में वे इसका निर्वहन कर रहे हैं; कम-से-कम इस मामले में तो प्रशंसापूर्वक कर रहे हैं। कोई भी अकेला व्यक्ति वह नहीं कर सकता, जो इस दृष्टि से सभी लोग सम्मिलित रूप से करने में समर्थ हैं। पक्के तौर पर एक व्यक्ति और लोगों की शक्ति के बीच का अंतर इतना बड़ा है कि नर्स की देखरेख में रहनेवाले शिशु के लिए उनकी निकटता की गरमी की ओर खींचा जाना काफी है और वह पर्याप्त रूप से सुरक्षित होता है। जोसफिन के लिए तो निश्चित रूप से, किसी को भी ऐसा विचार व्यक्त करने की हिम्मत नहीं हो सकती। ''तुम्हारी सुरक्षा का मूल्य एक पुराने गीत के बराबर नहीं है।'' तब वह कहती है कि जरूर, जरूर, पुराने गीत हम सोचते हैं। उसके विरोध में कोई वास्तविक विरोधाभास न होने के अलावा, बल्कि यह करने का एक पूरी तरह से बचकाना तरीका है और बचकाना अहसानमंदी, जबकि एक पिता के करने का तरीका यह है कि इस पर कोई ध्यान ही न दो।

फिर भी इसके पीछे कुछ चीज ऐसी है, जिसकी लोगों और जोसफिन के बीच के संबंध द्वारा व्याख्या करना आसान नहीं है। जोसफिन, कहने का अभिप्राय है, इसके बिल्कुल विपरीत सोचती है, वह मानती है कि लोगों की रक्षा तो वह कर रही है। जब हम राजनीतिक और आर्थिक रूप से बुरी अवस्था में हैं तो उसके गायन से यह अपेक्षा होती है कि वह हमारी रक्षा करेगा, उससे कम कुछ भी नहीं और यदि यह भी बुराई को नहीं भगाता है, कम-से-कम हमें इसे सहन करने की शक्ति तो देता है। वह इसे इन शब्दों में या किसी अन्य शब्दों में नहीं वर्णन करती है। जो भी हो वह बहुत कम बताती है। बक-बक करनेवालों में वह खामोश रहती है; यह तो उसकी आँखों से, बंद होंठों से भी झलकता है; हममें से कुछेक लोग ही अपने होंठ बंद रख सकते हैं, लेकिन वह रख सकती है, यह सहज रूप से स्पष्ट है। जब कभी भी हमें बुरी खबर मिलती है और कई दिनों तक बुरी खबरें आती रहती हैं, जिनमें झूठ एवं आधा सच भी होता है, वह तेजी से उठती है, जबकि वह प्राय: निरुत्साह के साथ जमीन पर बैठी रहती है। वह उठती है तथा खींचकर अपना गला सीधा करती है तथा समूह के सिर के ऊपर से उसी प्रकार देखने की कोशिश करती है, जिसमें मेघ गर्जन एवं बिजलीवाले तूफान से पहले गड़ेरिया देखता है। निश्चित रूप से यह बच्चों की आदत होती है, जो असभ्य, मनमौजी ढंग से ऐसे दावे करते हैं, लेकिन जोसफिन का आचरण बच्चों के लिए इतना भी बेबुनियाद नहीं है। यह सही है कि वह हमें बचाती नहीं है और वह हमें कुछ शक्ति भी नहीं देती है; स्वयं को अपने लोगों के उद्धारक के रूप में प्रस्तुत करना आसान है, कष्ट में जिस प्रकार ढल जाते हैं, खुद को भी नहीं छोड़ते, तीव्र में तेज होते हैं, मृत्यु से भली-भाँति परिचित होते हैं, उन्मुक्त साहस के वातावरण में ही वे डरते हैं, जिन्हें निरंतर वे श्वास में लेते हैं तथा जितने वे साहसी होते हैं, उसके अलावा वे ऊर्वर भी होते हैं। मैं कहता हूँ कि घटना के बाद स्वयं को लोगों के उद्धारक के रूप में प्रस्तुत करना आसान है, जो कि हमेशा ही किसी-न-किसी तरह स्वयं को बचाने में सफल रहे हैं, यद्यपि कि उस बलिदान की कीमत पर जो कि इतिहासविद् बनाते हैं, आमतौर पर बोला जाए तो हम पूरी तरह से ऐतिहासिक अनुसंधान की अनदेखी करते हैं, बहुत ही डरे हुए से। और फिर भी यह सही है कि हम आपातकालीन स्थिति में अन्य समय की तुलना में जोसफिन की आवाज सुनना पसंद करते हैं। हमारे ऊपर मँडरानेवाले संकट हमें खामोश, विनम्र एवं दब्बू बना देते हैं तथा जोसफिन के अधीन कर देते हैं। हम एक साथ जाना पसंद करते हैं। हम एक-दूसरे के साथ सिमटकर रहना पसंद करते हैं, विशेषकर ऐसे मौकों पर जब परेशानियों के कारण हम अलग हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो हम जल्दी में पी रहे हैं, हाँ जल्दी भी जरूरी होता है, कभी-कभी जोसफिन यह भूल जाती है—लड़ाई के पहले शांति के प्याले से जो सामान्य होता है।

यह उतना गाने का प्रदर्शन नहीं है जितना लोगों की भीड़ का, एक ऐसी भीड़, जहाँ सामने बाँसुरी की आवाज के सिवाय पूरा सन्नाटा है। यह समय हमारे लिए इतना गंभीर है कि हम इसे बक-बक करके बरबाद नहीं कर सकते।

इस प्रकार का संबंध, निश्चित रूप से जोसफिन को कभी संतुष्ट नहीं करेगा। समस्त स्नायविक बेचैनी के बावजूद, जो जोसफिन को प्राय: महसूस होती है, क्योंकि जोसफिन की स्थिति कभी भी पूर्णत: परिभाषित नहीं रही है, फिर भी बहुत कुछ है जो वह देख नहीं सकती है, क्योंकि घमंड ने उसे अंधा कर रखा है; और उसे बहुत आसानी से उसकी नजरों से बचाया भी जा सकता है; उसके बहुत सारे चाटुकार हमेशा यह करने में व्यस्त रहते हैं, जो एक प्रकार से समाज सेवा है, फिर भी यह संयोगवश है तथा उनकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता है एवं वे लोगों के जमघट में एक कोने में होते हैं, फिर भी यह कोई छोटी सी बात नहीं है, वह निश्चित रूप से हमें अपने गायन से वंचित नहीं कर सकती है।

उसे ऐसा करने की जरूरत भी नहीं है, क्योंकि उसकी कला की अनदेखी नहीं होती है। यद्यपि हम कई अन्य चीजों में उलझे रहते हैं तथा यह किसी भी तरह ऐसा नहीं है कि उसके गायन के वास्ते ही शांति है; कुछ श्रोता तो देखते भी नहीं और अपना चेहरा पड़ोसी के बालों में छुपा लेते हैं ताकि सामने जोसफिन बिना उद्देश्य स्वयं को थकाती रहे। फिर भी इसमें कुछ है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता, जो प्रबल रूप से जोसफिन की बाँसुरी से हम तक पहुँच जाता है। इस बाँसुरी की आवाज तब तेज होती है, जब सभी शांत रहने का संकल्प लेते हैं, और सभी व्यक्तियों की ओर से प्रत्येक व्यक्ति के लिए आए हुए संदेश की तरह लगता है; जोसफिन की पतली बाँसुरी गंभीर निर्णयों के बीच लगभग उसी तरह लगती है जैसे कोलाहल भरे वैरी संसार में हमारे लोगों का कमजोर अस्तित्व। जोसफिन स्वयं को थकाती है, उसकी आवाज में कुछ नहीं है, उसके क्रियान्वयन में कुछ नहीं है। वह दृढ़तापूर्वक अधिकार जताती है और हम तक पहुँच जाता है उसका संदेश; इसे सुनकर हमें अच्छा तो लगता ही है। यदि हमारे बीच में एक भी ऐसा वास्तविक रूप से प्रशिक्षित गायन मिलता है तो हमें निश्चित रूप से ऐसे समय में यह सहन नहीं करना पड़ेगा और हमें सर्वसम्मति से ऐसे प्रदर्शनों की निरर्थकता से मुक्ति मिलेगी। जोसफिन को भी इस सोच से मुक्ति मिले कि हमारा उसे सिर्फ सुनना ही यह प्रमाण है कि वह गायक नहीं है। उसे इसका आभास तो होना चाहिए नहीं तो इतने आवेश में वह यह कैसे इनकार कर सकती है कि हम सुनते तो हैं, वह तो सिर्फ गाती रही और अपने आभास को हवा में उड़ाती रही।

दूसरी अन्य चीजें भी हैं, जिसमें उसे राहत महसूस होती है; हम वास्तव में एक तरह से उसे इस प्रकार सुनते हैं जैसे कोई प्रशिक्षित गायक को सुनता है। उसे वह प्रभाव मिलता है, जो एक प्रशिक्षित गायक व्यर्थ में हमारे बीच प्राप्त करना चाहेगा तथा जो बिल्कुल सही तरह से तभी प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि उसके संसाधन बिल्कुल अपर्याप्त हैं। इसके लिए निस्संदेह हमारा जीने का ढंग ही मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

हमारे लोगों में युवावस्था की कोई उम्र नहीं होती, मुश्किल से सबसे छोटा बचपन नियमित रूप से, यह सत्य है, ऐसी माँगें आती रहती हैं कि बच्चे को विशेष स्वतंत्रता दी जानी चाहिए, विशेष सुरक्षा, थोड़ा लापरवाह रहने का अधिकार, थोड़े अर्थहीन चक्कर खाने का अधिकार, थोड़ा खेल, कि इस अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए तथा इसके उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए; ऐसी माँगें आती रहती हैं और लगभग हर कोई इसकी स्वीकृति देते हैं। इससे ज्यादा स्वीकार्य करने के लिए और कुछ है ही नहीं; और हमारी दैनिक जीवन की वास्तविकताओं में ऐसा भी कुछ नहीं है, जिसे दिए जाने की कम संभावना है। कोई भी इन माँगों की स्वीकृति देता है, कोई भी इन माँगों को पूरा करने का प्रयास करता है, लेकिन शीघ्र ही सभी पुराने तरीके वापिस आ जाते हैं। हमारा जीवन ऐसा है कि एक बच्चा जैसे ही थोड़ा चलना सीखता है तथा एक से दूसरी चीजों में फर्क करना सीखता

है; उसे एक वयस्क की तरह स्वयं को देखना चाहिए। वे क्षेत्र, जहाँ कि आर्थिक कारणों से हमें बिखराव में रहना पड़ता है वे बहुत हैं। हमारे दुश्मन भी बहुत हैं, हमारी प्रतीक्षा में इधर-उधर पड़े संकटों का अनुमान करना भी आसान नहीं है। हम अपने बच्चों की अस्तित्व के संघर्ष से रक्षा नहीं कर सकते हैं। यदि हम ऐसा करते हैं, तो जल्द ही उनके अस्तित्व पर संकट आ जाता है। इन निराशाजनक सोच-विचार को, अन्य विचारों को, जो निराशाजनक नहीं हैं हमारी प्रजाति की उर्वरता से बल मिलता है। हमारी पीढ़ी और प्रत्येक बहुसंख्यक हैं, दूसरों के सहारे चलती है। बच्चे को बच्चा बने रहने का समय नहीं है, दूसरी प्रजातियाँ अपने बच्चों का ध्यानपूर्वक पालन-पोषण करती हैं, उसके बच्चों के लिए स्कूलों की स्थापना की जा सकती है। ऐसे स्कूलों से प्रतिदिन बच्चे निकलते आएँगे। इनमें प्रजाति का भविष्य वही बच्चे हैं, जो लंबी अवधि से दिन-प्रतिदिन निकलते रहे हैं। हमारा कोई स्कूल नहीं है, फिर भी हमारी प्रजाति से छोटे अंतराल पर असंख्य बच्चों के झुंड निकलते हैं, जो हँसते-खेलते, चहचहाते रहते हैं, तब तक जब तक कि उन्हें बाँसुरी वादन नहीं आ जाता है, वे आवेग में तब तक लुढ़कते, उठते-गिरते जब तक वे दौड़ नहीं सकते; अव्यवस्थित रूप से हर चीज तब तक ढोते रहते हैं, जब तक कि वे देख भी नहीं सकते, हमारे बच्चे! नहीं, नहीं, ये उन स्कूलों की तरह के बच्चे नहीं हैं; ये तो हमारे नए-नए बच्चे हैं, अबाध रूप में आते हुए, अभी मुश्किल से वह बच्चा प्रकट भी नहीं होता है कि वह बच्चा नहीं रहता है, जबकि उसके पीछे बच्चे जैसे दिखनेवाले चेहरों की इतनी भीड़ होती है कि उनमें अंतर करना मुश्किल होता है, सभी हँसते-खिलखिलाते बच्चे। सही में, यह कितना ही आनंददायक क्यों न हो और दूसरे इसके लिए हमसे कितनी ही ईर्ष्या क्यों न करें और सही है, हम तो बस अपने बच्चे को सच्चा बचपन नहीं दे सकते। और इसके अपने परिणाम हैं। हमारे लोगों में बचा हुआ और जिसे नष्ट न किया जा सके, ऐसा बचपन अभी भी है। इसके बिल्कुल विपरीत हमारे भीतर क्या श्रेष्ठ है, हम अपनी अचूक व्यावहारिक सामान्य बुद्धि के बावजूद, कभी-कभी हम अत्यंत मूर्खतापूर्ण आचरण करते हैं, ठीक बच्चों की तरह, वह भी छोटे-छोटे आनंद के लिए, आडंबरपूर्ण, निरुद्देश्य, गैर-जिम्मेदार आचरण। यद्यपि कि इससे प्राप्त हमारा आचरण निश्चित रूप से बच्चों के आनंद की तरह उल्लास भरा नहीं होता, फिर भी इसका कुछ अंश तो निस्संदेह रूप से इसमें विद्यमान रहता है। हमारे लोगों के इस बचपने से जोसफिन को भी शुरू में फायदा हुआ है।

फिर भी हमारे लोगों में सिर्फ बचपना ही नहीं है, एक तरह से हममें अपरिपक्व बुढ़ापा भी है। हमें बुढ़ापा और बचपना ऐसे आता है जैसे अन्य लोगों को नहीं आता है। हमारी कोई युवावस्था नहीं आती, हम शीघ्र ही बड़े हो जाते हैं और फिर हम लंबी अवधि तक वयस्क ही रहते हैं। इससे उपजी थकान और निराशा के कारण हमारे व्यक्तियों के स्वभाव में एक व्यापक निशानी छोड़ देता है, जो इस आशा में कि यह सामान्य है, कठोर और मजबूत हो जाता है। हममें संगीतमय उपहारों की कमी का निश्चित रूप से इससे कुछ संबंध है। संगीत, इसकी उत्तेजनाओं के लिए हम बहुत बड़े हो चुके हैं। इसका हर्षोन्माद हमारे भारीपन के अनुकूल नहीं होता है, हम थके अंदाज में इसे हाथ हिलाकर स्वीकार करते हैं; हम बाँसुरी वादन से ही स्वयं को संतुष्ट करते हैं। थोड़ा-बहुत इधर-उधर बाँसुरी वादन ही हमारे लिए बहुत है। किसे मालूम कि ठीक हमारे अंदर भी संगीत के लिए प्रतिभा है। यदि वे होते भी होंगे तो हमारे लोगों का चरित्र उसे निखरने से पहले ही कुचल देता है। दूसरी ओर जोसफिन तब तक बाँसुरी वादन करती है या गाती है या वह इसे जो भी कहना चाहती है कर सकती है, जब तक वह चाहती है। इससे उसे कोई व्यवधान नहीं आता है और यह हमारे लिए अनुकूल होता है और हम यह अच्छी तरह सहन कर सकते हैं। इसमें जो भी संगीत होगा वह तो कम-से-कम संभव अवशेषों में बदल गया है। संगीत की एक निश्चित परंपरा सुरक्षित है, फिर भी इसके प्रति हमारे अंदर थोड़ी भी रुचि नहीं है।

फिर भी हमारे लोग जैसे भी हैं, उन्हें जोसफिन से इससे ज्यादा ही प्राप्त होता है। उसके संगीत कार्यक्रमों में

विशेषकर तनाव के समय में, उसके गायन में, गायन के रूप में केवल अति वयस्क लोग ही रुचि लेते हैं, सिर्फ वे ही अचरजभरी टकटकी के साथ उसे टकटकी लगाकर देखते रहते हैं। जब वह अपने होंठ हिलाती है, सामने के छोटे-छोटे दाँतों के बीच से हवा निकालती है, उसके मुख से निकलनेवाली आवाज पर अत्यंत अचरज के साथ आहें भरते हैं। इस प्रकार की सराहना के बाद उसका प्रदर्शन नई एवं विश्वसनीय ऊँचाइयों को छू जाता है, जब लोगों का वास्तविक समूह, जिसे देखना आसान है, बहुत ही अंतर्मुखी और खुद में सिमट जाता है। हमारे लोग अपने संघर्ष के लघु अंतराल के बीच में सपने देखते हैं; यह ऐसा ही है जैसे मानो सभी के अंग ढीले पड़ गए हैं; मानो परेशान इनसान समुदाय के बड़े, गरम बिछावन पर एकाध बार विश्राम ले सकता है तथा आराम से अँगड़ाई ले सकता है। इन सपनों में जोसफिन का बाँसुरी वादन एक-एक स्वर करके आता है; वह इसे कहती है, मोती की तरह, हम इसे असंबद्ध करते हैं। लेकिन जो भी हो यह यहाँ अपने सही जगह पर है, क्योंकि कहीं भी इसके लिए क्षणों को प्रतीक्षा में पाना संगीत में ऐसा शायद ही होता है। हमारे संक्षिप्त कमजोर बचपन की भी इसमें कुछ भूमिका है, खोई हुई खुशी को जिसे दुबारा कभी नहीं प्राप्त किया जा सकता है, हमारे सक्रिय दैनिक जीवन इसकी छोटी-छोटी खुशियों का भी, जो इसके लिए जवाबदेह तो नहीं है, फिर भी आती रहती हैं, जिसे मिटाया नहीं जा सकता है। और वास्तव में यह सब कुछ व्यक्त किया जाता है, स्पष्ट शब्दों में नहीं, लेकिन धीमी, फुसफुसाहटभरी आवाज में गुप्त रूप से और कभी-कभी थोड़ा भद्देपन से भी। निस्संदेह यह एक प्रकार का बाँसुरी वादन है, क्यों नहीं? बाँसुरी की आवाज हमारे लोगों की दैनिक बात है। कुछेक लोग ही अपनी पूरी जिंदगी बाँसुरी बजाते हैं और इसके बारे में जानते नहीं, जबकि यहाँ बाँसुरी की आवाज दैनिक जीवन की बेड़ियों से मुक्त है तथा हमें भी यह कुछ देर के लिए मुक्त कर देती है। निश्चित रूप से हमें इन प्रदर्शनों के बिना नहीं करना चाहिए।

इस दृष्टिकोण से तो यह जोसफिन के दावे से बहुत दूर है कि वह हमें नई शक्ति आदि देती है। कम-से-कम साधारण लोगों के लिए, न कि उसके चाटुकारों के लिए। ''इसकी और दूसरी व्याख्या क्या हो सकती है?'' निर्लज्ज धृष्टता के साथ वे कहते हैं, ''और किस तरह से आप महान् श्रोताओं को समझा सकते हैं, विशेषकर जब खतरा अवश्यंभावी है, जिसने कि खतरों को टालने के लिए ली गई उचित सावधानियों को भी प्रायः काफी बाधित किया है।'' दुर्भाग्यवश अब यह अंतिम कथन सच है, लेकिन इसे शायद ही जोसफिन की प्रसिद्धि की एक पंक्ति के रूप में गिना जा सकता है। विशेषकर इस बात को ध्यान में रखते हुए जब कि शत्रुओं द्वारा अनपेक्षित रूप से ऐसी बड़ी भीड़ को हटाया गया और हमारे बहुत सारे लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया गया, जोसफिन, जो कि इन सब चीजों के लिए उत्तरदायी थी तथा वास्तव में उसने ही अपनी बाँसुरी की आवाज द्वारा लोगों को आकर्षित किया था, हमेशा सबसे सुरक्षित स्थान पर चली जाती और अपने पहरेदारों की सुरक्षा में तेजी से तथा चुपचाप भागनेवालों में वह सबसे पहले होती। फिर भी, सभी कुछ सबको मालूम है और फिर भी लोग उन जगहों पर दौड़ते रहते हैं, जहाँ अगली बार जाने का जोसफिन निर्णय करती है या किसी भी समय जब वह गाने के लिए तैयार होती है। इस आधार पर कोई भी यह तर्क दे सकता है कि जोसफिन कानून से बाहर है, वह जो चाहे कर सकती है, वास्तव में समुदाय को संकट में डालने के खतरे पर भी और उस सब कुछ के लिए माफ भी कर दिया जाएगा। यदि यह सही है तो जोसफिन का दावा पूरी तरह समझ में आने योग्य है, हाँ, उसे दी जानेवाली इस स्वतंत्रता में, उसे दिए जानेवाले इस अद्भुत उपहार, जो किसी और को नहीं दिया गया है, यह कानून का स्पष्ट उल्लंघन है। इस बात की स्वीकृति में भी इसके संकेत मिलते हैं कि लोग जोसफिन को नहीं समझते हैं, जैसा कि वह आरोप लगाती है, कि वे उसकी कला पर मुग्ध हैं तथा स्वयं को ऐसे प्रदर्शनों के लिए उपयुक्त नहीं मानते हैं; एवं वह उनमें दया की उस भावना को शांत करने की कोशिश करती है जो कि उन लोगों ने उसके लिए हताशा त्याग करके किए हैं, जो कि

जोसफिन को उसने ही उनमें उत्पन्न किए हैं।

उसी हद तक उसकी कला भी उनकी समझ से बाहर है। उन लोगों के क्षेत्राधिकार से बाहर होने के उसके व्यक्तित्व एवं उनके सीमा क्षेत्र से बाहर झूठ बोलने की उसकी इच्छाओं पर विचार कीजिए। ठीक है, सीधे-सीधे यह बिल्कुल सच नहीं है, व्यक्तिगत रूप से लोग आसानी से जोसफिन के सामने समर्पण कर सकते हैं, लेकिन एक समूह के रूप में वे बिना शर्त किसी के सामने भी समर्पण नहीं करते हैं; और उसके सामने भी नहीं। बहुत समय पहले से शायद अपने इस कलात्मक जीवन के आरंभिक समय से ही जोसफिन दैनिक कामों में अपने गायन की वजह से खुद को अलग किए जाने के लिए संघर्ष करती रही है। अपने दिन-प्रतिदिन की जरूरतों को खुद प्राप्त तथा अस्तित्व में सामान्य संघर्ष में सम्मिलित होने के कारण उसे सारी जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया जाना चाहिए, जो कि स्पष्टत: उसकी ओर से सारे लोगों को हस्तांतरित कर दिया जाना चाहिए। एक सरल उत्साही, ऐसे बहुत रहे भी हैं, इस प्रकार की माँग की असामान्यता के प्रति बहस कर सकते हैं; तथा इस प्रकार की माँग को प्रस्तुत किए जाने के लिए आवश्यक दृष्टिकोण से, इसमें आंतरिक औचित्य भी है। लेकिन हमारे लोग दूसरे निष्कर्ष निकालते हैं और इसे चुपचाप इनकार कर देते हैं। वे उस धारणा को अस्वीकृत करने के लिए भी ज्यादा प्रयास नहीं करते हैं, जिस पर यह आधारित है। जोसफिन तर्क देती है, उदाहरण के लिए कि काम का तनाव उसकी आवाज के लिए नुकसानदेह है तथा काम का तनाव निश्चित रूप से आवाज के तनाव की तुलना में तो कुछ भी नहीं है, फिर भी यह उसे गायन के बाद पर्याप्त रूप से आराम करने तथा और अधिक गायन के लिए स्वयं को ठीक होने से रोकती है। उसे पूर्ण रूप से अपनी शक्ति को खत्म कर देना पड़ता है और फिर इन परिस्थितियों में तो वह कभी भी अपनी क्षमताओं के शीर्ष पर नहीं पहुँच सकती। लोग उसके तर्क सुनते हैं, लेकिन उस ओर कोई ध्यान नहीं देते हैं। हमारे लोग, जो इतनी आसानी से प्रभावित हो जाते हैं, कभी-कभी तो बिल्कुल ही प्रभावित नहीं होते हैं। कभी-कभी तो उनकी अस्वीकृति इतनी दृढ़ होती है कि जोसफिन भी भौंचक्का रह जाती है, वह इस बात के लिए सहमत होती हुई प्रतीत होती है, काम में अपना उचित हिस्सा करने, जितना अच्छा गा सकती है, गाने के लिए तैयार प्रतीत होती है, लेकिन कुछ ही समय के लिए, फिर अपनी नई शक्ति, इस उद्देश्य के लिए उसकी शक्ति अनंत प्रतीत होती है, एक बार फिर संघर्ष शुरू कर देती है।

अब तो यह स्पष्ट है कि जोसफिन जो बोलती है, वास्तव में वह, चाहती नहीं है। वह सम्माननीय है, वह काम से भागनेवाली नहीं है, किसी भी स्थिति में पीछे हटना हमने कभी उसे ऐसा देखा ही नहीं, यदि उसका आग्रह स्वीकार भी कर लिया जाता है तो भी निश्चित रूप से वह वैसा ही जीवन जीती रहेगी जैसा वह पहले जीती रही है, उसका काम बिल्कुल भी उसके गायन के रास्ते में नहीं आएगा और उसके संगीत में भी कोई सुधार नहीं आएगा, जो वह चाहती है वह अपनी कला की सार्वजनिक, असंदिग्ध और स्थायी पहचान, अब तक ज्ञात सभी उदाहरणों से भी आगे। लेकिन जबकि सबकुछ लगभग उसकी पहुँच में लगता है, यह लगातार उसके नियंत्रण से बाहर है। शायद शुरू से ही उसे आक्रमण का दूसरा तरीका अपनाना चाहिए था, शायद उसे भी मालूम है कि उसका रास्ता गलत है। लेकिन अब वह पीछे भी नहीं हट सकती है, पीछे हटने का मतलब खुद को धोखा देना होगा। उसे या तो अपने आग्रह के साथ दृढ़ता से डट जाना चाहिए या उसकी पराजय मान लेनी चाहिए।

यदि सचमुच में उसके शत्रु थे, जैसा कि वह कहती है, इस संघर्ष को देखने से बिना उँगली उठाए उन्हें कहीं अधिक आनंद मिलेगा। लेकिन उसका कोई शत्रु नहीं है। प्राय: इधर-उधर उसकी आलोचना होती भी है, उसका यह संघर्ष लोगों के लिए एक मनोरंजन है। सिर्फ इस कारण से कि यहाँ लोग अपने आपको निरुत्साही, उचित पहलू दिखाते हैं, जो कि अन्यथा शायद ही हम में देखने को मिलता है। और जो कुछ भी हो, यदि कोई इस मामले में इसे

स्वीकृति दे भी देता है, तो सिर्फ यही विचार कि इस प्रकार का पहलू स्वयं के लिए ही उपयुक्त नहीं हो सकता है तथा मनोरंजन में सुधार करने से रोक सकता है। लोगों की अस्वीकृति एवं जोसफिन के आग्रह में काररवाई महत्त्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह बात है कि लोग अपने ही एक-एक सदस्य के प्रति कठोर, अमेद्य मोरचा खोलने में समर्थ हैं, और वह भी यह और भी अधिक अमेद्य है, क्योंकि अन्य मामलों में तो वे अभिभावकीय चिंताएँ दरशाते हैं और यह इस अभिभावकीय चिंताओं से भी ज्यादा है।

मान लो कि इन लोगों की बजाय यदि किसी को किसी व्यक्ति से निपटना है तो वह यह कल्पना कर सकता है कि वह व्यक्ति तो हमेशा ही जोसफिन के सामने समर्पण करता रहा है और किसी दिन अपने इस समर्पण का अंत करने की एक अविवेचित इच्छा भी उसके मन में रहती है। उसने जोसफिन के लिए अतिमानवीय त्याग इस दृढ़ विश्वास के कारण किए कि त्याग की उसकी क्षमता की एक स्वाभाविक सीमा है; हाँ, उसने जरूरत से ज्यादा त्याग सिर्फ इसलिए किए, ताकि इस प्रक्रिया को तीव्र कर सके, सिर्फ इसलिए कि जोसफिन को बरबाद कर दें और उसे और अधिक की माँग के लिए प्रेरित कर दे ताकि वह अपने आग्रह की अंतिम सीमा तक न पहुँच जाए, और अंतिम अस्वीकृति के बाद अपनी माँगें वापस ले ले, जो कि रूखा है कि और बहुत पहले से ही यह सुरक्षित था। अब जबकि यह निश्चित रूप से नहीं मालूम कि मामला क्या है, लोगों को ऐसे छल की जरूरत ही नहीं है, इसके अलावा जोसफिन के प्रति उनका सम्मान अच्छी तरह से आजमाया हुआ और सच्चा है तथा जोसफिन की माँगें सबसे बढ़कर उतनी व्यापक हैं कि एक छोटा सा बच्चा भी यह कह सकता है कि इसके परिणाम क्या होंगे; फिर भी हो सकता है कि अपनी बातों को आगे बढ़ाने के क्रम में जोसफिन के दिमाग में ये बातें आएँ तथा अस्वीकार किए जाने की पीड़ा में और तीखापन भर दें।

लेकिन इस विषय पर उसके जो भी विचार हों, वे उन्हें आंदोलन की अपनी राह में बाधा नहीं बनने देती है; हाल में उसने अपने आक्रमण को और भी तेज कर दिया है; अभी तक तो उसने हथियार के रूप में केवल शब्दों के ही प्रयोग किए थे, लेकिन अब उसने अन्य माध्यमों का भी सहारा लेना शुरू कर दिया है, उसे लगता है कि ये अधिक प्रभावी होंगे तथा हमें लगता है कि इससे उसकी परेशानी और ज्यादा बढ़ेगी।

कुछ लोगों का मानना है कि जोसफिन अ़डियल होती जा रही है, क्योंकि उसे लगता है कि उसकी उम्र बढ़ रही है और उसकी आवाज खराब होती जा रही है। इसलिए उसे लगता है कि मान्यता के लिए लड़ने का यह सही समय है। मैं यह नहीं मानता। अगर इसे सही मान लें तो फिर जोसफिन, जोसफिन नहीं रहेगी। उसके लिए उम्र का बढ़ना कोई अर्थ नहीं रखता और उसकी आवाज कभी खराब नहीं होगी। यदि वह माँगें करती है तो यह बाहरी परिस्थितियों के कारण नहीं, बल्कि आंतरिक तर्क के कारण। वह सबसे ऊँचे माले के लिए जाती है कि वह क्षणिक रूप से नीचे लटक रहा है, बल्कि यह सबसे ऊँचा है इसीलिए वह जाती है। इसलिए यदि उसकी कोई भूमिका होती तो यह उसके लिए अभी भी ऊँचा ही होता।

बाह्य कठिनाइयों के प्रति यह तिरस्कार, निश्चित रूप से, उसे सबसे घृणित तरीके अपनाने से भी नहीं रोकता है। उसे अपना अधिकार किसी भी सीमा से परे लगता है; इसलिए इस बात का क्या महत्त्व है कि वह उन्हें कैसे प्राप्त करती है। ईमानदार तरीकों का असफल होना तो लगभग निश्चित है। शायद इसीलिए उसने अधिकार की इस लड़ाई को गाने के क्षेत्र से हटाकर किसी अन्य क्षेत्र में कर दिया है और वह इसकी परवाह भी नहीं करती। उसे अपने समर्थकों का भी समर्थन प्राप्त है; उसके अनुसार वह स्वयं को ऐसे गाने गाने में समर्थ समझती है, जिससे जनता के सभी वर्गों को वास्तविक आनंद मिले, लोकप्रिय स्तर के आधार पर ही वास्तविक आनंद नहीं, बल्कि लोग यह बात स्वयं स्वीकार करें कि उन्हें उसके गाने में आनंद मिला, उसके अपने स्तर के हिसाब से आनंद। जो भी हो, आगे

वह कहती है, चूँकि वह श्रेष्ठ स्तर को झूठा नहीं कर सकती है, और निम्नतम स्तर को बढ़ावा भी नहीं दे सकती हैं, उसका गायन जैसा है उसे वैसा ही रहना पड़ेगा। लेकिन जब उसके काम से उसे छूट मिलने के उसके आंदोलन की बात होती है तो हमें एक दूसरी कहानी दिखाई पड़ती है। निश्चित रूप से उसके गायन की ओर से भी यह एक आंदोलन है। लेकिन वह प्रत्यक्षत: अपने बहुमूल्य अस्त्र गायन की सहायता से नहीं लड़ रही है, इसलिए वह जिस अस्त्र का भी प्रयोग करती है वह काफी है। अतएव, उदाहरण के लिए, यह अफवाह फैली कि यदि जोसफिन की प्रार्थना पूरी नहीं की गई तो वह उसे छोटा कर देगी। जोसफिन की प्रार्थना के बारे में मैं कुछ नहीं जानता और मैंने उसके गायन में भी कभी यह नहीं पाया। लेकिन जोसफिन और प्रार्थना नोट छोटा करने जा रही है, अभी नहीं, उन्हें पूरी तरह से हटाने नहीं, बल्कि वह उन्हें सिर्फ छोटा करेगी। अनुमानत: उसने अपनी धमकी जारी कर दी है, यद्यपि कि मैंने उसके प्रदर्शन में कभी कोई अंतर नहीं पाया है। संपूर्ण रूप से सभी लोग प्रार्थना टिप्पणी के विषय में किसी प्रकार की टिप्पणी किए बिना ही उसे हमेशा की तरह सुनते हैं और न उनकी उसकी प्रार्थना पर प्रतिक्रिया में रत्तीभर भी परिवर्तन आया है। यह स्वीकार करना चाहिए कि जोसफिन की काया की तरह ही उसका सोचने का ढंग भी प्राय: बहुत आकर्षक होता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, उस प्रस्तुति के बाद, प्रार्थना टिप्पणी पर उसके निर्णय अतितीव्र थे या लोगों के विरुद्ध एक अचानक कदम, उसने घोषणा की कि अगली बार फिर वह अपनी सभी प्रार्थना टिप्पणी प्रस्तुत करेगी। फिर अगली प्रस्तुति के बाद उसने एक बार फिर अपना निर्णय बदल लिया। निश्चित रूप से प्रार्थना टिप्पणी के साथ ही इन बड़े तानों का भी अंत होनेवाला है, अब जब तक कि उसकी प्रार्थना पर सहानुभूतिपूर्वक विचार नहीं किया जाता, वे फिर कभी नहीं प्रस्तुत किए जाएँगे। ठीक है, लोग ऐसी घोषणाएँ, निर्णयों एवं विपरीत निर्णयों को एक कान से सुनते हैं और दूसरे से निकाल देते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कि एक वयस्क विचारमग्न व्यक्ति बच्चे की बक-बक के प्रति अनजान होते हैं, मौलिक रूप से तो सहमत लेकिन सुलभ नहीं।

जो भी हो, जोसफिन ने भी समर्पण नहीं किया था। उदाहरण के लिए, दूसरे दिन उसने दावा किया कि काम के दौरान उसके पैर में चोट लग गई, इसलिए गाने के लिए खड़ा होना उसके लिए मुश्किल हो गया, लेकिन चूँकि सिवाय खड़े होने के वह गा नहीं सकती थी, तो अब उसके गानों को छोटा करना पड़ेगा। यद्यपि कि वह लँगड़ाती है और अपने समर्थकों का सहारा लेती है फिर भी कोई यह विश्वास नहीं करता कि उसे चोट लगी है। मान लेते हैं कि उसका कमजोर शरीर अतिसंवेदनशील है, और वह हम में से एक है तथा हम कामगारों की एक प्रजाति हैं। यदि हर बार खरोंच लगने पर हम लँगड़ाना शुरू कर दें तो सभी लोग कभी भी लँगड़ाना नहीं छोड़ेंगे। फिर भी यदि वह एक अपंग की तरह पीछे-पीछे चलती है, यद्यपि वह स्वयं को इस दयनीय स्थिति में प्राय: प्रस्तुत करती है, फिर भी लोग सहृदयता एवं प्रशंसा के साथ उसके गाने उसी तरह सुनते रहेंगे, जैसे पहले सुनते रहे हैं, लेकिन उसके गानों के छोटा होने से ज्यादा परेशान मत हो।

चूँकि वह हमेशा ही लँगड़ाकर नहीं चल सकती, तो वह कुछ अन्य चीजों के बारे में सोचती है। वह बहाना करती कि वह थकी है, गाने के मूड में नहीं है, बेहोशी महसूस कर रही है। इस तरह हमें नाटकीय प्रस्तुति भी मिलती है, संगीत समारोह के साथ-साथ। पृष्ठभूमि में हम उसके समर्थकों को गाने का आग्रह करते हुए देखते हैं। वह उनके आग्रह को मानकर खुश होगी, मगर वह ऐसा कर नहीं सकती। वे उसकी खुशामद करते हैं, उसे राहत दिलाते हैं तथा उसे लगभग उठाकर उस जगह ले जाते हैं, जहाँ उसके गाने का प्रोग्राम है। अंत में, वह बिना किसी स्पष्टीकरण के फूट-फूटकर रोने लगती है और मान जाती है, जब वह गाने के लिए खड़ी होती है तो स्पष्टत: अपने संसाधनों के अंत में, थकी, उसके बाजू हमेशा की तरह खुले नहीं, बल्कि बेजान रूप से नीचे लटकते हुए, ताकि

किसी को भी यह लगे कि वे शायद बहुत ही छोटे हैं, जैसे ही वह प्रहार करने का प्रयास करती है, लेकिन वह ऐसा कर नहीं सकती है, अनिच्छापूर्वक सिर को हिला कर वह हमें यह बताती है और फिर हमारे सामने ही वह बिखर जाती है। विश्वास कीजिए, एक बार फिर वह स्वयं को संयमित करती है और फिर गाती है। मैं हमेशा की तरह ही कल्पना करता हूँ; यदि किसी में भी अभिव्यक्ति के श्रेष्ठ रंगों को पहचानने की क्षमता है, तो कोई भी सुन सकता है कि वह अद्‌भुत भावनाओं के साथ गा रही थी, जो कि जो भी हो, भलाई के लिए था। अंत में, वह वास्तव में पहले की तुलना में कम थकी हुई थी। दृढ़ कदमों के साथ, यदि कोई उसके लड़खड़ाहट भरे कदमों के लिए यह शब्द प्रयोग कर सकता है तो, अपने समर्थकों की सहायता के सभी प्रस्तावों को नकारते हुए और भावनारहित नजरों से भीड़ को भाँपते हुए, जो कि सम्मानपूर्वक उसके लिए रास्ता बनाती है, वह चली गई।

यह एक-दो दिन पहले घटित हुआ। नवीनतम यह है कि वह गायब हो गई है, ठीक उस समय जब कि उसे गाना था। ऐसा नहीं है कि सिर्फ उसके समर्थक ही उसे ढूँढ़ रहे हैं, कई तो उसकी तलाश में ही जुट गए हैं, लेकिन सब बेकार। जोसफिन गायब हो गई है, वह नहीं गाएगी, उसे गाने के लिए चुमकारा भी नहीं जा सकता है। इस बार तो उसने हमें पूरी तरह से छोड़ दिया है।

उत्सुक, अपनी गणनाओं में वह कितनी गलत साबित हुई, चालाक प्राणी, इतनी गलत कि कोई भी समझेगा कि उसने कोई गणना बिल्कुल भी की ही नहीं, या तो उसका भाग है जो उसे आगे ले जा रहा है, जो कि हमारे संसार में उदासी के सिवा और कुछ नहीं है। अपनी इच्छा से उसने गाना छोड़ा, अपनी इच्छा से उसने अपनी उस शक्ति को नष्ट किया, जो उसने लोगों के दिलों पर प्राप्त किया था। वह कभी भी इतनी शक्ति कैसे प्राप्त कर सकती थी, जबकि वह हमारे लोगों के इन दिलों के बारे में इतना कम जानती है? वह अपने को छुपाती है और गाती भी नहीं है, लेकिन हमारे लोग खामोशी से, बिना स्पष्ट निराशा के पूर्ण संतुलन में एक अहम् विश्वास से पूर्ण समूह, इस प्रकार निर्मित, कि यद्यपि चेहरे गुमराह कर सकते हैं, कि केवल उपहार देते हैं तथा पाते नहीं हैं, यहाँ तक कि जोसफिन से भी नहीं, हमारे लोगों का यही ढंग जारी है।

जो भी हो, जोसफिन के रास्ते, नीचे जाना चाहिए। जल्द ही वह समय आएगा जब उसके अंतिम स्वर भी मिट जाएँगे और खामोश हो जाएँगे। हमारे लोगों के अनंत इतिहास में वह एक छोटा सा खंड है और लोग भी उसकी कमी से उबर जाएँगे। ऐसा नहीं है कि यह हमारे लिए आसान है। बिल्कुल खामोशी में हमारा जमघट कैसे हो सकता है? फिर भी क्या वे तब खामोश नहीं थे, जब जोसफिन मौजूद थी? क्या उसकी वास्तविक बाँसुरी की आवाज इसकी याद की तुलना में महत्त्वपूर्ण रूप से ज्यादा ऊँची और सजीव नहीं थी? क्या यह उसके जीवनकाल में भी एक आम याद से ज्यादा थी? क्या यह अपेक्षाकृत इस कारण नहीं कि जोसफिन का गायन पहले ही उस मार्ग में कहीं गुम हो रहा था, जो हमारे लोग अपनी बुद्‌धि के आधार पर इतना ज्यादा महत्त्व देते थे?

इसके हर कुछ के बावजूद भी हम शायद बहुत कुछ नहीं खोएँगे, जबकि जोसफिन, सांसारिक दु:खों से मुक्त, जो उसके अनुसार सभी चयनित आत्माओं की प्रतीक्षारत था, स्वयं को खुशी-खुशी हमारे लोगों के असंख्य योद्‌धाओं की भीड़ में विलीन कर लेगी और शीघ्र ही, चूँकि हम इतिहासकार नहीं हैं, मुक्ति की ऊँचाइयों पर उदित होगी तथा अपने सभी भाइयों की तरह भुला दी जाएगी।

❑

निर्णय

रविवार की सुबह और वसंत ऋतु अपने उत्कर्ष पर थी। प्रथम मंजिल के अपने कमरे में युवा नाविक जार्ज बेंडेमान बैठा था। यह मकान नदी के किनारे बने जर्जर मकानों की एक लंबी शृंखला में से एक था। इन मकानों में ऊँचाई और रंग के सिवा अंतर करना बहुत मुश्किल था। उसने अभी भी अपने पुराने मित्र को लिखे पत्र को पूरा ही किया जो विदेश में रहता था और उस पत्र को धीरे एवं आरामदायक ढंग से लिफाफे में रखा तथा अपनी कोहनी को राइटिंग टेबल पर टिकाकर वह खिड़की के बाहर नदी के सुदूर किनारे पर पुल एवं उन पर फैली कोमल घासों को देख रहा था।

वह अपने मित्र के बारे में सोच रहा था, जो घर पर उपलब्ध संभावनाओं से असंतुष्ट होकर रूस भाग गया था। अब वह पीट्सबर्ग में अपना व्यवसाय कर रहा था, जो अब समृद्ध होना शुरू हो गया था, लेकिन फिर बहुत पहले ही इसमें गिरावट आने लगी, क्योंकि वह हमेशा ही आगंतुकों की लगातार गिरती संख्या के बारे में शिकायत करता रहता था। इसलिए बिना किसी कारण के वह विदेशी भूमि पर खुद को बरबाद कर रहा था, वह अनजान भरी हुई दाढ़ी रखता था, फिर भी वह उसके उस चेहरे को अच्छी तरह नहीं छुपा सकता था, जिससे जार्ज बचपन से ही परिचित था और उसकी त्वचा इतनी पीली होती जा रही थी कि लगता था कि उसे कोई गुप्त बीमारी हो गई है। उसके अपने कारण से उसका अपने देशवासियों की कॉलोनी में किसी से कोई संपर्क नहीं था तथा रूसी परिवार के साथ भी लगभग नगण्य सामाजिक संपर्क था। इसलिए उसने स्वयं को एक स्थायी अविवाहित बनने के लिए समर्पित कर दिया।

ऐसे व्यक्ति को क्या लिखा जा सकता है, जो स्पष्ट रूप से खुद ही भाग गया हो, एक ऐसा व्यक्ति जिसके लिए दु:ख होता है, लेकिन उसकी मदद नहीं की जा सकती है। क्या किसी को उसे घर वापिस आने, स्वयं को प्रतिरोपित करने, पुराने दोस्तों से दुबारा से जुड़ने की, उसके सामने कोई बाधा नहीं थी, तथा सामान्य रूप से दोस्तों से मिलनेवाली सहायता पर भरोसा करने की सलाह देनी चाहिए? लेकिन यह उतना ही अच्छा है, जितना उसे कहना, और जितना ही दयालुता से कहना उतना ही बुरा लगना, आज तक तो उसके सभी प्रयास असफल ही रहे थे और अंत में अब उसे हार मान लेनी चाहिए तथा घर वापिस आ जाना चाहिए। उसे एक वापिस आए फिजूलखर्च की तरह खुद को लोगों द्वारा ताके जाने देना चाहिए। यह तो सिर्फ उसके दोस्तों को ही पता था कि क्या-क्या था और वह स्वयं भी एक बड़ा बच्चा था, जिसे वही करना होता था जो उसके सफल तथा निकट मित्र उसे कहते थे। इसके अलावा क्या यह निश्चित था कि उसको दी गई प्रताड़ना एक दिन अपना लक्ष्य प्राप्त करेगी? शायद घर वापिस आना भी संभव न हो, बल्कि घर आना बिल्कुल ही संभव न हो। उसने स्वयं ही कहा कि अपने ही देश में अब उसे वाणिज्य के बारे में भी कोई जानकारी नहीं थी और विदेशी भूमि पर अपने दोस्तों की सलाह से परेशान वह अभी भी एक अजनबी की तरह रहेगा तथा हमेशा से ज्यादा उनसे अलगाव रहेगा। लेकिन उसने उनकी सलाह नहीं मानी और घर के लिए भी उपयुक्त नहीं बना, निस्संदेह घृणा के कारण नहीं, बल्कि परिस्थितियों के दबाव में, उनके अनुसार नहीं चल पाया और उनके बिना, अपमानित महसूस करता था यह भी नहीं कह सकता था कि अब उसके दोस्त भी हैं या अपना कोई देश भी है, क्या उसके लिए विदेश में ही रह जाना अच्छा नहीं था जैसा कि वह रह रहा था? इन सारी बातों के मद्देनजर कोई भी इस बात के प्रति आश्वस्त कैसे हो सकता था कि घर पर वह जीवन में सफल होगा?

इन्हीं कारणों से, मानो कोई उसके साथ पत्राचार जारी रखना चाहता भी था तो कोई उसे सच्ची खबर नहीं दे

सकता था, जो कि बहुत दूर के परिचित को भी आसानी से कहा जा सकता है। उसे यहाँ आए हुए तीन साल बीत गए थे और इसके लिए उसने यह झूठा बहाना बनाया कि रूस की स्थिति ही बहुत अनिश्चित थी, जो प्रकटत: एक छोटे व्यापारी को भी थोड़े समय के लिए भी अनुपस्थित होने की अनुमति नहीं देगी, जबकि उस सरकार ने हजारों रूसवासियों को शांतिपूर्वक विदेश भ्रमण की अनुमति दी। लेकिन इन तीन वर्षों में ही जार्ज की अपनी ही स्थिति बहुत बदल गई थी। दो वर्ष पहले उसकी माँ मर गई, तब से वह तथा उसके पिता ने मिलकर घरेलू कामकाज एक साथ किए और निस्संदेह उसके दोस्तों को इसकी सूचना थी, और पत्र के माध्यम से अपनी सहानुभूति भी प्रकट की थी, लेकिन पत्र की भाषा इतनी रूखी थी कि ऐसी घटना से उत्पन्न शोक, एक सुदूर देश में बैठा व्यक्ति महसूस नहीं कर सकता था, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है। उस समय से ही जार्ज ने और अधिक संकल्प के साथ व्यापार तथा अन्य कामों में खुद को लगाया।

शायद उसकी माँ के जीवनकाल से ही उसके पिता की व्यापार में हर काम अपनी मरजी से करने की जिद के कारण ने शायद उसकी अपनी सही गतिविधि के विकास को बाधित किया, शायद उनकी मृत्यु के बाद से ही उसके पिता कम आक्रामक हो गए हैं, यद्यपि व्यापार में तो वे अभी भी सक्रिय थे। शायद इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि संयोगवश व्यापार बहुत चल निकला, बल्कि इसकी बहुत संभावना थी। चाहे जो भी कारण हो, इन दो वर्षों में व्यापार में अत्यधिक अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई, कामगारों की संख्या भी दुगुनी करनी पड़ी, कुल बिक्री पाँच गुनी हो गई, इसमें कोई संदेह नहीं, आगे बहुत उन्नति होनी है।

लेकिन जार्ज के दोस्तों को उसकी उन्नति का तनिक भी आभास नहीं था, पूर्व के वर्षों में, शायद अंतिम बार अपने शोक पत्र में रूस प्रस्थान कर जाने के लिए मनाने की कोशिश की थी तथा व्यापार की उस शाखा, जिसमें जार्ज सक्रिय था, उसकी रूस में सफलता की संभावनाओं का बखान किया था। जार्ज के वर्तमान व्यापार की सीमा की तुलना में उद्धृत किए गए आँकड़े अत्यंत छोटे थे, लेकिन फिर भी वह अपने दोस्तों को अपने व्यापार की सफलता के बारे में बताने से कतराता था। यदि अब वह अतिलक्षणी ढंग से ऐसा करना भी चाहे तो वह निस्संदेह अजीब लगेगा।

इसलिए जार्ज अब अपने दोस्तों को बातचीत के मामूली आइटमों के बारे में, जैसे कि स्मृति में अचानक सुधार, जबकि कोई रविवार के दिन चुपचाप बैठा कुछ सोच रहा था, बताने तक सीमित कर लिया था। जो वह चाहता था, वह यह था कि उसके अपने शहर के प्रति विचार को कोई व्यवधान न डाले, जो कि उसके दोस्तों ने अपनी संतुष्टि के लिए लंबे अंतराल के दौरान बनाया होगा। इसलिए जार्ज के साथ ऐसा हुआ कि उसने तीन बार अपने तीन अलग-अलग पत्रों में अपने दोस्त को एक मामूली आदमी का एक समान रूप से मामूली लड़की के साथ सगाई के बारे में बताया था, तब तक वास्तव में, उसके इरादों के विपरीत उसके दोस्त ने इस महत्त्वपूर्ण घटना में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी।

फिर भी जार्ज ऐसी चीजों के बारे में ही लिखना पसंद करता था, न कि यह कि उसने भी एक माह पहले एक समृद्ध परिवार की लड़की फ्राउलेन फरीदा ब्रानडेनफेल्ड के साथ सगाई कर ली थी। प्राय: वह अपने इस मित्र के साथ पत्राचार में अपनी मंगेतर तथा उनके बीच विकसित होनेवाले विचित्र संबंधों के बारे में चर्चा करता था। ''इसलिए वह हमारी शादी में नहीं आ रहा,'' उसने पूछा, ''और फिर मुझे आपके सभी दोस्तों के बारे में जानने का अधिकार है।'' ''मैं उसे परेशान करना नहीं चाहता,'' जार्ज ने जवाब दिया, ''मुझे गलत मत समझना,'' शायद वह आ भी जाए, कम-से-कम मैं तो यह सोचता हूँ, लेकिन वह सोचेगा कि उसे मजबूर किया गया है और इससे वह आहत महसूस करेगा, शायद उसे मुझसे ईर्ष्या भी हो और निश्चित रूप से वह असंतुष्ट होगा तथा अपने असंतोष के

बारे में कुछ भी करने में समर्थ हुए बिना ही उसे पुन: अकेले ही जाना पड़ेगा। ''अकेला! क्या तुम्हें मालूम है इसका क्या अर्थ है?'' ''हाँ, लेकिन ऐसा न हो कि उसे हमारी शादी के बारे में किसी और ढंग से पता चले?'' निस्संदेह मैं यह रोक नहीं सकता, क्योंकि वह जिस तरह रहता है, उस पर विचार करते हुए लेकिन यह असंभव है। ''जार्ज, चूँकि आपके दोस्त ऐसे तुम्हें सगाई कभी करनी ही नहीं चाहिए थी।'' ठीक, इसके लिए हम दोनों ही दोषी हैं; लेकिन अब इसका कोई उपाय भी नहीं है। और जब, उसके चुंबन के कारण वह तेज-तेज साँस लेने लगती है, तो वह फिर कहती है, ''उसी तरह मैं भी परेशान महसूस करती हूँ। उसने सोचा कि इससे शायद उसे परेशानी न हो, यदि वह खबर अपने दोस्त को दे दे तो।'' मैं तो इसी तरह का आदमी हूँ और मैं जैसा हूँ उसे उसी तरह लेना पड़ेगा, उसने अपने आप से कहा, ''मैं स्वयं को दूसरे ढाँचे में नहीं ढाल सकता, जिससे हो सकता है कि उसे एक योग्य दोस्त मिल जाए।''

और वास्तव में उसने अपने दोस्त को अपनी सगाई के बारे में बताया, उस लंबे पत्र में जो वह रविवार की सुबह में लिख रहा था। उसके शब्द थे, ''मैंने अंत में बताने के लिए सबसे अच्छी खबर बचा रखी है। मैंने एक समृद्ध परिवार की लड़की फ्राउलिन फरीदा ब्रानडेलफिल्ड के साथ सगाई कर ली है, जो तुम्हारे जाने के बहुत दिनों के बाद यहाँ रहने आई थी, इसलिए तुम शायद ही उसे जानते होगे। आगे मैं उसके बारे में तुम्हें और भी बहुत कुछ बातें बताऊँगा। आज तो मैं तुम्हें सिर्फ यह बताऊँगा कि मैं बहुत खुश हूँ और मेरे और तुम्हारे बीच संबंधों में एक मात्र अंतर यह है कि अब तुम्हें बिल्कुल आम से दोस्त की बजाय मुझमें एक खुश दोस्त मिलेगा। इसके अलावा, मेरी मंगेतर में विपरीत लिंग के रूप में एक सच्चा दोस्त जिसका एक अविवाहित व्यक्ति के लिए कम महत्त्व नहीं है, वह तुम्हारे लिए अपना अभिवादन भेजती है और वह शीघ्र ही खुद ही तुम्हें पत्र लिखेगी। मैं जानता हूँ कि बहुत सारे कारण हैं, जिसकी वजह से तुम हमसे मिलने नहीं आ सकते, लेकिन शायद क्या वह सही अवसर होगा, जबकि तुम सारी बाधाओं को दूर भगा दो? फिर भी, हो सकता है ऐसा हो, लेकिन किसी बात की परवाह किए बिना बस वही करो जो तुम्हें अच्छा लगे।''

अपने हाथ में यह पत्र लिये जार्ज बहुत देर से डाइनिंग टेबल पर बैठा है, और उसका चेहरा खिड़की की तरफ है। उसने शायद ही अनुपस्थित मुसकराहट के साथ गली से गुजरते उस परिचित का अभिवादन स्वीकार किया हो, जिसने उसे देखकर हाथ से इशारा किया।

अंत में उसने वह पत्र अपनी जेब में रखा और अपने कमरे से बाहर गया तथा छोटे से बैठक रूम से होता हुआ अपने पिता के कमरे में गया, जिसमें वह महीनों से नहीं गया था। बल्कि उसे वहाँ जाने की कोई जरूरत भी नहीं थी, क्योंकि व्यापार के क्रम में प्रतिदिन ही उसकी उसके पिता से मुलाकात होती थी और दोनों एक रेस्तराँ में साथ ही भोजन करते थे; यह सच है कि शाम में सभी वही करते, जो उन्हें अच्छा लगता, तब भी जब तक जार्ज कि अधिकांशत: ऐसा ही होता, दोस्तों के साथ बाहर नहीं जाता, या बहुत चुपके से मंगेतर से मिलने जाता, वे अपने-अपने अखबार के साथ सामान्य बैठक रूम में हमेशा कुछ देर के लिए साथ बैठते।

जार्ज को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस धूप भरी सुबह में उसके पिता के कमरे में कितना अँधेरा था। इसलिए इस पर छोटे से आँगन की दीवार ऊँची की, बहुत ज्यादा परछाईं आ गई थी। उसके पिता एक कोने में हाथ में आँख की ओर उठाकर अखबार बढ़ रहे थे, क्योंकि उनके आँख में दृष्टिकोण था। वहाँ कोने में उसकी मृत माँ से जुड़ी अनेक स्मृतियाँ लटक रही थीं। वहीं टेबल पर उनके नाश्ते के अवशेष पड़े थे, जिसे देखकर यह लगता था कि उन्होंने सही तरह से नाश्ता नहीं किया था।

''आह! जार्ज,'' उसके पिता ने उससे मिलने के शीघ्र ही उठते हुए कहा। जैसे ही वे चल रहे थे, उनका भारी ड्रेसिंग

गाउन लहराकर खुल रहा था और इसका स्कर्ट उनके चारों ओर लहरा रहा था। जार्ज ने स्वयं से कहा, ''मेरे पिता आदमियों में अभी भी विशाल हैं।''

''यहाँ तो असहनीय रूप से अँधेरा है,'' उसने जोर से कहा।

''हाँ, काफी अँधेरा है,'' उसके पिता ने जवाब दिया।

''और आपने तो खिड़की भी बंद कर दी है?''

''मुझे यह ही अच्छा लगता है।''

''ठीक है, बाहर तो काफी गरम है,'' जार्ज ने कहा, मानो पहले कही गई अपनी बातों को जारी रखते हुए और फिर बैठ गया।

उसके पिता ने नाश्ते का बरतन साफ किया और उसे अलमारी में रख दिया।

''मैं वास्तव में आप से सिर्फ यह कहना चाहता था,'' जार्ज ने कहा, जो भावशून्य ढंग से बूढ़े आदमी के पीछे-पीछे चल रहा था, ''कि अब मैं अपनी सगाई की खबर सेंट पीट्सबर्ग भेज रहा हूँ।'' उसने अपनी जेब से चिट्ठी को थोड़ा बाहर निकाला और वापिस जेब में फिर रख लिया।

''सेंट पीट्सबर्ग?'' उसके पिता ने पूछा।

''वहाँ अपने दोस्त को,'' अपने पिता से आँख मिलाने की कोशिश करते हुए जार्ज ने जवाब दिया। काम के समय तो ये बिल्कुल भिन्न होते हैं, वह सोच रहा था, कितने आराम से अपने बाजू मोड़कर वह यहाँ बैठ रहा था।

''अरे हाँ, अपने दोस्त को,'' विचित्र बल डालते हुए, उसके पिता ने कहा,

''ठीक है, आप जानते हैं पिताजी, कि पहले तो मैं उसे सगाई के बारे में बताना नहीं चाहता था। विचार के कारण, यही एकमात्र वजह थी। आप तो खुद ही जानते हैं कि वह कितना मुश्किल आदमी है। मैंने स्वयं से कहा कि कोई अन्य मेरी सगाई के बारे में उसे बता सकता है, यद्यपि कि वह एक एकांतवासी व्यक्ति है कि वह भी शायद ही संभव है, मैं उसे रोक नहीं सका, लेकिन मैं कभी भी खुद से उसे बताने नहीं जा रहा था।''

''और अब तुमने अपना इरादा बदल लिया है?'' उसके पिता ने खिड़की की विशाल देहली पर अपना बड़ा अखबार रखते हुए और इसके शीर्ष पर अपना चश्मा रखते, जिसे उसने अपने एक हाथ से ढकते हुए कहा।

''हाँ, मैं इसके बारे में सोचता रहा हूँ। यदि वह मेरा एक अच्छा दोस्त है, तो मेरी खुशी-खुशी सगाई से उसे भी खुशी होनी चाहिए, मैंने अपने आप से यह कहा। इसलिए मैं उसे यह बताने से अपने आपको अब नहीं रोक सकता। लेकिन पत्र के भेजने से पहले मैं आपको यह बताना चाहता था।''

''जार्ज,'' उसके पिता ने अपने दंतविहीन मुँह को लंबा करते हुए बताया, ''मेरी बात सुनो! तुम मेरे पास इसी काम से आए हो, इस बारे में बात करने आए हो। निस्संदेह यह तुम्हारा सुझाव है। लेकिन यह बदतर है, कुछ भी नहीं से भी बदतर है, यदि तुम मुझे पूरी सच्चाई नहीं बताते हो तो। मैं उन बातों को कुरेदना नहीं चाहता, जिसकी यहाँ जरूरत नहीं है। मेरी प्रिय माँ की मृत्यु के बाद से कुछ ऐसी चीजें की गई हैं, जो सही नहीं हैं। हो सकता है कि उनके बोलने का भी कोई समय आएगा, हो सकता है, उससे भी जल्दी जो हम सोचते हैं। व्यापार में कई ऐसी चीजें हैं, जिसकी मुझे जानकारी नहीं है, हो सकता है कि यह मेरे पीठ पीछे नहीं किया गया है, मैं यह नहीं कहने जा रहा कि यह मेरे पीछे किया गया है। मैं अब उन चीजों की बराबरी नहीं करना चाहता, मेरी स्मृति कमजोर पड़ रही है, इतनी सारी चीजों को अब मैं देख भी नहीं सकता। प्रथमत: यह प्रकृति का नियम है, दूसरी बात मेरी प्रिय माता की मृत्यु से आप से कहीं ज्यादा आघात मुझ पर पड़ा। लेकिन चूँकि हम इस बारे में बात कर रहे हैं, इस पत्र के बारे में बात कर रहे हैं, मैं तुमसे आग्रह करता हूँ, जार्ज कि मुझे धोखा मत दो। यह मामूली बात है, इसे बताना भी शायद इतना

जरूरी नहीं है, इसलिए मुझे धोखा नहीं दो। क्या सही में तुम्हारा यह दोस्त सेंट पीट्सबर्ग में है?''

जार्ज लज्जा से खड़ा हो गया। मेरे दोस्तों के बारे में मत सोचिए। एक हजार दोस्त भी मेरे पिता की जगह नहीं ले सकते। क्या आप जानते हैं मैं क्या सोचता हूँ? आप अपनी सही तरह देखभाल नहीं करते हैं, लेकिन बुढ़ापे में तो देखभाल होना जरूरी है। व्यापार में मैं आपके बिना कुछ भी नहीं कर सकता हूँ और आप यह अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन व्यापार की वजह से यदि आपके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने जा रहा है तो मैं कल से इसे हमेशा के लिए बंद कर दूँगा और वह नहीं हो पाएगा। हमें आपके जीवन के तरीके में बदलाव लाना पड़ेगा। लेकिन एक मौलिक बदलाव। आप यहाँ अँधेरे में बैठते हैं, बैठक के कमरे में आपको पर्याप्त रोशनी मिलेगी। आप नाश्ते में सिर्फ यही थोड़ा-सा कुछ ले लेते हैं, जबकि अपनी ऊर्जा को सही तरह से बनाए रखना चाहिए। आप एक बंद खिड़की के पास बैठते हैं और हवा आपके लिए इतनी लाभदायक होगी। नहीं, पिताजी! मैं डॉक्टर को बुलाऊँगा और हमें उनके आदेशों का पालन करना पड़ेगा। हम आपका कमरा बदल देंगे, आप सामनेवाले कमरे में जाएँगे और मैं यहाँ आ जाऊँगा। आपको बदलाव का पता भी नहीं चलेगा, आपकी सारी चीजें आपके साथ ही वहाँ पहुँचा दी जाएँगी। लेकिन इन सब चीजों के लिए बाद में समय है, मैं अभी तो थोड़ी देर के लिए बिस्तर पर लिटा दूँगा, मुझे पूरा विश्वास है कि आपको आराम की जरूरत है। आइए, मैं आपको आपकी चीजें हटाने में मदद करूँ, मैं कर सकता हूँ, यह अभी आप देखेंगे या बल्कि आप अभी ही शीघ्र सामनेवाले कमरे में चले जाइए और मेरे बिस्तर पर लेट जाइए। यह सबसे ज्यादा समझदारी भरा कदम होगा।

जार्ज अपने पिता के बिल्कुल बगल में खड़ा था, जिन्होंने किउसके उलझे सफेद बालों सहित सिर को अपनी छाती से लगा लिया।

''जार्ज,'' उसके पिता ने बिना हिले ही धीमी आवाज में कहा। जार्ज शीघ्र ही अपने पिता के बगल में झुक गया। बूढ़े आदमी के थके चेहरे पर उन पुतलियों को देखा, जो फैली हुई थीं और उसी पर टिकी हुई थीं। वे आँखों के कोने से उसे देख रहे थे।

तुम्हारा कोई दोस्त सेंट पीट्सबर्ग में नहीं है। तुम हमेशा से ही टाँग खींचनेवाले रहे हो और तुम मेरी टाँग खींचने से भी नहीं चुके। तुम्हारा कोई दोस्त वहाँ कैसे हो सकता है। मुझे इस बात पर विश्वास नहीं है।

''कुछ देर विगत के बारे में सोचिए, पिताजी,'' अपने पिता को कुरसी से उठाते तथा उनके ड्रेसिंग गाउन को उतारते हुए जैसे ही वह बहुत मुश्किल से खड़े हुए, जार्ज ने कहा, ''मेरे दोस्त को मुझसे मिले हुए तीन साल हो गए। मुझे याद है कि आप उसे बहुत पसंद नहीं किया करते थे। कम-से-कम दो बार मैंने आपको उसे देखते हुए देखा। यद्यपि कि वह मेरे कमरे में मेरे साथ बैठा होता था। मैं आपकी उसके प्रति नापसंदगी अच्छी तरह समझ सकता था, मेरे दोस्त में कुछ विचित्रताएँ हैं। लेकिन फिर बाद में, आपका उसके साथ व्यवहार अच्छा हो गया। मुझे गर्व है, क्योंकि आप उसे सुनते थे, उससे सहमत होते थे और उससे प्रश्न भी पूछते थे। अगर आप याद करेंगे तो जरूर याद आ जाएगा। वह हमें रूसी क्रांति की अत्यंत अविश्वसनीय कहानियाँ सुनाया करता था। उदाहरण के लिए, एक बार जब वह कीव की व्यावसायिक यात्रा पर था तो दंगा हो गया, उसने बालकोनी में एक पुजारी को देखा, जिसने अपने हाथ की हथेली पर काटकर एक कड़ा क्रॉस बनाया हुआ था और उसी हाथ को उठाकर भीड़ से अपील कर रहा था। तब से आपने भी यह कहानी एक या दो बार कही है।

इसी बीच जार्ज अपने पिता को झुकाकर सावधानीपूर्वक उनके ऊनी जाँघिया निकालने में सफल हो गया, जो उन्होंने अपने सूती जाँघिया और मोजे के ऊपर पहन रखा था। उनके जाँघिया का विशेष रूप से बहुत साफ-सुथरा न दिखने के कारण उसने उनके प्रति उपेक्षाभाव रखने के लिए खुद की निंदा की। अभी तक उसने अपनी होनेवाली

पत्नी से स्पष्ट रूप से यह चर्चा नहीं की थी कि उसके पिता के लिए भविष्य में किस प्रकार की व्यवस्था की जानी चाहिए, क्योंकि उन दोनों ने ही चुपचाप यह मान लिया था कि वह बूढ़ा आदमी इसी तरह उस पुराने घर में रहता रहेगा। लेकिन अभी उसने यह शीघ्र एवं हद् निर्णय किया कि उन्हें उसे अपने भविष्य के जीवन में साथ रखना है। निकट से जाँच-पड़ताल करने पर, लगभग यही लगता था कि वह देखभाल, जो वह वहाँ अपने पिता के लिए करना चाहता था, हो सकता है कि उसमें कुछ देर हो।

अपने बाजुओं में उठाकर उसने अपने पिता को बिस्तर तक पहुँचाया। उसी समय उसे एक भयानक अनुभूति हुई, जब उसने देखा कि जब वह उन्हें लेकर बिछावन की तरफ जा रहा था तो बूढ़ा आदमी उसकी छाती से चिपका उसकी घड़ी के चेन से खेल रहा था। कुछ क्षण के लिए तो वह उन्हें बिछावन पर लिटा नहीं पाया या वह मजबूती से उनके चेन को पकड़े हुए था।

लेकिन जैसे ही उसने उन्हें बिछावन पर लिटाया सब कुछ ठीक हो गया। उन्होंने अपने आप को ढक लिया और कंबल को हमेशा से भी ज्यादा कंधों के ऊपर तक खींच लिया। उन्होंने जार्ज को गैर-दोस्ताना नजरों से नहीं देखा।

''आपको मेरे दोस्त की याद आने लगी है, है न?'' जार्ज ने एक प्रोत्साहन भरी हामी भरते हुए पूछा।

''अब तो मैं अच्छी तरह से ढका हुआ हूँ?'' उसके पिता ने पूछा मानो वे यह देख नहीं पा रहे थे कि उनके पैर कंबल से ढके हैं या नहीं।

''इसलिए आपको बिछावन में सुखद लग रहा है,'' जार्ज ने पूछा तथा अच्छी तरह कंबल को और उनके चारों ओर लपेट दिया।

''मैं अच्छी तरह से ढक गया हूँ?'' एक बार फिर पिता ने पूछा और उत्तर के लिए अति उत्सुक थे।

''चिंता मत कीजिए, आप अच्छी तरह ढके हुए हैं।''

''नहीं!'' उसके उत्तर को काटते हुए उसके पिता चिल्लाए तथा पूरी ताकत से कंबल को फेंक दिया तथा कुछ ही क्षणों में बिछावन से उठ खड़े हुए। स्थिर करने के लिए उन्होंने सिर्फ एक हाथ से छत का सहारा लिया।

''तुम मुझे ढकना चाहते थे, मैं जानता हूँ मेरे बच्चे, लेकिन मैं अभी भी ढके जाने से काफी दूर हूँ, इतना तुम्हारे लिए काफी है, बहुत है तुम्हारे लिए। निस्संदेह मैं तुम्हारे दोस्त को जानता हूँ। मेरे लिए तो वह एक बेटे के समान ही होता। इसलिए इतने सालों तुम उसके साथ धोखा करते रहे और क्यों? तुम्हें लगता है कि मैं क्या उसके लिए दु:खी महसूस नहीं करता हूँ। और इसलिए तुम्हें अपने ऑफिस में खुद को बंद कर लेना पड़ा, चीफ व्यस्त है, उसे परेशान न करो, सिर्फ इसलिए कि तुम झूठा पत्र रूस भेज सको। लेकिन आश्चर्य है कि किसी पिता को यह बताने की जरूरत नहीं होती कि उसे अपने बेटे की कैसे सहायता करनी चाहिए। और अब जबकि तुम्हें यह लगता है कि तुमने उसे दबा दिया है, इतना नीचा कि तुम अपना नितंब उस पर रखकर उसके ऊपर बैठ सकते हो और वह नहीं हिलेगा, तो मेरे प्रिय बेटे उसे समझाओ कि वह शादी कर ले।''

जार्ज अपने पिता द्वारा बनाए गए हौवे को हैरानी से देख रहा था। सेंट पीट्सबर्ग में उसका दोस्त, जिसे उसके पिता अचानक इतनी अच्छी तरह जानने लगे थे, उसकी कल्पना में इस तरह छा गया जैसे पहले कभी नहीं। उसने देखा कि वह रूस की विशालता में खो गया था। एक खाली लूटे हुए गोदाम के दरवाजे पर उसने उसे देखा। उसके शोफेस के ध्वंसावशेष उसके सामानों के टूटे अवशेषों में, गिरते गैस ब्रैकेटों के बीच बस वह खड़ा था। उसे इतना दूर क्यों जाना पड़ा।

''लेकिन मेरी बात ध्यान से सुनो,'' उसके पिता चिल्लाए, जार्ज लगभग विचलित होकर उनके बिछावन की तरफ दौड़ा, ताकि हर चीज ले सके, लेकिन उसे आधे रास्ते में ही रुकना पड़ा।

''क्योंकि उसने अपना स्कर्ट उठा लिया था,'' उसके पिता बाँसुरी बजाने लगे, ''क्योंकि उसने इस तरह अपना स्कर्ट ऊपर कर लिया, दुष्ट प्राणी,'' उसकी नकल उतारते हुए उन्होंने अपनी कमीज इतनी ऊँची उठा ली कि कोई भी उनके जाँघ पर युद्ध में लगे घाव के निशान के चिह्न देख सकता था, ''क्योंकि उसने इस तरह से अपना स्कर्ट ऊपर उठाया था और तुमने यह उसके लिए बनाया तथा उसके साथ बिना किसी व्यवधान के स्वतंत्र होने के लिए तुमने अपनी माँ का अपमान किया है, अपने दोस्त को धोखा दिया है और अपने पिता को बिछावन पर लिटा दिया है, ताकि वे चल-फिर न सकें। लेकिन वे चल सकते है, या क्या वे नहीं चल सकते हैं।

और बिना किसी सहारे के वे उठ खड़े हुए तथा उन्होंने तेजी से अपनी टाँगें फैलाईं। उनकी अंतर्दृष्टि से उनका चेहरा कांतिमय हो गया।

जार्ज एक कोने में सिकुड़ गया, अपने पिता से इतना दूर जितना संभव था। बहुत समय पहले उसने यह संकल्प लिया था कि वह छोटी-से-छोटी गतिविधियों को भी ध्यान से देखेगा, ताकि पीछे या आगे से आनेवाले अप्रत्यक्ष आक्रमण, झपट्टा आदि के कारण उसे आश्चर्य न हो। इसी क्षण उसने अपने इस बहुत पहले भूले हुए संकल्प को याद किया और एक बार फिर भूल गया, ठीक उस व्यक्ति की तरह जैसे सुई में एक छोटा धागा डालता आदमी।

''लेकिन इसके बावजूद भी तुम्हारे दोस्त के साथ धोखा हुआ नहीं है,'' अपनी तर्जनी से हलके से मारते हुए उन्होंने अपने बिंदु पर जोर देते हुए कहा, ''मैं यहाँ इस जगह उसी का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ।''

''आप स्वाँगी!'' क्षति का एहसास होते ही, जार्ज स्वयं को इस प्रत्युत्तर से नहीं रोक सका। वह अपने मस्तिष्क से सोचने लगा, उसने अपने जीभ को वापिस काटा और उसे लगा कि इतनी देर हो गई, जबकि पीड़ा से उसके टेहुने जवाब देने लगे।

''हाँ, निस्संदेह, मैं तो स्वाँग कर रहा हूँ। एक स्वाँग! यह तो एक अच्छी अभिव्यक्ति है! बेचारे बूढ़े विधुर के लिए और क्या राहत बचा ही है? मुझे बताओ और अब जबकि तुम मेरी बातों का जवाब दे रहे हो, तुम फिर भी मेरे जीवित बेटे, अब मेरे पास बचा ही क्या है, मेरे पीछे कमरे में, धोखेबाज कामगारों का झुंड, मेरी हड्डियों के कुम्हड़े के लिए पुराना? और मेरे बेटे इस संसार में भटक कर चलते हुए उन सौदों को निपटाओ, जो मैंने उसके लिए बनाए थे। विजयी हँसी के साथ ही अपने चेहरे को ढककर वह एक सम्मानित व्यापारी की तरह अपने पिता से दूर भागा। तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूँ। मैं, जिसके अस्तित्व से ही तुम्हारा अस्तित्व आया?''

जार्ज ने सोचा अब वे आगे झुकेंगे, क्या होगा जब वे गिर जाएँ और खुद को आहत कर लें! ये शब्द उसके मस्तिष्क में फुँफकारने लगे।

उसके पिता आगे झुके लेकिन गिरे नहीं। चूँकि जार्ज और निकट नहीं आया, जैसा कि उन्हें अपेक्षा थी, एक बार फिर उन्होंने खुद को सीधा किया।

आप जहाँ हैं, वहीं रुक जाइए, मुझे आपकी जरूरत नहीं है। आपको लगता है कि आपमें इतनी ताकत है कि आप यहाँ आ सकते हैं और आप अपनी बात से खुद ही मुकर रहे हैं। इतने आश्वस्त मत होइए। अभी भी मैं हम दोनों में ज्यादा ताकतवर हूँ। हो सकता है कि मुझे अपने आप इतनी शक्ति नहीं होती, लेकिन तुम्हारी माँ ने अपनी इतनी सारी शक्ति मेरे अंदर भर दी है कि मैंने तुम्हारे दोस्त से संपर्क बना लिया है और यहाँ मेरी जेब में तुम्हारे ग्राहक हैं।

''इनकी कमीज में भी जेब है!'' जार्ज ने अपने आप से कहा और उसे यह विश्वास था कि इस टिप्पणी पर वे उसकी पूरे विश्व के लिए एक असंभव आकृति बना सकते हैं। कुछ क्षण के लिए ही उसने यह सोचा, इसलिए वह सब कुछ भूलता गया।

''अपनी दुलहन को बस अपनी बाँहों में लो और मेरे रास्ते में आने की कोशिश करो। मैं तुम्हारे बिल्कुल बगल से उसे दूर कर दूँगा, तुम्हें नहीं मालूम कैसे!''

जार्ज ने अविश्वास से अपना चेहरा बनाया। उसके पिता ने जार्ज के कोने की तरफ उसके शब्दों की सच्चाई की पुष्टि करते हुए सहमति जताई।

तुमने आज किस तरह मेरा मनोरंजन किया, मेरे पास आकर यह पूछकर कि तुम्हें अपनी सगाई के बारे में अपने दोस्त को बताना चाहिए या नहीं। बेवकूफ लड़का, वह पहले ही सब कुछ जानता है, वह सब कुछ जानता है। मैं इसे लिखता रहा हूँ, क्योंकि तुम मेरा लिखने का सामान मुझसे लेना भूल गए। इसीलिए इतने सालों से वह यहाँ नहीं है, वह तुमसे हजारों गुना ज्यादा बेहतर तरीके से हर चीज जानता है, अपने बाएँ हाथ में वह तुम्हारे पत्रों को बिना खोले मोड़कर रखता है, जबकि दाएँ हाथ में पढ़ने के लिए वह मेरा पत्र लेता है।

उत्साह में उन्होंने अपना बाजू अपने सिर पर लहराया। ''तुम से हजार गुना बेहतर वह सब कुछ जानता है!'' वे चिल्लाए।

''दस हजार गुना!'' जार्ज ने अपने पिता का मजाक उड़ाने के लिए कहा, लेकिन अपने ही मुँह में यह शब्द भयानक संकल्प बन गए।

''बरसों से मैं तुम्हारा इंतजार करता रहा हूँ कि तुम ऐसे कुछ प्रश्न लेकर मेरे पास आओ। तुम्हें क्या लगता है कि मैं किसी चीज के लिए खुद को परेशान करता हूँ? तुम क्या सोचते हो कि मैं अपने अखबार पढ़ता हूँ? देखो!'' उन्होंने अखबार का एक पेज जो वे किसी तरह अपने बिछावन तक ले आए थे, फेंककर जार्ज को दिया। एक पुराना अखबार, जिसका नाम भी जार्ज को पूरी तरह मालूम नहीं था।

''तुम्हें बड़ा होने में कितना समय लगा है! तुम्हारी माँ मर गई, तुम्हारे दोस्त का दिल रूस में टुकड़े-टुकड़े होनेवाला है, तीन साल पहले भी वह इतना पीला था कि उसे निकाला जा सकता था और मेरे लिए, वह तो तुम मेरी स्थिति देख ही रहे हो। इसके लिए तुम्हें दिमाग से सोचना चाहिए!''

''इसलिए आप मेरी प्रतीक्षा करते रहे हैं!'' जार्ज चिल्लाया, उसके पिता ने दयापूर्वक उदासीनता से कहा, ''मैं जानता हूँ कि आप वह शीघ्र ही कहना चाहते थे। लेकिन अब इसका कोई महत्त्व नहीं।'' और ऊँची आवाज में इसलिए अब तुम्हें यह मालूम हो गया है कि संसार में तुम्हारे अपने अस्तित्व के सिवा और क्या है, अभी तक तो तुम्हें सिर्फ अपने बारे में ही पता था। मेरे मासूम बच्चे, हाँ, तुम थे, सही में, लेकिन और ज्यादा सच यह है कि तुम एक दुष्ट मानव हो! इसलिए लिख लो, अब मैं तुम्हें डूबकर मरने की सजा देता हूँ!''

जार्ज ने कमरे से भाग जाने की उत्सुकता महसूस की, उसके निकलते ही उसके पिता जिस धमाके के साथ अपने बिछावन पर गिरे वह आवाज अभी भी उसके कानों में पड़ी। सीढ़ियों पर जिससे होकर वह तेजी से नीचे भागा, इस तरह से अपनी मेहरी के ऊपर से चढ़ता हुआ, जैसे सीढ़ियाँ समतल हों और वह मेहरी जो वहाँ कमरे की सफाई कर रही थी। ''यीशू!'' वह चिल्लाई, और अपना चेहरा अप्रन से ढक लिया, लेकिन तब तक तो वह भाग चुका था। वह आगे के दरवाजे से भागा, सड़क पार करके वह पानी की तरफ भागा। पहले ही वह रेलिंग ऐसे पकड़े हुए था जैसे भूखा आदमी भोजन पर झपटता है। वह एक प्रतिभावान जिमनास्ट की तरह उस पर लहराया, जो वह अपनी युवावस्था में था और जिस पर माता-पिता को बड़ा गर्व था। कमजोर पकड़ के साथ वह अभी भी रेलिंग पकड़े हुए था, तभी रेलिंग से झाँककर उसने एक मोटर-बस को आते हुए देखा, जिसके शोर में उसके गिरने की आवाज गुम हो जाती, धीमी आवाज में पुकारा, ''प्रिय माता-पिता, मैंने हमेशा आप लोगों को प्यार किया है, एक ही तरह से,'' और स्वयं को गिरने दिया।

इसी क्षण पुल पर से, पुल के ऊपर से वाहन का अंतहीन काफिला गुजर रहा था।

❑

डोलची सवार

सारा कोयला खर्च, डोलची खाली; फावड़ा बेकार; चूल्हा बुझा हुआ; कमरा अत्यधिक ठंडा, खिड़की के बाहर पत्तियाँ स्थिर तथा ओले से ढकी हुईं, आकाश मानो चाँदी की ढाल की तरह किसी के भी विरुद्ध, जो उसकी ओर किसी प्रकार की मदद के लिए देखता। मेरे पास कोयला होना चाहिए, मैं ठिठुरकर मरना नहीं चाहता; मेरे पीछे निष्ठुर चूल्हा और मेरे सामने निष्ठुर आकाश, इसलिए मुझे इन दोनों के बीच सवारी करनी चाहिए तथा मेरी यात्रा कोयला डीलरों से सहायता की माँग करता है। लेकिन साधारण आग्रह के प्रति वह पहले ही बिल्कुल असंवेदनशील है। मुझे अटल रूप से यह सिद्ध करना चाहिए कि मेरे पास कोयले का एक अंश भी नहीं है, और यह कि वह मेरे लिए आकाश के क्षितिज में सूर्य के समान है। मुझे उस भिखारी की तरह माँगना चाहिए जो, मौत की गुहार लगाते हुए, चौखट पर ही मर जाने की विनती करता है, जिसे प्रसिद्ध लोगों का रसोइया उसके अनुसार कॉफी बरतन में बचा हुआ अशेष देने का निर्णय करता है, ठीक उसी गुस्से से भरा कोयला डीलर, इस आदेश को स्वीकार करते हुए, ''तुम्हें करना नहीं चाहिए,'' मेरी डोलची में फावड़ा भरकर कोयला डाल देना चाहिए।

मेरे पहुँचने के तरीके से ही इस बात का निर्णय लिया जा सकता है। इसलिए मैं डोलची में सवार होता हूँ। मैं डोलची पर बैठा, मेरे हाथ हैंडल पर, जीन का सबसे साधारण रूप, मैं बड़ी मुश्किल से खुद को सीढ़ियों तक ढकेलता हूँ, लेकिन एक बार मैं नीचे जाता हूँ और मेरी डोलची ऊपर जाती है, शानदार रूप से, जमीन पर बैठा ऊँट इतनी गरिमा के साथ नहीं उठता, अपने हाँकनेवालों की छड़ी के नीचे काँपते हुए। नियमित कदमों से चलते हुए हम कठोर जमी हुई गलियों से जाते हैं, कभी-कभी तो मुझे मकान की पहली मंजिल के इतना ऊँचा उठा लिया जाता है, मैं कभी भी घर के दरवाजों के इतना नीचे नहीं जाता हूँ। अंत में मैं अद्भुत रूप से डीलर के मेहराबदार तहखाने के ऊपर तैरने लगता हूँ, जिसे कि मैं बहुत नीचे दीनतापूर्वक अपने को टेबल पर झुके हुए देखता हूँ, जहाँ वह लिख रहा होता है; उसने अत्यधिक गरमी को बाहर निकालने के लिए दरवाजा खोल दिया है।

''कोयला डीलर!'' ओले से जली तथा मेरी साँसों के धुएँ में लिपटी आवाज में मैं चिल्लाता हूँ, ''कोयला डीलर, मेहरबानी करके मुझे थोड़ा कोयला दे दो।'' मेरी डोलची इतनी हल्की है कि मैं इसकी सवारी कर सकता हूँ। कृपया मेहरबानी करो। मैं इसके पैसे तुम्हें दे दूँगा, जब मैं इसे करने में समर्थ हूँगा।

डीलर अपने हाथ अपने कानों पर रख लेता है। ''क्या मैं सही तरह सुन पाता हूँ?'' वह यह प्रश्न काँधों से अपनी पत्नी पर उछालता है। ''क्या मैं सही तरह सुनता हूँ?'' एक ग्राहक।

''मुझे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता,'' उसकी पत्नी ने आराम से साँस लेते तथा बुनाई करते हुए जवाब दिया। उसके पीठ सुखद रूप से गरम थे।

''ओ, हाँ, तुम्हें सुनना चाहिए,'' मैं चिल्लाया। ''यह मैं ही हूँ; एक पुराना ग्राहक; सच्चा और ईमानदार, सिर्फ इस क्षण बिना साधन के।''

''पत्नी,'' डीलर बोलता है, ''कोई तो है, यह होना चाहिए; मेरे कानों को इतना धोखा तो नहीं हो सकता, यह कोई पुराना ग्राहक ही होगा, जो मुझे इतना द्रवित कर सकता है।''

''तुम्हें क्या तकलीफ है, मनुष्य?'' उसकी पत्नी ने अपने काम को कुछ क्षणों के लिए रोकते हुए तथा सलाई को अपनी छाती से दबाते हुए कहा। ''कोई नहीं है, गली खाली है, हमारे सभी ग्राहकों को तो मिल ही गया है; हम कुछ दिनों के लिए दुकान बंद करके आराम कर सकते हैं।''

''लेकिन मैं तो यहाँ डोलची पर बैठा हुआ हूँ,'' मैं चिल्लाया तथा जमे हुए आँसू मेरी आँखों से निकल पड़े और

मुझे पता भी नहीं चला, ''कृपया इधर देखिए, सिर्फ एक बार, आप सीधे मुझे देख पाएँगे; मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, सिर्फ एक फावड़ा भर के; यदि आप मुझे थोड़ा ज्यादा देते हैं तो इससे मुझे इतनी खुशी होगी कि मुझे समझ में नहीं आता क्या करूँ। सभी ग्राहकों को तो मिल गए हैं। ओह, काश मैं भी डोलची की खड़खड़ाहट सुन पाता।''

''मैं आ रहा हूँ,'' कोयला डीलर ने कहा और अपनी छोटी टाँगों से वह तहखाने की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा, लेकिन उसकी पत्नी पहले ही उसके बगल में थी, वह बाजू से पकड़कर उससे कहती है, ''आप यहीं रुकिए, अपनी कल्पनाओं में डूबे देखकर मैं खुद ही जाती हूँ। पिछली रात की खाँसी के उस बुरे दौरे के बारे में सोचो। धंधे के लिए भी, यदि यह वह है, जिसके बारे में तुमने सोच रखा है, तुम अपनी पत्नी और बच्चे को भूलकर अपने फे फड़े का बलिदान करने के लिए तैयार हो। मैं जाऊँगी।''

ठीक है तो उसे उन सभी प्रकार के कोयले के बारे में जरूर बताना, जो हमारे पास भंडार में हैं। मैं यहाँ से ही तुम्हें उनके मूल्य बता दूँगा।''

''ठीक है,'' गली के ऊपर चढ़ते हुए बीवी ने जवाब दिया।

स्वाभाविक रूप से उसने शीघ्र ही मुझे देख लिया। ''फराओ, कोयला डीलर,'' मैं चिल्लाया, ''मेरा विनम्र अभिवादन, मैं खुद ही उठाकर ले जाऊँगा। एक फावड़ा भरकर, जो सबसे घटिया आपके पास ही है। मैं निश्चित रूप से इसकी पूरी कीमत आपको अदा कर दूँगा, लेकिन अभी नहीं, अभी नहीं।'' ''अभी नहीं'' कैसे शोकसूचक घंटे की तरह लगी रही है और किस तरह हक्का-बक्का होकर। यह पास के चर्च की मीनार से आनेवाली ध्वनियों से मिल गई है।

''ठीक, वह क्या चाहता है?'' डीलर ने चिल्लाकर पूछा। ''कुछ भी नहीं,'' चिल्लाकर उसकी पत्नी ने जवाब दिया, ''यहाँ कुछ भी नहीं है; मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता, मुझे कुछ भी सुनाई नहीं देता; सिर्फ छह मर्मभेदी और अब हमें दुकान बंद कर देनी चाहिए। ठंड भयावह है; कल संभवत: हमें बहुत कुछ करना पड़े।''

वह कुछ भी देख नहीं सकती है, कुछ भी सुन नहीं सकती है। लेकिन वह अपने अप्रन के बंधन को ढीला करती है और मुझे भगाने के लिए उसे लहराती है। दुर्भाग्यवश वह सफल हो जाती है। मेरे डोलची में एक अच्छे घोड़े के सभी गुण के सिवाय प्रतिरोध क्षमता के, जो इसमें नहीं है। यह बहुत ही हल्की है। एक महिला का अप्रन इसे हवा में उड़ा सकता है।

''तुम बुरी महिला!'' मैंने चिल्लाकर कहा, जबकि अपनी दुकान की ओर; और थोड़ा घृणा से भरी तथा थोड़ा आश्वस्त, मुड़ती हुई उसने हवा में अपनी मुट्ठी दिखाई। ''तुम बेकार महिला! मैंने तुमसे एक फावड़ा सबसे घटिया कोयला माँगा था, वह भी तुमने मुझे नहीं दिया।'' इसी के साथ मैं बर्फीले पर्वत के क्षेत्र में उतरता हूँ और हमेशा-हमेशा के लिए गुम हो गया।

❑

प्रथम दुःख

कलाबाजी के झूले का कलाकार, विभिन्न प्रकार की बड़ी नाट्यशालाओं के ऊँचे मेहराबदार गुंबदों में अभ्यास किया जानेवाला यह कला निस्संदेह मानवता द्वारा प्राप्त किए जानेवाले कठिनतम कामों में से एक है, ने अपना जीवन इस प्रकार व्यवस्थित कर लिया है कि जब तक वह उसी इमारत में काम करता रहता है, वह कभी भी अपने झूले से दिन या रात कभी नीचे नहीं उतरता, प्रथमत: अपनी कुशलता में श्रेष्ठता प्राप्त करने के कारण, और दूसरी चीज उनके लिए बहुत प्रकार से कठोर होने के कारण। उनकी जरूरतें भी छोटी-छोटी होती थीं, जो नीचे से देख रहे परिचारकों द्वारा पूरी कर दी जाती थीं। उन्हें जो कुछ की भी जरूरत होती थी उसे एक विशिष्ट रूप से तैयार पात्र में भरकर ऊपर भेज दिया जाता था और पुन: इसे वापिस खींच लिया जाता था। जीवन के इस ढंग से नाट्यशाला के कर्मियों को कोई विशिष्ट असुविधा नहीं होती थी, सिवाय इसके कि जब दूसरे लोग स्टेज पर होते थे तो उसे फिर भी ऊपर ही झूलते रहना पड़ता था, जिसमें कुछ हेर-फेर नहीं किया जा सकता था, क्योंकि यह ध्यान भंग करनेवाला माना जाता। यह भी तथ्य है कि ऐसे समय में वह अधिकांशत: स्थिर रहता था तथा लोगों की भूली-भटकी निगाहें उस पर पड़ती रहती थीं। फिर भी प्रबंध इस बात की अनदेखी करता था, क्योंकि वह एक अद्‌भुत एवं विलक्षण कलाकार था। निस्संदेह यह बात मालूम थी कि इस तरह का जीवन कोई आसान नहीं था तथा सिर्फ इसी तरह ही वह स्वयं को वास्तव में निरंतर अभ्यास में रख सकता था तथा अपनी कला को श्रेष्ठता के चरम पर।

इसके अलावा स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी उसका वहाँ टिका होना काफी फायदेमंद था। गरमी के मौसम में नाट्यशाला के गुंबद की सभी खिड़कियाँ खोल दी जाती थीं, जिनसे धुँधियाले मेहराबों पर पर्याप्त धूप एवं ताजा हवा आती थी, जो कि और भी सुंदर लगती थी। यह सच है कि उसका सामाजिक जीवन कुछ हद तक सीमित था, कभी-कभी साथी कलाबाज सीढ़ियाँ चढ़कर उसके पास आ जाता था और तब दोनों ही उस झूले में बैठ जाते, सहारा देनेवाली रस्सी के दाईं एवं बाईं ओर झूलते एवं आपस में बातें करते या बिल्डर के मजदूर, जो छत की मरम्मत कर रहे होते थे, खुली खिड़की से वे कभी-कभी उनसे बातें कर लेते या ऊपर की गैलरी में आपातकालीन बत्तियों की जाँच कर रहे, उसे पुकारकर कुछ बातें करने लगते, जो सुनने में तो सम्मानपूर्ण लगता, लेकिन समझ में कुछ नहीं आता। इसके अतिरिक्त उसके एकांतवास में और कोई व्यवधान नहीं था। कभी-कभी दोपहर के समय खाली नाट्यशाला के इधर-उधर घूमते कर्मी विचारपूर्वक छत की उस ऊँचाई पर देखते, जहाँ तक नजर की सीमा पहुँचती और झूले का कलाकार, इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ कि उसे कोई देख भी रहा है या तो अभ्यास कर रहा होता या विश्राम कर रहा होता है।

झूले का यह कलाकार इस तरह शांतिपूर्वक रहने के लिए जा सकता है, यदि एक स्थान से दूसरे स्थान तक की अनिवार्य यात्रा उसे न करनी होती। ये यात्राएँ अत्यधिक तनावपूर्ण थीं। निस्संदेह उसका प्रबंधक इस बात का ध्यान रखता था कि आवश्यकता से अधिक एक क्षण के लिए भी उसका कष्ट लंबा न हो। शहर की यात्रा के लिए तेज गति से चलनेवाले वाहन प्रयुक्त होते थे, जो यदि संभव होता तो रात में नहीं तो सुबह-सवेरे खाली सड़कों पर तेज गति से जाते उसे तेजी से घुमा देते थे, जो कि कलाबाजी झूले के कलाकार के धैर्य के लिए बहुत ही धीमा होता था। रेल यात्रा के लिए एक पूरा डिब्बा आरक्षित किया जाता था, जिसमें कलाबाजी के झूले के कलाकार को संभव विकल्प के तौर पर उसके जीवन के सामान्य ढंग के विपरीत घटिया ढंग से उसे अपना समय सामान रखनेवाले रैक पर बिताना पड़ता था। अपने दौरे पर अगले शहर में उसके पहुँचने से पहले ही झूला नाट्यशाला में लटका होता था तथा स्टेज पर जानेवाले सभी दरवाजे चारों ओर से खोल दिए जाते हैं, सभी गलियारे खुले रहते हैं, फिर भी प्रबंधक

को एक क्षण की भी खुशी तब तक नहीं होती है, जब तक कि कलाबाजी का कलाकार पलक झपकते ही रस्सी की सीढ़ियों पर अपने कदम रखकर अंतत: ऊपर लटकते झूले पर नहीं पहुँच जाता है।

प्रबंधकों द्वारा अनेक सफल यात्राओं की व्यवस्था के बावजूद, हर नया प्रदर्शन उसे पुन: लज्जित कर देता और हर कुछ के बावजूद भी यह कलाकार के लिए बड़ा तनावपूर्ण होता था।

एक बार जब वे सभी एक साथ यात्रा कर रहे थे, कलाबाजी के झूले का कलाकार सामान के रैक पर चढ़ा सपने देख रहा था, प्रबंधक उसके सामनेवाली खिड़की के साथवाली सीट पर पीछे झुककर पुस्तकें पढ़ रहा था, कलाबाजी के झूले का कलाकार धीमी आवाज में अपने साथियों को संबोधित कर रहा था। अचानक प्रबंधक का ध्यान उस ओर गया। कलाबाजी के झूले के कलाकार ने अपने होंठ काटते हुए कहा कि भविष्य में उसे अपने प्रदर्शन के लिए हमेशा दो कलाबाजी के झूले रखने चाहिए न कि एक और वे दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने रहेंगे। प्रबंधक शीघ्र ही तैयार हो गया। लेकिन कलाबाजी के झूले के कलाकार ने प्रबंधक को यह दिखाने के लिए कि उसकी बात का कोई महत्त्व नहीं है, कहा कि, ''परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों वह पुन: कभी भी कलाबाजी के एक झूले पर प्रदर्शन नहीं करेगा।'' यह घटित होने की लगभग नगण्य संभावनाओं ने भी उसे भयभीत कर दिया। प्रबंधक ने सावधानीपूर्वक उसकी बातों को समझते हुए, अपनी पूर्ण सहमति पर एक बार फिर जोर दिया, इसकी पट्टी होने के फायदे के अलावा, प्रदर्शन में भी विविधता लाई जा सकती है। यह सुनते ही कलाबाजी के झूले का कलाकार अचानक फूट-फूटकर रोने लगा। बूरी तरह से घबराया हुआ प्रबंधक तेजी से खड़ा हो गया और उसके रोने का कारण पूछा। कोई जवाब न पाकर वह अपनी सीट पर चढ़ गया और उसे गालों से चूमने लगा, जिससे कि उसका अपना चेहरा भी कलाबाजी के झूले के कलाकार के आँसुओं से गीला हो गया। फिर भी वह तब तक पूछता और पुचकारता रहा, जब तक कि उसका रोना बंद होकर सिसकियों में न बदल गया, फिर वह बोला, ''मेरे हाथों में सिर्फ एक पट्टा, मैं कैसे जीऊँगा।'' इससे प्रबंधक को उसकी तसल्ली कराने में थोड़ी राहत मिल गई। उसने वायदा किया कि उनके दौरे में आनेवाले पहले शहर में कलाबाजी का दूसरा झूला लगाने का संदेश वह अगले स्टेशन से दे देगा। फिर उसने कलाबाजी के एक ही झूले पर उसे इतने लंबे समय तक काम करते रहने देने के लिए स्वयं को फटकार लगाई और इस गलती की ओर उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए उसने उसका धन्यवाद किया एवं दिल से प्रशंसा भी की। इस प्रकार धीरे-धीरे वह कलाबाजी के झूले के कलाकार को पुन: आश्वस्त करने में सफल हो पाया और अपने स्थान पर वापिस जा पाया। लेकिन उसका अपना मन आश्वस्त नहीं था और गहरी बेचैनी के साथ वह चुपचाप पुस्तक की ओट से कलाबाजी के झूले के कलाकार को देख रहा था। एक बार यदि ऐसा विचार परेशान करने लगे, तो, फिर उनसे क्या कभी पीछा छूट सकता है? बल्कि जरूरत के समय क्या वे और ज्यादा बढ़ नहीं जाएँगे? क्या उससे उनका अपना अस्तित्व ही संकट में नहीं पड़ जाएगा? और वास्तव में प्रबंधक को यह विश्वास हो गया कि रोने के बाद प्रकटत: आनेवाली शांत नींद में कलाबाजी के झूले के कलाकार के बच्चे जैसे चिकने माथे पर उतरनेवाली चिंता की लकीरों को वह देख सकता है।

❑

पर्वतों की सैर

''मुझे नहीं मालूम,'' मैं चिल्लाया, लेकिन मेरी आवाज सुननेवाला कोई नहीं था, ''मुझे नहीं मालूम।'' यदि कोई नहीं आता तो कोई नहीं आएगा। मैंने किसी का भी बुरा नहीं किया है, किसी ने मेरा भी बुरा नहीं किया है, लेकिन कोई मेरी सहायता नहीं करेगा। मामूली आदमियों का दल। सिर्फ यह कि कोई मेरी मदद नहीं करता, दूसरी ओर सामान्य आदमियों का दल ठीक है। मैं शौक से सैर पर जाऊँगा, क्यों नहीं, आम आदमियों के दल के साथ। निस्संदेह पर्वतों की सैर को, और कहाँ? ये आम आदमी किस तरह एक-दूसरे को ढकेलते हैं, एक साथ जुड़े ये उठे बाजू, पास-पास चलते ये असंख्य पैर। निस्संदेह वे सभी अच्छी पोशाकें पहने हुए हैं। हम इतने प्रसन्नचित्त ढंग से गए, हवा हमें स्पर्श करती बह रही थी और हमारी संगति में थोड़ा खाली स्थान था। हमारे गले फूल गए थे और पर्वतों के बीच स्वतंत्र हो गए थे। आश्चर्य है कि हमने गाना, गाना शुरू नहीं किया।

❑

अविवाहित का दुर्भाग्य

अविवाहित रहना कितना कठिन लगता है, अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते रहना, जबकि किसी संगति में शाम बिताने की इच्छा होने पर आमंत्रण की गुहार करना, कमरे के एक कोने में अपने बिछावन पर पड़े खाली कमरे को ताकते हुए सप्ताह बिताना, हमेशा सामने के दरवाजे से शुभ रात्रि कहना, कभी ऊपरी मंजिल पर अपनी पत्नी के बगल में नहीं जाना, अपने कमरे में सिर्फ बगल का दरवाजा होना, जो दूसरों के बैठकों की ओर खुलता हो, एक हाथ में अपना खाना लिये घर आना, दूसरों के बच्चों की प्रशंसा करते हुए और फिर भी यह बोलने की अनुमति नहीं, ''हमारा कोई नहीं है,'' अपने हाव-भाव तथा आचरण के उन एक-दो युवाओं के साँचे में ढालते हुए, जिन्हें आप अपनी जवानी के दिनों से जानते हैं।

यह ऐसा ही होगा सिवाय इसके कि वास्तविकता में आज और बाद में भी, व्यक्ति अपने स्पर्शनीय शरीर, वास्तविक सिर, वास्तविक माथे, के साथ अपने हाथ से हराने के लिए खड़ा होगा।

❑

अकादमी की रिपोर्ट

आपने बंदर के रूप में अकादमी को मेरे पूर्व जीवन का विवरण देने के लिए यह आमंत्रित करके मुझे गौरवान्वित किया है।

मुझे खेद है कि आपके आग्रह को आपकी इच्छा के अनुरूप पूरा नहीं कर पाऊँगा। जब मैं बंदर था, उस बात को अब लगभग पाँच वर्ष बीत गए हैं, कैलेंडर के अनुसार शायद समय की छोटी अवधि है, लेकिन पूरी रफ्तार के भागने के संदर्भ में यह एक अनंत लंबी अवधि है, जो मैंने किया, कम या अधिक, श्रेष्ठ निर्देश, अच्छी सलाह, प्रशंसा, आरकेस्ट्रा संगीत के साथ, फिर भी आवश्यक रूप से अकेला, क्योंकि मेरे सभी साथी, अपनी छवि बनाए रखने के लिए इस पूरे घटनाक्रम से अलग रहे। जो कुछ भी मैंने हासिल किया है, वह मैं कभी भी नहीं कर पाता, यदि मैं अडिग रूप से अपनी उत्पत्ति, अपनी युवावस्था की यादों से ही चिपका रहता। बल्कि अडिग होने का त्याग करना ही श्रेष्ठ आदेश था, जो मैंने स्वयं को दिया। एक स्वतंत्र बंदर जैसा कि मैं था, मैंने उस जिम्मेदारी को स्वयं को समर्पित कर दिया। जो भी हो, प्रतिरोध के रूप में, भूतकाल की स्मृतियों ने मेरे लिए सारे दरवाजे बंद कर दिए। यदि मानव ने अनुमति दी होती तो मैं सबसे पहले वापिस आता, उस चापाकार मार्ग पर चलकर, जो स्वर्ग को धरती से जोड़नेवाले मार्ग से इतना चौड़ा है, लेकिन जैसे ही मैंने जबरन कॅरियर की ओर स्वयं को धक्का दिया, प्रवेश द्वारा संकरा होता गया तथा मेरे पीछे यह सिकुड़ गया। मैं पुरुषों के इस संसार में अधिक सहज अनुभव करता हूँ और यहाँ मैं स्वयं को अधिक उपयुक्त पाता हूँ। मेरे पीछे चलनेवाली मेरे पिछले दिनों की तेज हवा अब कमजोर पड़ गई है और आज तो यह मेरी एड़ियों से खेलनेवाली मंद हवा का झोंका है। सुदूर स्थित द्वार जिससे यह आ रहा है और जिससे कभी आया, अब इतना छोटा हो गया है कि यदि मेरी शक्ति मेरी इच्छा-शक्ति को भी मिलाकर वापिस जाना पड़े तो इसके भीतर रेंगने के लिए भी मुझे अपनी चमड़ी भी उतारनी पड़ेगी। आम शब्दों में, उसी प्रकार जैसे कि मैं छवियों में स्वयं को व्यक्त करना पसंद करता हूँ, साधारण शब्दों में; बंदर, सभ्य व्यक्ति के रूप में आपका जीवन, कुछ हद तक उसी रूप में आपके पीछे होता है। वह आपसे इतना ज्यादा दूर नहीं किया जा सकता है, जितना कि मेरा मेरे से दूर किया जा सकता है। फिर भी धरती पर सभी को छोटा चिंपैजी और महान अकिलेज समान है। लेकिन कुछ हद तक शायद मैं आपके आग्रह को पूरा कर दूँ और वास्तव में मैं यह परम आनंद के साथ करता हूँ। पहली चीज जो मैंने सीखी, वह है हाथ मिलाना। हाथ मिलाने से निकटता महसूस होती है। ठीक है, आज जबकि मैं अपने कॅरियर के शिखर पर हूँ तो मैं आशा करता हूँ कि अपने शब्दों में निकटता का प्रयोग कर उस पहले हाथ मिलाने की भावना में निकटता जोड़ दूँ। मैं जो कुछ भी अकादमी को कहने जा रहा हूँ, उससे निस्संदेह अकादमी को कुछ नया नहीं मिलेगा, और वह मेरे प्रति आपकी अपेक्षाओं से बहुत कम होगा, तथा मैं इससे अधिक बेहतर ढंग से अपना संदेश विश्व तक पहुँचा भी नहीं सकता हूँ, इसके बावजूद भी यह उस पंक्ति को संकेत करता है, जो तत्कालीन बंदर को पुरुषों के इस संसार में प्रवेश करने तथा स्वयं को स्थापित करने के लिए अनुसरण करना पड़ा। यदि मैं अपनी स्थिति के बारे में पूरी तरह आश्वस्त नहीं भी होता तथा यदि इस समय संसार की महान् प्रजाति अवस्थाओं में मेरी स्थिति पूर्णत: निर्विवाद नहीं हो जाती। फिर भी मैं इतनी मामूली सूचनाओं को भी शब्दों में व्यक्त करने से भयभीत नहीं हूँ।

मेरा संबंध गोल्ड कोस्ट से है। अपने बंदी बनाए जाने की कहानी के लिए मुझे दूसरों के प्रमाण पर निर्भर करना पड़ेगा। हैगेनबेक की कंपनी द्वारा भेजे एक शिकारी दल, इस संदर्भ में उस दल के प्रमुख के साथ तब मैंने लाल शराब की कई बोतलें पी ली थीं, ने तट के किनारे झाड़ियों में स्थान लिया था, जब शाम में मैं बंदरों के झुंड के

साथ शराब पीने आया। उन लोगों ने हम पर गोली मारी। मैं ही अकेला था, जिसे गोली लगी। मुझे दो जगह गोली लगी।

एक बार गाल में, जो हल्का घाव था, जो बड़ा, खुला लाल निशान बन गया, जिसके कारण मुझे रेड पीटर नाम मिला, एक अप्रिय, बिल्कुल अनुपयुक्त नाम, जिसे कुछ एक बंदरों ने ही सोचा होगा, मुझमें और प्रदर्शन कर रहे बंदर पीटर में एकमात्र अंतर मानो यह था कि पीटर, जो बहुत पहले नहीं भरा, उसे थोड़ा-बहुत स्थानीय प्रसिद्धि प्राप्त थी और मेरे गाल पर लाल निशान थे। यह इसी संदर्भ में था।

मुझे दूसरी गोली नितंब के नीचे लगी। यह एक गहरा घाव था, जो आज भी मेरी हल्की लँगड़ाहट का कारण था। अभी हाल ही में मैंने एक लेख पढ़ा था, जिसे दस हजार बातूनी लोगों में से एक ने लिखा था। इन्होंने मेरे बारे में अखबार में इस प्रकार व्यक्त किया, मेरा बंदरवाला स्वभाव अभी भी पूरी तरह नियंत्रण में नहीं था, इसका प्रमाण है कि आगंतुक जब भी मुझे देखने आते हैं, मेरे अंदर यह प्रवृत्ति है कि मैं अपना पाजामा उतारकर उन्हें वह स्थान दिखाता हूँ, जहाँ गोली लगी थी। जिस हाथ से यह लिखा गया है, उनकी उँगलियाँ एक-एक करके गोली मार के उड़ा देनी चाहिए। मैं तो जिसके सामने चाहूँ अपना पाजामा उतार सकता हूँ। तुम्हें सिवाय सुव्यवस्थित रोवें और गोली से लगे घाव के कुछ और नहीं मिलेगा। इस अभिव्यक्ति के लिए मुझे शब्दों के चुनाव में स्पष्ट होना चाहिए, ताकि किसी प्रकार की गलतफहमी न हो, घाव आदारी गोली से लगी। हर चीज स्पष्ट एवं निष्कपट थी; छुपाने के लिए कुछ भी नहीं था। जब साधारण सच पर उँगली उठाई जाती है, तो श्रेष्ठ मस्तिष्क सुशीलता के औचित्य पर उँगली उठाता है। यदि उस लेख के लेखक को किसी आगंतुक के सामने अपना पाजामा उतारना पड़ता तो यह एक अलग ही कहानी होती। तब मैं उसे इसका श्रेय देता कि वह ऐसा नहीं करता है। बदले में, अपनी भद्रता के साथ उसे मुझे अकेला छोड़ देना चाहिए।

इन दो गोलियों के प्रहार के बाद मुझे होश आया और यहीं से धीरे-धीरे मेरी अपनी स्मृति शुरू होती है, हैगनबेक नाव में पिंजरे के भीतर नाव के दो तलों के बीच यह चारों ओर से तार लगा पिंजरा नहीं था। यह एक तीन तरफा पिंजरा था, जो एक लॉकर से जुड़ा हुआ था, लॉकर इसका चौथा किनारा था। पूरा पिंजरा इतना छोटा था कि मैं इसमें खड़ा नहीं हो सकता था और इतना सँकरा कि मैं बैठ भी नहीं सकता था। इसलिए मुझे अपने घुटनों को मोड़कर उकड़ूँ बैठना पड़ा और पूरे समय काँपता रहा तथा कुछ समय के लिए तो मैं किसी को भी देखना नहीं चाहता था और अँधेरे में रहना चाहता था। मेरा चेहरा लॉकर की तरफ था, जबकि पिंजरे के तारों से मेरा पीछे का मांस कट रहा था। जंगली जानवरों को कैद करने के ऐसे तरीकों के बंदी बनाने के आरंभिक दिनों में कुछ लाभ समझे जाते हैं तथा अपने अनुभव के आधार पर मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि मानव के दृष्टिकोण से वास्तव में यही मामला है। लेकिन यह मुझे पता नहीं चला। पहली बार जीवन में मुझे कोई राह नहीं सुझाई पड़ रही था; कम-से-कम कोई सीधा रास्ता नहीं। मेरे ठीक सामने लॉकर था। तख्ते से तख्ता सटा हुआ था। सच, तख्ते में आर-पार एक छेद था, जिसे जब मैंने पहली बार देखा था तो आनंदभरी अज्ञानता के साथ इसका स्वागत किया, लेकिन छेद इतना चौड़ा भी नहीं था कि इससे अपनी पूँछ बाहर निकाल सकूँ और न ही बंदर की पूरी शक्ति ही इसे बड़ा कर सकी।

जैसा कि मुझे बाद में बताया गया, मुझसे यह अपेक्षा की गई थी कि मैं असामान्य रूप से कम शोर मचाऊँगा। इससे यह निष्कर्ष निकाला गया कि या तो मैं जल्द ही मर जाऊँगा और यदि मैं किसी तरह जिंदा भी जाता हूँ तो शुरू की महत्त्वपूर्ण अवधि प्रशिक्षण के लिए सहज अनुगामी होगी। मैं इस अवधि में जीवित बच ही गया। निराशाजनक रूप से सिसकते हुए, कठिनाई के साथ पिस्सुओं का शिकार करते हुए, उदासीनता से नारियल चाटते

हुए, लॉकर से अपने सिर को चोट पहुँचाते हुए, अपने निकट आते व्यक्ति को देखकर अपनी जुबान निकालते हुए —इस प्रकार नए जीवन में मैंने अपना समय बिताया। लेकिन इन सबसे बढ़कर एक ही विचार आता था, कोई रास्ता नहीं। निश्चित रूप से, एक अंदर के रूप में तब मुझे भी जो महसूस हुआ उसे अब मैं, मानव शब्दों में व्यक्त कर सकता हूँ। इसीलिए मैं इसे गलत उद्धृत करता हूँ, लेकिन बंदर के पुराने जीवन की सच्चाइयों तक मैं पहुँच भी नहीं सकता। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह यहीं कहीं उस दिशा में है जिस ओर मैंने संकेत किया है।

अभी हाल तक मुझे हर चीज के कई-कई रास्ते दिखाई पड़ते थे और अब तो कोई नहीं है। मैं बाध्य कर दिया गया था। यदि मैं बाध्य कर दिया गया होता तो स्वतंत्र विचरण का मेरा अधिकार कम नहीं होता। ऐसा क्यों? अपने पैर की उँगलियों के बीच मांस खरोंच, लेकिन इसका उत्तर नहीं मिलेगा। अपने पीछे लगे तारों के विपरीत स्वयं को इतना दबाओ कि वह लगभग दो टुकड़ों में कट जाए तो भी तुम्हें उत्तर नहीं मिलेगा। मेरे पास कोई रास्ता नहीं था, लेकिन मुझे रास्ता ढूँढ़ना था, क्योंकि उसके बिना तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा। पूरे समय लॉकर की ओर मुँह किए रहना, मुझे निश्चित रूप से मर जाना चाहिए। फिर भी जहाँ तक हैगनबेक का संबंध था, बंदरों के लिए स्थान एक लॉकर के सामने था तब तो वह ठीक था। मुझे स्वयं को बंदर होने से रोकना था। विचारों की एक शृंखला, जो किसी तरह मैंने अपने पेट की सहायता से बनाई थी, क्योंकि बंदर तो अपने पेट की सहायता से सोचते हैं।

मुझे डर है कि आप शायद मेरे 'अनोखा' कहने का अभिप्राय बिल्कुल भी नहीं समझ पाएँगे। इस अभिव्यक्ति को मैं उसके पूरे तथा अतिलोकप्रिय अर्थ में प्रयोग करता हूँ। मैं जानबूझकर स्वतंत्रता शब्द का प्रयोग नहीं करता हूँ। मेरा आशय चारों ओर से स्वतंत्रता के व्यापक अनुभव से नहीं है। एक बंदर के रूप में शायद मैं यह जानता हूँ तथा मैं ऐसे लोगों से मिला हूँ, जो इसकी अभिलाषा करते हैं। जहाँ तक मेरी बात है तो मैंने ऐसी स्वतंत्रता की न तो पहले कभी इच्छा की और न ही अभी करता हूँ। इसी प्रसंग में मुझे यह कहना चाहिए कि प्राय: स्वतंत्रता शब्द द्वारा पुरुष धोखा खाते हैं, चूँकि स्वतंत्रता सर्वश्रेष्ठ अनुभवों में गिनी जाती है, इसलिए तदनुरूपी भ्रम भी श्रेष्ठ हो सकता है। अनेक नाट्यशालाओं में प्राय: मैंने देखा है, मेरी बारी आने से पहले ही अनेक कलाबाज, कलाबाजी के झूले पर छत की ऊँचाइयों तक अपना प्रदर्शन करने लगते हैं। वे लहराते हैं, इधर-उधर झूलते हैं, हवा में उछाल खाते हैं, एक-दूसरे की बाँहों में झूलते हैं, कोई बाल के सहारे किसी के दाँत से लटका होता है। ''और वह भी मानवीय स्वतंत्रता है,'' मैंने सोचा, ''आत्म-नियंत्रित गति।'' पवित्र मदर नेचर का कितना मजाक! क्या ऐसा तमाशा बंदरों को देखना था, किसी भी रंगशाला की दीवारें उनके ठहाकों की गूँज को नहीं झेल सकतीं।

नहीं, जो मैं चाहता था वह स्वतंत्रता नहीं थी। सिर्फ इससे बाहर निकलने का एक रास्ता भर था—दाएँ, बाएँ या किसी भी दिशा में; मैंने और कोई भी माँग नहीं की। यहाँ तक कि यह मुक्ति का रास्ता एक भ्रम तो साबित नहीं होगा वह भी नहीं। माँग तो छोटी सी थी, तो निराशा भी छोटी ही होगी। निकलना था बस कहीं भी। लकड़ी की दीवार से कुचले बाजू उठाए गतिहीन नहीं रह सकता था।

आज तो मैं इसे स्पष्ट रूप से देख सकता था। बिना गहरी आंतरिक शांति के तो मैं कभी भी मुक्ति की राह ढूँढ़ ही नहीं सकता था। सचमुच मेरे अंदर की इस गहरी शांति का सारा श्रेय शायद जहाज में बिताए शुरू के मेरे कुछ दिनों को जाता है। एक बार फिर मुझे इस शांति के लिए जहाज के चालक दल का धन्यवाद करना था।

हर कुछ के बावजूद वे अच्छे प्राणी थे। अभी भी मुझे उनके भारी कदमों से आनेवाली आवाज को याद करके सुखद अनुभव होता है, जो मुझे अर्धस्वप्न जैसे अभी भी मेरे दिमाग में गूँजा करता है। उन्हें हर काम को जहाँ तक संभव हो धीरे-धीरे करने की आदत थी। यदि उनमें से किसी को अपनी आँखें रगड़नी होती थीं तो वह एक हाथ को ऐसे उठाता मानो झूलता हुआ वजन हो। उनकी हँसी बड़ी असभ्य, लेकिन जानदार होती थी। उनकी हँसी हमेशा ही

कर्कश होती थी, जो सुनने में बड़ी भयानक लगती थी, लेकिन उसका कुछ अर्थ नहीं होता है। उनके मुँह में हमेशा ही कुछ-न-कुछ होता था, जिसे वे थूकते रहते थे और उन्हें कभी इसकी परवाह नहीं होती थी, कि वे इसे कहाँ थूकते हैं। वे हमेशा गरजते कि उन्हें मेरे कारण पिस्सू झेलना पड़ गया, फिर भी इस बारे में बहुत क्रोधित भी नहीं थे। उन्हें मालूम था कि पिस्सू मेरे रोवें में ही पोषित होता था और वे पिस्सू उछलते थे। उनके लिए यह एक साधारण वास्तविक सी बात थी। जब वे छुट्टी पर होते थे तो उनमें से कुछ लोग मेरे चारों ओर अर्धवृत्त बनाकर बैठ जाते थे। वे शायद आपस में बातें करते थे, बस भुनभुनाते थे। सिगरेट पीते, भंडार कक्ष में सामान रखते, यदि मैं हल्की सी भी गति करता तो टेहुने पर थप्पड़ मारते और बीच-बीच में उनमें कोई एक छड़ी लेकर मुझे वहाँ गुदगुदाता जहाँ मुझे गुदगुदाना अच्छा लगता था। यदि आज मुझे उस जहाज पर समुद्री पर्यटन का आमंत्रण मिलता तो मुझे निश्चित रूप से उस आमंत्रण को ठुकरा देना चाहिए, लेकिन डेको के बीच की जिन स्मृतियों को मैं याद कर पाया वे इतनी घृणास्पद नहीं थीं।

इन लोगों के बीच मैंने, जो शांति प्राप्त की उसने सबसे बढ़कर भागने से रोका। जैसा कि मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे लगता है कि कम-से-कम मुझे यह आभास रहा होगा कि मुझे या तो मुक्ति की कोई राह ढूँढ़नी चाहिए या मर जाना चाहिए, लेकिन मुक्ति की वह राह उड़कर नहीं पहुँच सकती थी। अभी मैं यह नहीं कह सकता कि भागना संभव भी था या नहीं, लेकिन मैं मानता हूँ कि यह संभव रहा होगा, फिर एक बंदर के लिए तो यह हमेशा ही संभव है। आज मेरे दाँत जैसे हैं, उनके लिए तो मुझे एक मेवा तोड़ते समय भी सावधान रहना पड़ता है, लेकिन उस समय में निश्चित रूप से काफी हद तक दाँत से काट पाता था, यद्यपि मेरे पिंजरे का ताला मौजूद था। मैंने ऐसा नहीं किया। इससे मुझे क्या फायदा होता? जैसे ही मैं अपना सिर बाहर निकालता मैं पुनः पकड़ लिया जाता तथा इससे और इससे भी बदतर पिंजरे में मुझे रखा जाता; या बिना किसी की नजरों में आए ही मैं अन्य जानवरों के साथ भाग जाता, उदाहरण के लिए अजगर के साथ, जो मेरे बिल्कुल विपरीत थे और उनके निकट जीवन की साँसें ले रहा होता; या मान लो कि चुपचाप भागकर डेक तक पहुँचने में तो मैं सफल हो गया था तथा मैं उछलकर वहाँ आ भी गया था, मुझे गहरे समुद्र में कूद जाना चाहिए और फिर डूब जाना चाहिए था। तीव्रगामी उपाय, इस मानवीय ढंग से मैंने यह सोचा ही नहीं, लेकिन अपने परिवेश के प्रभाव में मैंने ऐसा नाटक किया मानो पहले ही मैंने यह सोच लिया था।

मैं चीजों को अलग करके नहीं देखता था; लेकिन मैं हर चीज को खामोशी से देखता था, मैं उन लोगों को इधर-उधर जाते हुए देखता था, हमेशा एक ही चेहरा, एक ही चाल, कभी-कभी तो मुझे यह लगता था कि एक ही आदमी था। इसलिए वह आदमी या ये लोग निर्बाध रूप से घूमते रहते थे। मेरे सामने अस्पष्ट रूप से एक ऊँचा लक्ष्य था। मेरे से किसी ने भी यह वायदा नहीं किया कि यदि मैं उनके जैसा बन जाऊँ तो मेरे पिंजरे के छड़ हटा लिये जाएँगे। प्रकटतः असंभव आयात स्थितियों के लिए ऐसे वायदे नहीं किए जाते थे, लेकिन यदि कोई कुछ असंभव प्राप्त कर लेता है तो यही वायदे बाद में बीते दिनों पर नजर डालने पर ठीक उसी जगह मौजूद होते हैं, जहाँ पहले उन्हें ये बेकार लगे थे। अब तो मुझे इन आदमियों में कोई आकर्षण नहीं दिखाई देता था। यदि मैं स्वतंत्रता के पूर्व उल्लिखित विचार के प्रति निष्ठावान रहता तो मैं निश्चित रूप से गहरे समुद्र को ही मुक्ति की राह समझता, जो इन आदमियों के भारी चेहरे से भी पता चलता था। जो भी हो, मैं ऐसी बातें सोचने से भी बहुत पहले से इन आदमियों को देखता आ रहा था, वास्तव में, मेरे गहरे पर्यवेक्षण ने ही मुझे सही दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

इन लोगों की नकल करना बहुत आसान था। पहले ही दिन मैंने थूकना सीख लिया। हम एक-दूसरे के चेहरे पर थूका करते थे। एक ही अंतर था कि मैं चाट कर बाद में अपना चेहरा साफ कर लिया करता था और वे नहीं करते

थे। बाद में मैं एक अभ्यस्त व्यक्ति की तरह सिगरेट पीने लगा और यदि मैं अपना अँगूठा सिगरेट की खाँच में दबाता तो, डेकों के बीच में सराहना का शोर गूँज उठता था। एक भरा सिगरेट और खाली सिगरेट के अंतर को समझने में मुझे बहुत समय लग गया।

सबसे बड़ी परेशानी मुझे शराब की बोतल से हुई। इसकी गंध से मुझे घृणा हो गई। इसे अपनाने के लिए मैंने अपना अधिकतम प्रयास किया; लेकिन इस घृणा पर नियंत्रण करने में मुझे सप्ताह लग गए। मेरे इस आंतरिक उधेड़बुन को अन्य चीजों की तुलना में विचित्र रूप से जहाज कर्मियों ने बड़ी गंभीरता से लिया। अपनी स्मृति में मैं इन व्यक्तियों में फर्क नहीं कर सकता था; लेकिन उनमें ऐसा था जो बार-बार कभी अकेले या कभी अपने दोस्तों के साथ दिन और रात किसी भी समय आता रहता था। वह मेरे सामने शराब की बोतल लेकर बैठ जाता और मुझे दिशा-निर्देश देता रहता था। वह मुझे समझ नहीं सकता था, लेकिन मेरे अस्तित्व की गुत्थी सुलझाना चाहता था। मैं जानता हूँ कि मैं बड़ी उत्सुकता और ध्यान से उसे देखा करता था; किसी भी मानव शिक्षक को मानवता का ऐसा विद्यार्थी कभी नहीं मिला होगा। जब बोतल का ढक्कन खुल जाता है तो वह उसे अपने मुँह तक ले जाता; मैं ध्यानपूर्वक उसे देखता रहता। वह मुझसे खुश होकर अपना सिर हिलाता रहता और बोतल को अपने होंठों से लगा लेता। मैं अपने बढ़ते ध्यान के साथ उस पर मोहित था। मैं चिल्लाता और जहाँ कहीं भी नोचने का मन होता अच्छी तरह नोचता। उसे आनंद आता, वह बोतल झुकाता और एक घूँट पी जाता। मैं उसकी नकल करने को अधीर और आतुर था; मैं पिंजरे में खुद को गंदा करता, जिससे उन्हें बड़ी संतुष्टि मिलती। मुझसे थोड़ी ही दूरी पर बोतल को पकड़कर फिर तेजी से इसे वापिस लेकर एक ही घूँट में वह बोतल को खाली कर देता, फिर मेरे बेहतर निर्देशन के लिए वह अत्यधिक दूरी पर पीछे झुक जाता। मैं इतने अधिक प्रयासों के बाद इतना थक जाता कि आगे और अधिक उसका अनुसरण नहीं कर पाता तथा पिंजरे के छड़ों को पकड़कर झूल जाता, जबकि वह अपने सैद्धांतिक हाव-भाव को अपने पेट को रगड़कर हँसते हुए खत्म कर देता।

सिद्धांत के बाद अभ्यास की बारी थी। क्या मैं सैद्धांतिक निर्देशों को लेते-लेते ही बहुत नहीं थक गया था? वास्तव में, मैं बुरी तरह से थक गया था। यह मेरा भाग्य था। फिर भी मैं दिए गए बोतल को पकड़ लेता, जितना कि मुझ से संभव था। काँपते हुए इसे खोलता। इस सफल प्रयास से मेरे भीतर धीरे-धीरे नई ऊर्जा का संचार होता; मैं बोतल उठाता, लगभग उसी तरह से जैसे मैं पहले उठाता था। मैं इसे अपने होंठों से लगाता और फिर घृणा के साथ इसे फेंक देता। मेरे शिक्षक के लिए दु:ख और उससे भी बड़ा दु:ख मेरे लिए। हममें से किसी को भी इस बात से राहत नहीं थी कि मैं भूला नहीं था, यद्यपि मैंने बोतल फेंक दी थी और बहुत खुश होकर अपने पेट को रगड़ा और हँसने लगा।

प्राय: इसी तरह मेरे पाठ का अंत हुआ। मेरे शिक्षक को इसका श्रेय है कि वह क्रोधित नहीं हुआ। कभी-कभी सचमुच में वह अपने जलते सिगरेट को मेरे रोवें से तब तक सटाए रखता जब तक कि वह जलने नहीं लगता तथा जहाँ मैं पहुँच नहीं पाता। फिर वह स्वयं ही अपने लंबे, दयालु हाथ से उसे बुझा देता। वह मुझसे नाराज नहीं होता था। वह जानता था कि हम दोनों की एक ही लड़ाई थी बंदर के स्वभाव के विरुद्ध तथा मेरा काम ज्यादा ही कठिन था।

हम दोनों के लिए ही यह कितनी बड़ी विजय थी। एक शाम जब शायद यह किसी तरह का समारोह था जब तमाशाइयों के एक विशाल समूह के सामने, ग्रामोफोन बज रहा था, एक अधिकारी जहाज कर्मियों के बीच कह रहा था, आज इस संध्या बेला में जैसा कि कोई नहीं देख रहा था, मैंने उस शराब की बोतल को उठाया, जो लापरवाही से मेरे पिंजरे के समूह पड़ी थी, अच्छे ढंग से इसे खोला, तभी यह समूह बड़े ध्यान से मुझे देखने लगा, मैंने बिना

किसी झिझक के इसे होंठों से लगाया, बिल्कुल एक अभ्यस्त पियक्कड़ की तरह। मैंने अपनी गरदन घुमाते हुए पूरा घूँट भरा और सचमुच में इसे खाली कर दिया। फिर मैंने बोतल फेंक दी, निराशा में नहीं, बल्कि एक कलाकार की तरह, फिर सचमुच में मैं अपना पेट रगड़ना भूल गया। चूँकि इसे मैं रोक नहीं सकता था तो इसके बदले में संक्षेप में और गलती से मैंने कहा, ''हैलो!'' क्योंकि मेरा सिर घूम रहा था और यह बिल्कुल मानव बोली की तरह था। इसी के साथ मानव समुदाय में शोर गूँज उठा, जिसकी गूँज मुझे भी सुनाई पड़ी, ''सुनो, वह बातें कर रहा है।'' पसीने से भीगे मेरे शरीर के ऊपर यह पुचकार की तरह था।

मैं दुहराता हूँ; मानव की नकल करने के प्रति मुझे कोई आकर्षण नहीं था। मैं उनकी नकल करता था, क्योंकि मुझे मुक्ति का रास्ता चाहिए था और कोई कारण नहीं था। तथा मेरी उस सफलता से भी मुझे बहुत कुछ हासिल नहीं हुआ। एक बार फिर मैं मानव बोली भूल गया। वह फिर महीनों तक मुझे याद नहीं आया। शराब के प्रति मेरी घृणा एक बार फिर वापिस आ गई, बल्कि अधिक तीव्रता से। लेकिन मुझे जिस राह पर चलना था वह तो पहले ही निर्धारित हो गई थी, हमेशा- हमेशा के लिए।

जब मुझे पहली बार हैंबर्ग में अपने प्रथम प्रशिक्षक को सौंपा गया था तो शीघ्र ही मुझे महसूस हुआ कि मेरे सामने दो विकल्प हैं—जूलोजिकल गार्डन या विभिन्न अवस्थाएँ। मैं हिचकिचाया नहीं। मैंने खुद से कहा, ''विभिन्न अवस्थाओं के लिए अपना अधिकतम प्रयास करो; जूलोजिकल गार्डन तो बस एक नया पिंजरा ही है। एक बार वहाँ गए और आपका काम खत्म।

सज्जनो, इस प्रकार मैंने चीजें सीखीं। आह! कोई तभी सीखता है जब उसे सीखना पड़ता है; कोई तभी सीखता है जब उसे मुक्ति की राह चाहिए; हर कीमत पर कोई भी सीखता है। व्यक्ति सीखने के लिए खुद पर सख्ती करता है; हलके विरोध पर भी व्यक्ति अपनी तीव्र निंदा करता है। मेरे भीतर से मेरा बंदर का स्वभाव तो गायब ही हो गया ताकि मेरा पहला शिक्षक तो इस कारण परिवर्तित होकर लगभग बंदर ही हो गया। इस कारण उसे शिक्षण छोड़कर मानसिक अस्पताल ले जाना पड़ा। सौभाग्यवश वह जल्द ही बाहर आ गया।

मैंने तो कई शिक्षकों को थका दिया, वास्तव में शीघ्र ही अनेक शिक्षकों को। जैसे-जैसे मुझे अपनी क्षमताओं में भरोसा होता गया, लोगों को मेरी उन्नति में रुचि बढ़ती गई और मेरा भविष्य उज्ज्वल लगने लगा, मैंने खुद के लिए शिक्षक नियुक्त कर लिया। उन्हें मैंने पाँच संवाद कमरों में बिठाया तथा एक कमरे से दूसरे कमरे में कूदते हुए मैंने उन पाँचों से शिक्षा ली।

मेरी वह प्रगति! किस प्रकार ज्ञान की किरणें मेरे जागरूक होते मस्तिष्क में चारों ओर से आ रही थीं! मैं इससे इनकार नहीं कर सकता; मुझे यह बड़ा आनंददायक लगता था। लेकिन मुझे यह भी स्वीकार करना चाहिए; मैंने कभी भी इसका बढ़ा-चढ़ाकर मूल्यांकन नहीं किया, तब भी नहीं, अब तो बहुत ही कम। उस प्रयास के साथ जो अभी तक कभी भी दुहराया नहीं गया, मैं एक औसत यूरोपियन के सांस्कृतिक स्तर तक पहुँचने में सफल हो गया था। इस बारे में बोलने के लिए अपने आप में तो कुछ नहीं था, लेकिन पिंजरे से बाहर निकलने तथा मेरे लिए मुक्ति की विशेष राह खोलने में इसकी बड़ी भूमिका थी। वह राह थी मानवता की ओर। वह बेहतरीन कहावत है। वस्तुओं की गहराई में अपना रास्ता बनाने के लिए संघर्ष करो, और वहीं मैंने किया भी। मैंने वस्तुओं की गहराई तक संघर्ष किया। मेरे पास करने के लिए कुछ और था ही नहीं, बशर्ते कि वह स्वतंत्रता हमेशा मेरी पसंद नहीं होती।

मैं जब भी अपनी विकास यात्रा को पीछे मुड़कर देखता हूँ और अब तक मैंने जो कुछ भी प्राप्त किया है उसका आकलन करता हूँ तो मुझे कोई शिकायत नहीं होती, लेकिन मैं संतुष्ट भी नहीं हूँ। पतलून की जेबों में अपने हाथ डाले, टेबल पर मेरी शराब की बोतल के साथ, एक झूलनेवाली कुरसी पर आधा लेटा, आधा बैठा मैं खिड़की के

बाहर देखता हूँ, यदि कोई आगंतुक आता है तो मैं सही तरीके से उसका स्वागत करता हूँ। आगेवाले कमरे में मेरा प्रबंधक बैठता है। मैं जब घंटी बजाता हूँ तो वह मेरे पास आता है और जो कुछ मैं कहता हूँ वह सुनता है। लगभग हर शाम मैं एक प्रदर्शन करता हूँ, और मेरी जो सफलता है उसे शायद ही और बढ़ाया जा सकता है। जब भी मैं सामाजिक बैठकों, वैज्ञानिक स्वागतों तथा भोज इत्यादि से देर रात वापिस आता हूँ, एक अर्ध-प्रशिक्षित छोटा चिंपैजी बैठा मेरा इंतजार कर रहा होता, उसे देखकर मुझे वैसे ही राहत मिलती है, जैसे बंदरों को होती है। जिद में तो मैं उसे देखना पसंद नहीं करता; क्योंकि उसकी नजर घबराए हुए अर्ध-विक्षिप्त जानवर की लगती है। किसी को भी यह दिखाई नहीं पड़ता है, लेकिन मुझे पड़ता है और मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता। संक्षेप में, मैंने वह सब कुछ प्राप्त कर लिया है, जो मैं करना चाहता था। लेकिन मुझे यह मत कहिए कि उठाए गए कष्ट के अनुपात में इसका कोई मूल्य नहीं है, जो भी हो, मैं किसी मनुष्य के निर्णय के लिए आग्रह नहीं कर रहा हूँ, मैं तो सिर्फ जवाब दे रहा हूँ, रिपोर्ट दे रहा हूँ। अकादमी के सम्मानित सदस्यों, आपके लिए भी मैंने सिर्फ एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

❑

अस्वीकृति

जब मैं छोटी लड़की से मिला तो मैंने उससे कहा, ''कृपया मेरे साथ आओ,'' और बिना एक भी शब्द बोले वह मेरे साथ चल पड़ी, उसके कहने का आशय यही है—

आप कोई प्रसिद्ध डयूफ नहीं हैं, रेड इंडियन काठी, स्तर विचारमग्न आँखोंवाले कोई बड़े अमरीकी भी नहीं, जिसकी चमड़ी पर प्रेयरी की हवाओं तथा उसके साथ बहनेवाली नदियों का कोई प्रभाव नहीं, आपने कभी सात समुद्र की यात्रा नहीं की है, वे जहाँ कहीं भी हों, मुझे भी नहीं मालूम वे कहाँ हैं। इसलिए क्यों, प्रार्थना कीजिए कि मेरे-जैसी लड़की को आपके साथ जाना चाहिए?''

''आप भूल गए कि कोई भी वाहन लंबे झटके में तेजी से आपके पास से चौराहे पर नहीं निकलता है; मुझे मामूल है कोई भी सभ्य व्यक्ति पीछे से आपके स्कर्ट को दबाते एवं धीरे-धीरे आपके सिर के पास दुआ बोलते हुए अर्ध-वृत्त में आपका मार्गदर्शन कर रहा है; आपकी छाती आपके अंत:वस्त्र में सही तरह से बँधी है, लेकिन आपके जाँघ एवं नितंब इसके विपरीत खुले हैं। आप भव्य पोशाक पहने हुए हैं, जिसके स्कर्ट में ऐसा चुन्नट है जैसा कि पिछली शरद ऋतु में हमें आनंद मिला था और फिर भी आप मुसकरा रहे हैं, भीषण संकट को आमंत्रित कर रहे हैं, समय-समय पर।''

''हाँ, हम दोनों ही दाईं ओर हैं तथा अटल रूप से हमें इसके प्रति सचेत रखने के लिए, क्या यह बेहतर नहीं है कि हम अलग-अलग रास्तों से अपने घर जाएँ?''

❑

कानून के सामने

कानून के सामने एक द्वारपाल खड़ा रहता है। इस द्वारपाल के पास सुदूर क्षेत्र से एक आदमी आता है और कानून के सामने स्वीकार्य होने की प्रार्थना करता है। लेकिन द्वारपाल कहता है कि वह उस क्षण स्वीकार नहीं कर सकता है। वह व्यक्ति कुछ देर सोचता है और फिर पूछता है, ''क्या बाद में उसे अनुमति मिल जाएगी।'' ''यह संभव है,'' द्वारपाल ने कहा, ''लेकिन अभी नहीं।'' चूँकि हमेशा की तरह द्वार खुला रहता है और द्वारपाल एक ओर होकर खड़ा रहता है, वह व्यक्ति आगे की ओर झुककर भीतर झाँकता है। यह देखकर द्वारपाल देखता है और कहता है; तुम्हारे अंदर इतनी ही उत्सुकता है तो मेरे मना करने के बावजूद भी अंदर जाने की कोशिश करो। लेकिन यह ध्यान रखना, मैं शक्तिशाली हूँ। मैं तो सबसे अंत में खड़ा द्वारपाल हूँ। हर कमरे में एक के बाद दूसरा द्वारपाल है, हर एक पिछलेवाले से अधिक शक्तिशाली। तीसरा द्वारपाल तो पहले से ही इतना शक्तिशाली है कि यहाँ तक कि मैं भी उसकी ओर नहीं देख सकता हूँ। ये सारी कठिनाइयाँ हैं, जो ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने स्वीकार नहीं की हैं; कानून, वह सोचता है कि उसे निश्चित रूप से सभी समय सभी की पहुँच में रहना चाहिए, लेकिन अभी जबकि वह अपने रोवेंदार कोट, बड़ी तीखी नाक, लंबी, पतली, काली ताड़-ताड़ दाढ़ी में द्वारपाल पर निकट दृष्टि डालता है, तो वह निश्चय करता है कि प्रवेश की अनुमति मिलने तक इंतजार करना बेहतर है। द्वारपाल उसे एक छोटी मेज देता है और उसे दरवाजे के एक ओर बैठने देता है। वहाँ वह दिनों, वर्षों बैठा रहता है। वह प्रवेश पाने के अनेकों प्रयास करता है तथा अपनी तीव्र आवश्यकता से उसे भी परेशान कर देता है। द्वारपाल निरंतर उससे थोड़ी बातचीत करता रहता है, उससे उसके घर तथा दूसरी अन्य चीजों के बारे में पूछता रहता है। लेकिन प्रश्न उदासीनता से पूछे जाते हैं, जैसे कि बड़ा मालिक पूछता है और हमेशा इसी कथन के साथ अपनी बात पूरी करता है कि फिर भी उसे अंदर जाने की अनुमति नहीं है। वह व्यक्ति जिसने कि इस यात्रा के लिए अनेकों तैयारियाँ की हैं, जो कुछ भी उसके पास है और कितना ही बहुमूल्य है, द्वारपाल को रिश्वत देने के लिए उसका त्याग कर देता है। द्वारपाल सब कुछ स्वीकार्य कर लेता है, लेकिन हमेशा इस टिप्पणी के साथ कि, ''मैं यह सब कुछ सिर्फ इसलिए ले रहा हूँ, ताकि तुम यह सोचो कि तुमने कुछ छोड़ा है।'' उन कई सालों में वह व्यक्ति लगभग निरंतर ही अपना ध्यान द्वारपाल के ऊपर केंद्रित कर देता है। वह अन्य द्वारपालों को भूल जाता है तथा यही पहला द्वार कानून तक पहुँचने के मार्ग में उसे सबसे बड़ी बाधा लगती है। आरंभिक वर्षों में तो वह अपने दुर्भाग्य को कोसता है, बाद में, जब वह बूढ़ा हो जाता है तो वह सिर्फ अपने आप पर गुस्सा करता है। वह बच्चे जैसा व्यवहार करने लगता है और वर्षों द्वारपाल की विनती करते-करते उसे उसके रोवेंदार कोट में पड़े कीड़े का भी पता चल गया है और यहाँ तक कि वह उन कीड़ों से भी मदद की गुहार करता है कि वे द्वारपाल का मन बदल दें। बाद में उसकी दृष्टि खराब होने लगती है और उसे यह समझ में नहीं आता है कि वास्तव में संसार में अँधेरा है, उसकी आँखें ही उसे धोखा दे रही हैं। फिर भी इस अँधेरे में भी कानून के दरवाजे से निर्बाध रूप से आती रोशनी का उसे पता चलता है। अब वह ज्यादा दिन जीवित नहीं रहेगा। मरने से पहले, इस लंबी अवधि में एकत्रित अनुभव एक ही बिंदु पर उसके मस्तिष्क में आया है और वह एक ऐसा सवाल है जो उसने अभी तक द्वारपाल से नहीं पूछा था। वह हिलते-डुलते उसके निकट जाता है, क्योंकि अब वह अपने कठोर शरीर को उठाने में समर्थ नहीं है। दोनों के कद में अंतर के कारण द्वारपाल को उसकी ओर झुकना पड़ता है। ''अब तुम क्या जानना चाहते हो?'' द्वारपाल ने पूछा, ''तुम्हारी कभी संतुष्टि नहीं हो सकती।'' ''हर कोई कानून तक पहुँचने के लिए संघर्ष करता है,'' उसके आदमी ने कहा, ''इसलिए यह कैसा होता है क्योंकि इन वर्षों में कोई और नहीं मैं खुद में प्रवेश के लिए सदा विनती ही करता

रहा?'' द्वारपाल समझ गया कि वह आदमी अब अपनी अंतिम अवस्था में पहुँच गया है, तो इसकी भेद पड़ती इंद्रियों को शब्द समझ में आने चाहिए, ताकि वे उसके कानों में गूँजें; आज तक किसी को भी यहाँ आने की अनुमति नहीं मिली है, क्योंकि यह दरवाजा तो सिर्फ तुम्हारे लिए ही बना है। अब मैं इसे बंद करने जा रहा हूँ।''

❑

पारिवारिक व्यक्ति की चिंताएँ

कुछ लोग कहते हैं कि 'ओडराडेक' शब्द सलावॉनिक मूल का है; और इसी आधार पर इसका पता लगाने की कोशिश करते हैं। कुछ अन्य लोगों का मानना है कि यह जर्मन मूल का शब्द है, इस पर सिर्फ सलावॉनिक प्रभाव है। दोनों व्याख्याओं की अनिश्चितताओं के कारण व्यक्ति निष्पक्षता के साथ यह मान लेता है कि दोनों में से कोई भी सही नहीं है, विशेषकर दोनों में से कोई भी उसका तर्कपूर्ण अर्थ नहीं दे पाता है।

निश्चित रूप से कोई भी इस प्रकार का अध्ययन नहीं करेगा यदि 'ओडराडेक' नामक प्राणी का कोई अस्तित्व ही नहीं है तो। पहली नजर में तो यह तारे के आकार की एक समतल लटाई थी, जिसपर धागा लपेटा जाता था और वास्तव में इस पर धागे के निशान प्रतीत होते हैं। निश्चिंत होने के लिए वे धागे के पुराने, टूटे हुए टुकड़े थे, जो एक-दूसरे से उलझ गए थे और उनमें गाँठें पड़ गई थीं। ये अनेक प्रकार के एवं विभिन्न रंगों में थे। लेकिन यह तो सिर्फ एक लटाई है, जिसमें तारे के मध्य में अनेक पट्टे लगे हुए थे तथा इसके समकोण पर एक दूसरा लट्ठ लगा हुआ था। एक ओर इस बाद वाले लट्ठ एवं दूसरी ओर एक तारे के एक बिंदु की सहायता से यह पूरी चीज इस प्रकार सीधी खड़ी हो सकती थी मानो वह दो टाँगों पर खड़ी है।

कोई भी यह विश्वास करने के लिए प्रेरित होगा कि इस प्राणी की कभी। स्पष्ट आकृति रही होगी, जो आज खंडित अवशेष है। फिर भी यह मामला ऐसा प्रतीत होता है, कम-से-कम ऐसे कोई संकेत नहीं हैं। कहीं भी अधूरा या खंडित सतह नहीं है, जिससे इस तरह की किसी बात का पता चले। पूरी चीज बिल्कुल अर्थहीन प्रतीत होती है, लेकिन अपनी तरह से पूर्ण रूप से तैयार। किसी भी मामले में, निकट जाँच असंभव है, क्योंकि 'ओडरारेक' अद्‌भुत रूप से फुरतीला है और कभी भी इसे पकड़ा नहीं जा सकता है।

बारी-बारी से वह अटारी, सीढ़ी, लॉबी या स्वागत कक्ष में छुप जाता है। कभी-कभी तो महीनों वह दिखाई नहीं पड़ता है। तब यह मान लिया जाता है कि वह किसी अन्य घरों में चला गया है। लेकिन हमेशा वह पूरी निष्ठा के साथ वापिस फिर हमारे घर में आ जाता है। बहुत बार तो ऐसा होता है कि जैसे ही आप दरवाजे से बाहर निकलते हैं तो वह ठीक आपके नीचे जंगले से लटकता मिलता है और आप को लगता है कि उससे बात करें। निस्संदेह आप उससे कोई कठिन प्रश्न नहीं करते हैं, बल्कि आप उसके साथ बच्चे की तरह व्यवहार करते हैं, क्योंकि वह इतना छोटा है कि आप कुछ भी कर नहीं सकते। ''ठीक है, तुम्हारा नाम क्या है?'' आप उससे पूछते हैं। ''ओडराडेक,'' वह जवाब देता है। ''तुम कहाँ रहते हो?'' ''कोई स्थायी निवास नहीं,'' वह जवाब देता है और हँसने लगता है। यह इस प्रकार की हँसी है, जिसमें कोई गहराई नहीं होती है, बल्कि यह सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट सी प्रतीत होती है और प्राय: बातचीत यहीं खत्म हो जाती है। यहाँ तक कि ये उत्तर भी स्पष्टवादी नहीं होते हैं। कभी-कभी तो वह बहुत देर तक चुप रहता है, बिल्कुल अपनी आकृति की तरह निष्क्रिय।

बिना किसी उद्‌देश्य के मैंने स्वयं से पूछा, इसके साथ क्या घटित होने की संभावना है? संभवत: क्या वह मर सकता है? वह कोई भी चीज जिसकी मृत्यु होती है, उसको जीवन में कोई-न-कोई उद्‌देश्य, किसी-न-किसी तरह की गतिविधि, जो घिसपिट गई है, जरूर होती है। लेकिन ओडराडेक के संदर्भ में यह सही नहीं था। तब क्या मैं यह मान लूँ कि यह हमेशा सीढ़ियों से लुढ़कता रहेगा तथा धागे के सिरे इसके पीछे चलते रहेंगे, जो मेरे बच्चों एवं बच्चों के बच्चों के ठीक कदमों के नीचे आते रहेंगे? इससे किसी को कोई क्षति नहीं होती है, जैसा कि सभी को पता है, लेकिन यह विचार कि यह मेरे बाद भी जीवित रहेगा, यह लगभग पीड़ादायक है।

❑❑❑